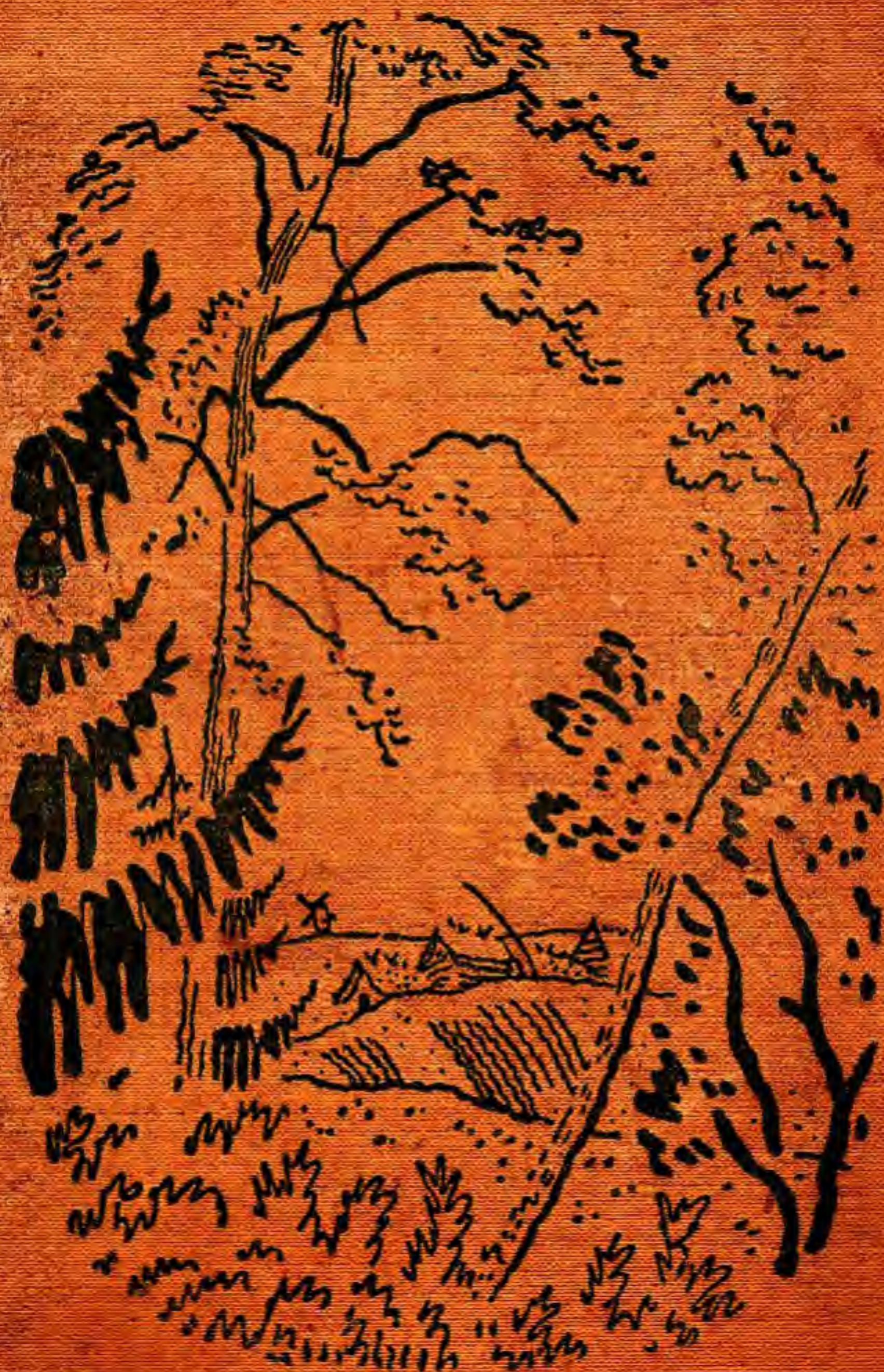


अलेक्सेइ तोलस्तोय



अलेक्सेई तोलस्तोय

निकीता का बचपन



प्रगति प्रकाशन

मास्को

АЛЕКСЕЙ ТОЛСТОЙ
ДЕТСТВО НИКИТЫ

На языке хинди

अनुवादक : मदन लाल 'मधु'

चित्रकार : व० कानाशेविच

अनुक्रम

पृष्ठ

धूप नहाई सुबह	७
अर्कादी इवानोविच	८
बर्फ के ढेर	११
रहस्यमय पत्र	१३
सपना	१४
पुराना घर	१७
कुएं पर	१६
मुठभेड़	२०
एक उदास शाम	२६
वीक्टर और लील्या	३०
फर वृक्ष के सजावटी खिलौनों का डिब्बा	३५
अलग स्लेज पर उपहार	३८
क्रिसमस वृक्ष	४०
वीक्टर के साथ बुरी हुई	४४
दीवालघड़ी के फूलदान में क्या था	४६
आखिरी शाम	५१
जुदाई	५३
काम-काज के दिन	५६
रूक पक्षी	५६
पहियोंवाला घर	६२
वासीली निकीत्येविच अचानक ही आये	६४
मैं तो लगभग डूब ही गया था	७०

पावन सप्ताह	७३
प्योत्र पेत्तोविच के बच्चे	७५
मन की दृढ़ता	७८
वसन्त	८०
झण्डा लहराया गया	८२
जेलतूखिन नामक मैना	८४
क्लोपिक	८८
तालाब में स्नान	९६
बैरोमीटर की सूई	९८
पत्र आया	१०१
पेस्त्राव्का का मेला	१०३
ठेले पर	१०८
समारा में	१०९

बेटे निकीता अलेक्सेयेविच
तोलस्तोय को
सस्नेह समर्पित ।

लेखक

धूप नहाई सुबह

निकीता ने जागते हुए गहरी सांस ली और पलकें खोलیں। पाले ने खिड़कियों के शीशों पर तरह-तरह के बेल-बूटे, रुपहले सितारे और पंजों से मिलते-जुलते अजीब-से पत्ते बना दिये थे। इनके बीच से सूर्य की किरणें छन रही थीं। कमरे में फैला हुआ प्रकाश रुपहला था, बर्फ़ जैसा। हाथ-मुंह धोने की चिलमची से धूप का एक धब्बा-सा दीवार पर प्रतिबिम्बित हो रहा था, थरथराता और कांपता हुआ।

आंख खुलते ही निकीता को बड़ई पखोम के वे शब्द याद हो आये जो उसने पिछली शाम को कहे थे। उसने कहा था—

“मैं इसे खूब अच्छी तरह से चिकना बना दूंगा। तुम सुबह उठकर इस पर सवार होना और चल देना।”

पखोम काना और चेचकरू देहाती था। पिछली शाम उसने निकीता के विशेष अनुरोध पर उसके लिये स्लेज (बर्फ़ पर फिसलनेवाली बिना पहियों की गाड़ी) तैयार की थी। उसे इस तरह बनाया गया था—

पखोम ने बग़्घीख़ाने में लकड़ी की मुड़ी-मुड़ाई गन्धयुक्त छीलन के बीच बड़ई के ठीहे पर काम करते हुए दो तख़्तों और चार पायों को रन्दा फेरकर मुलायम किया। नीचेवाले तख़्ते का सिरा टेढ़ा काट दिया ताकि वह बर्फ़ में न धंसे। पायों को सिरों पर गोल कर दिया। ऊपरवाले तख़्ते को दायें-बायें थोड़ा-सा टेढ़ा काट दिया ताकि टांगें लटकाकर बैठने में सुभीता रहे। नीचेवाले तख़्ते पर गोबर का लेप किया और फिर स्लेज को पाले में रखकर उसे तीन बार पानी से तर-ब-तर किया। इस तरह नीचेवाला तख़्ता शीशे के समान हो गया। स्लेज को घसीटने के लिये ऊपरवाले तख़्ते पर रस्सी बांध दी। पहाड़ी से नीचे फिसलते समय इसी रस्सी से स्लेज को नियन्त्रित किया जा सकता था।

अब बिल्कुल तैयार स्लेज दरवाजे के पास रखी हुई होगी। पखोम बात का धनी था। उसका कहना था, “मेरे वचन को कानून समझो। अगर कुछ कह दिया तो वह अवश्य पूरा होगा।”

निकीता पलंग के सिरे पर बैठा हुआ आहट ले रहा था। घर में एकदम सन्नाटा था। इसका मतलब था कि अभी और कोई नहीं जागा था। अगर मैं मुंह-हाथ न धोऊं, दांत साफ न करूं और झटपट कपड़े पहन लूं, तो फौरन पिछले दरवाजे से आंगन में जा सकता हूं। आंगन से नदी पर जा पहुंचूंगा। वहां ढालू तटों पर बर्फ ही बर्फ है—वहां स्लेज पर बैठकर यह जा, वह जा...

निकीता पलंग से उठा और धूप से गर्माये हुए फर्श के चौकों पर दबे पांव चलने लगा...

इसी समय दरवाजा थोड़ा-सा खुला। लाल बालोंवाले एक व्यक्ति ने अन्दर झांका। यह व्यक्ति चश्मा लगाये था, उसकी लाल भौंहें हिल-डुल रही थीं और उसकी ज़मकती हुई लाल दाढ़ी थी। इस व्यक्ति ने आंख मारी और कहा—

“जाग गये, शैतान?”

अर्कादी इवानोविच

लाल दाढ़ीवाला यह व्यक्ति था अर्कादी इवानोविच, निकीता का शिक्षक। अर्कादी इवानोविच को पिछली शाम ही निकीता के मंसूबे की गन्ध मिल गई थी और इसलिये वे जान-बूझकर ही जल्दी जाग गये थे। बहुत ही फुर्तिले और होशियार थे ये अर्कादी इवानोविच। वे मुस्कराते हुए निकीता के कमरे में आये, खिड़की के पास रुके, उन्होंने शीशे पर सांस छोड़ी और जब शीशा साफ हो गया तो अपना चश्मा ठीक किया और आंगन में नज़र दौड़ाई।

“बाहर बड़ी शानदार स्लेज खड़ी है,” उन्होंने कहा।

निकीता ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने केवल नाक-भौंह सिकोड़ी। अब उसे ढंग से कपड़े पहनने, दांत साफ करने पड़े और न केवल मुंह ही, बल्कि कान और गर्दन भी धोनी पड़ी। इसके बाद अर्कादी इवानोविच ने निकीता के कंधे पर हाथ रखा और उसे खाने के कमरे में ले गये। खाने की मेज़ पर समोवार के करीब उसकी मां सलेटी रंग का गर्म फ्राक पहने बैठी थी। उसने निकीता का चेहरा अपने हाथों में साधा, अपनी निर्मल-उजली आंखों से निकीता की आंखों में झांका और उसका मुंह चूमा—

“निकीता, तुम्हें नींद तो खूब अच्छी तरह आयी न?”

इसके बाद उसने अर्कादी इवानोविच की ओर हाथ बढ़ाया और स्नेहपूर्वक पूछा—

“आपको कैसी नींद आई, अर्कादी इवानोविच?”

“नींद तो खैर मुझे अच्छी ही आई,” अपनी लाल मूछों के बीच अनबूझ-सी मुस्कान लाते हुए उन्होंने कहा। वे मेज़ के गिर्द बैठ गये, उन्होंने चाय में क्रीम डाली, मुंह में शकर

का टुकड़ा रखा, उसे सफ़ेद दांतों से दबाया और ऐनक के बीच से निकीता को आंख मारी।

अर्कादी इवानोविच कुछ इस ढंग के आदमी थे कि बर्दाश्त से बाहर—हमेशा हंसी-मजाक करते रहते, आंख मारते, कभी कोई बात सीधे-सीधे न कहते, पहेलियां बुझवाते रहते। मिसाल के तौर पर निकीता की मां ने तो सीधा-सा सवाल पूछा था—“आपको कैसी नींद आई?” मगर उन्होंने जवाब दिया—“नींद तो खैर अच्छी ही आई,” जिसका मतलब यह था कि—“निकीता नाश्ता और पढ़ाई छोड़कर नदी पर भाग जाना चाहता था, कि पिछली शाम उसने जर्मन भाषा का अनुवाद करने के बजाय दो घंटे पखोम के ठीहे के पास बैठे रहकर बिताये थे।”

यह सच है कि अर्कादी इवानोविच शिकायत कभी नहीं करते थे, मगर दूसरी ओर निकीता को हमेशा चौकन्ने रहना पड़ता था।

नाश्ता करते हुए मां ने कहा कि रात को बहुत जोर का पाला पड़ा है और ड्योढ़ी में रखे पीपे का पानी जम गया है। इसलिये जब वे बाहर घूमने जायें तो निकीता कज्जाकी हुड पहन ले।

“मां, सच कहता हूं कि बेहद गर्मी है,” निकीता ने कहा।

“मैं तुम्हारी मिन्नत करती हूं, तुम जरूर हुड पहन लेना।”

“वह मेरे गालों पर चुभता है। उसे पहन कर मेरा दम घुटने लगता है। उसे पहनने पर मुझे और भी ज्यादा बुरी तरह ठंड लग जायेगी।”

मां ने चुपचाप अर्कादी इवानोविच और फिर निकीता की ओर देखा। उसने कांपती हुई आवाज में कहा—

“न जाने तुम कैसे हो गये हो! क्या मजाल कि कोई बात मानो!”

“चलो, चलकर पढ़ाई करो,” अर्कादी इवानोविच ने कहा। वे झटके के साथ खड़े हुए और उन्होंने ऐसे झटपट अपने हाथ साफ़ किये मानो दुनिया में हिसाब के सवाल हल करने और उन मुहावरों तथा कहावतों को लिखवाने से बढ़कर कोई खुशी ही न हो जिनसे नींद आने लगे।

वे दोनों एक बड़े-से सफ़ेद खाली कमरे में गये जहां दीवार पर पृथ्वी के दो गोलाद्धों का नक्शा लटका हुआ था। निकीता उस मेज के गिर्द बैठ गया जहां जगह-जगह स्याही के धब्बे लगे हुए थे और उसने टेढ़े-मेढ़े चेहरे बना दिये थे। अर्कादी इवानोविच ने हिसाब की किताब खोली।

“हां, तो,” उन्होंने रंग में आते हुए कहा। “कहां रुके थे हम?” इतना कहकर उन्होंने बढ़िया नोकवाली पेंसिल से सवाल पर निशान लगाया।

“किसी बज्जाज ने ३ रुबल ६४ कोपेक फ्री गज के हिसाब से कुछ गज नीला और कुछ काला कपड़ा बेचा...” निकीता ने सवाल पढ़ा। हमेशा की भांति हिसाब की किताब में से निकलकर यह बज्जाज उसके सामने आ खड़ा हुआ। वह धूल-मिट्टी से लथपथ लम्बा-सा फ़ाककोट पहने था। उसका चेहरा जर्द और उदास था। वह ऊब पैदा करनेवाला दुबला-पतला और मुर-

झाया-सा व्यक्ति था। उसकी दूकान गुफा की तरह अंधकारपूर्ण थी। धूल से अटे हुए तख्ते पर कपड़े के दो टुकड़े पड़े थे। बज़ाज़ ने उनकी ओर अपने हडीले हाथ बढ़ाये, तख्ते से कपड़े के टुकड़े उठाये और उदास तथा बुझी-बुझी आंखों से निकीता की ओर देखा।

“हां, तो तुम्हारा क्या ख्याल है, निकीता?” अर्कादी इवानोविच ने पूछा। “बज़ाज़ ने कुल अठारह गज़ कपड़ा बेचा। कितना नीला और कितना काला कपड़ा बेचा गया?”

निकीता ने त्योरी चढ़ाई, बज़ाज़ एकदम सिकुड़ गया, कपड़े के दोनों टुकड़े दीवार पर पहुंचे और धूल में लिपट गये...

“छि, छि, छि!” अर्कादी इवानोविच ने कहा और सवाल समझाने लगे। उन्होंने कुछ आंकड़े लिखे और उन्हें गुना तथा विभाजित करते हुए दोहराया—

“हासिल आया एक, हासिल आये दो।” निकीता को ऐसे प्रतीत हुआ मानो गुना करते समय “हासिल आया एक” और “हासिल आये दो”, झटपट कागज़ से उछलकर उसके दिमाग में जा पहुंचे और वहां गुदगुदी करने लगे ताकि वह उन्हें भूल न जाये। उसे यह चीज़ बहुत अखरी। और पढ़ाई के कमरे की पाले से जमी हुई दोनों खिड़कियों पर चमकता हुआ सूरज मानो उसे लगातार कह रहा था—“चलो नदी पर चलें।”

आखिर गणित का पाठ खत्म हुआ और इमला शुरू हुई। अर्कादी इवानोविच दीवार के पास टहलते हुए एक विशेष, अलसाये-से अन्दाज़ में, जिसका लोग बातचीत में कभी इस्तेमाल नहीं करते, इमला लिखवाने लगे।

“...पृथ्वी पर सांस लेनेवाले सभी जानवर निरन्तर श्रम करते हैं, हमेशा काम में जुटे रहते हैं। छात्र आज्ञाकारी था और मेहनती भी...”

जीभ का सिरा बाहर निकालकर निकीता इमला लिख रहा था, उसकी कलम चीं-चरं कर रही थी, छोट्टे डाल रही थी।

अचानक धम से घर का दरवाज़ा खुला और बरामदे में पाले से ठिठुरे हुए नमदे के जूतों की आहट सुनाई दी। अर्कादी इवानोविच ने किताब नीची की और उस तरफ़ कान लगा दिये। नज़दीक से ही मां की खुशी-भरी आवाज़ सुनाई दी—

“क्या डाक लाये हैं?”

निकीता ने अपना सिर कापी में बिल्कुल गड़ा ही दिया ताकि अपनी हंसी को छिपा सके।

“आज्ञाकारी और मेहनती,” उसने मानो गाते हुए ये शब्द दोहराये। “‘मेहनती’, मैंने लिख लिया है।”

अर्कादी इवानोविच ने अपना चश्मा ठीक किया।

“हां तो, पृथ्वी पर सांस लेनेवाले सभी जानवर, आज्ञाकारी और मेहनती हैं... तुम्हें हंसी क्यों आ रही है?... धब्बा डाल दिया?... खैर, अब हम थोड़ी देर के लिये विराम करेंगे।”

अर्कादी इवानोविच ने होंठ दबाये और पेंसिल जैसी अपनी लम्बी उंगली दिखाते हुए निकीता को धमकाया और झटपट पढ़ाई के कमरे से बाहर चले गये। बरामदे में उन्होंने मां से पूछा—

“अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना, मेरे नाम भी कोई खत है क्या?”

निकीता ने अनुमान लगा लिया कि अर्कादी इवानोविच को किसके खत का इन्तज़ार है। मगर अब देर करना ठीक नहीं था। निकीता ने भेड़ की खाल की जाकेट पहनी, नमदे के जूते चढ़ाये, फ़र की टोपी ओढ़ी, कज़ाकी हुड को अलमारी के नीचे घुसेड़ा ताकि वह किसी के हाथ न लग सके और बाहर ओसारे में भाग गया।

बर्फ़ के ढेर

चौड़े अहाते में चमकती हुई सफ़ेद और नर्म-नर्म बर्फ़ की चादर बिछी हुई थी। इन्सानों के पैरों और अधिकतर कुत्तों के पंजों के नीले और गहरे चिह्न दिखाई दे रहे थे। हवा पाले से ठिठुरी-ठिठुरायी और हल्की-हल्की थी, नाक में खुजली करती और गालों पर सुइयां-सी चुभोती हुई। बर्फ़ की सफ़ेद टोपी ओढ़े वग़्घीख़ाना, छानियां और वाड़े ज़मीन से बिल्कुल सटे हुए थे। ऐसे लगता था मानो बर्फ़ में से पैदा हुए हों। घर से लेकर पूरे अहाते तक स्लेजों के निशान शीशे की भांति चमक रहे थे।

निकीता ओसारे की बर्फ़ से ढकी और कचकचाती पैड़ियों पर से भागता हुआ नीचे उतरा। नीचे देवदार की लकड़ी की बनी हुई नई स्लेज खड़ी थी जिसके साथ बटी हुई रस्सी बंधी थी। निकीता ने उसकी जांच की—हां, मज़बूत है! उसने उस पर बैठकर आजमाइश की, बढ़िया फिसलती है। उसने स्लेज को कंधे पर लादा, फावड़ा भी ले लिया कि कहीं ज़रूरत पड़ जाये और बाग़ के पासवाले संकरे रास्ते से बांध की ओर भाग चला। वहां आकाश को छूते हुए बड़े-बड़े और चौड़े-चौड़े विल्लो वृक्ष खड़े थे, पाले से ढके हुए। उनकी हर शाखा मानो बर्फ़ की बनी हुई थी।

निकीता नदी की ओर दायें को मुड़ गया। उसने दूसरों के पद-चिह्नों पर चलने की कोशिश की। जहां बर्फ़ अच्छी और साफ़ थी, वहां निकीता पीछे की ओर चलता ताकि अर्कादी इवानोविच की आंखों में धूल झांक सके।

पिछले कुछ दिनों में चागरा नदी के खड़े तटों पर फूली-फूली बर्फ़ के बड़े-बड़े ढेर जमा हो गये थे। कहीं-कहीं तो बर्फ़ के ढेर जीभ-सी निकाले हुए नदी के ऊपर लटके हुए थे। मगर इस जीभ पर पैर पड़ते ही वह बर्फ़ कड़कड़ाकर टूट जायेगी, नीचे को धसकेगी और बर्फ़ का टीला सफ़ेद बर्फ़ीली धूल का बादल उड़ाता हुआ नीचे बैठ जायेगा।

नदी दायीं ओर को सफ़ेद और वीरान मैदानों के बीच नीली छाया-सी बनाती हुई मुड़ती थी। बायीं ओर को ऊंचे तट की ढाल पर सोस्नोव्का गांव की काली-काली झोंपड़ियां थीं और कुआं की बल्लियां हिल-डुल रही थीं। छतों के बहुत ऊपर धुएं के नीले-नीले बादल लहराते और हवा में घुलमिल जाते। बर्फ़ से ढके खड़े तट पर राख के पीले धब्बे और धारियां बनी हुई थीं। यह राख उसी सुबह गृहिणियों ने चूल्हों से निकाल कर बाहर फेंकी थी। वहां छोटी-छोटी

आकृतियां हिलती-डुलती नजर आ रही थीं। ये गांव के 'हमारी ओर' रहनेवाले लड़के थे। आगे, जहां नदी में खम पड़ता था, मुश्किल से ही दिखाई देते हुए लड़कों की "कोंचान" टोली जा रही थी। बहुत ही खतरनाक टोली थी यह।

निकीता ने फावड़ा फेंका, स्लेज को बर्फ पर टिकाया, उसपर बैठा, रस्सी को कसकर हाथ पर लपेटा और पैरों से एक-दो बार स्लेज को आगे की ओर धकेला। तब स्लेज खुद-ब-खुद ही फिसलने लगी। निकीता के कानों में हवा की सीटियां बजने लगीं और दोनों ओर से बर्फ़ीली धूल उड़ने लगी। वह तीर की तरह नीचे, और अधिक नीचे, चला जा रहा था। अचानक उस जगह, जहां नदी पर पहुंचकर बर्फ़ का अन्त हो गया था, स्लेज हवा में उड़ती-सी नदी की जमी हुई सतह पर जा पहुंची। वह धीमी, और अधिक धीमी हुई और फिर रुक गई।

निकीता हंस दिया, स्लेज से नीचे उतरा और घुटने-घुटने तक बर्फ़ में चलता हुआ स्लेज को पहाड़ी के ऊपर खींच ले चला। जब वह तट पर पहुंचा तो उसे अपने करीब ही बर्फ़ से ढके मैदान में अर्कादी इवानोविच की काली-सी आकृति दिखाई दी। उसे यह आकृति इन्सान के क्रद से बड़ी प्रतीत हुई। निकीता ने फावड़ा उठाया, झटपट स्लेज पर बैठा और तेजी से नीचे की ओर लुढ़क गया। फिर वह जमी हुई सतह पर भागता हुआ उस जगह जा पहुंचा जहां बर्फ़ के ढेर जीभ की भांति नदी के ऊपर लटके हुए थे।

बर्फ़ की जीभ के नीचे पहुंचकर निकीता ने गुफा बनानी शुरू की। यह तो उसके लिये बायें हाथ का खेल था, फावड़े से बर्फ़ काटने में देर ही कौन-सी लगती है! गुफा बनाकर निकीता उसमें घुस गया, उसने स्लेज भी अन्दर घसीट ली और भीतर से गुफा के मुंह पर बर्फ़ के टुकड़े रखने लगा। जब दीवार बन गई तो गुफा में हल्की-हल्की नीली रोशनी रह गई। वहां बड़ा आराम और खूब मजा था।

निकीता बैठा हुआ सोच रहा था कि किसी भी लड़के के पास ऐसी अद्भुत स्लेज नहीं है। उसने जेब से कलमतराश चाकू निकाला और ऊपरवाले तख्ते पर "वेवित" नाम खोद दिया।

"निकीता! तुम कहां जा मरे?" उसे अर्कादी इवानोविच की आवाज सुनाई दी। निकीता ने चाकू जेब में डाला और बर्फ़ के टुकड़ों के बीच वाली सेंध में से झांका। अर्कादी इवानोविच नीचे बर्फ़ पर खड़े इधर-उधर देख रहे थे।

"कहां हो रे तुम शैतान?"

अर्कादी इवानोविच ने चश्मा ठीक किया और गुफा की ओर बढ़े, मगर उसी क्षण कमर तक बर्फ़ में धसक गये।

"अपने आप ही निकल आओ, वरना मैं तुम्हें वहां से निकाल तो लूंगा ही।"

निकीता चुप रहा। अर्कादी इवानोविच ने ऊपर उठने की कोशिश की, मगर फिर बर्फ़ में धसक गये। उन्होंने जेब में हाथ डाले और कहा -

"नहीं निकलना चाहते, तो न सही। रहो यहीं पर। मगर बात यह है कि तुम्हारी मां के पास समारा से खत आया है... खैर, मैं तो जा रहा हूं..."

“कैसा ख़त आया है?” निकीता ने पूछा।

“आह! तो तुम यहां ही हो।”

“बताइये तो, किसका ख़त आया है?”

“उन लोगों का जो त्योहार के मौक़े पर यहां आ रहे हैं।”

इसी समय बर्फ़ के टुकड़े इधर-उधर बिखरने लगे। निकीता ने गुफा में से सिर बाहर निकाला। अर्कादी इवानोविच खिलखिलाकर हंस पड़े।

रहस्यमय पत्र

दोपहार के खाने के समय मां ने आख़िर यह पत्र पढ़कर सुनाया। ख़त निकीता के पिता का था।

“प्यारी साशा, मैंने वह चीज़ ख़रीद ली है जो हमने एक लड़के को उपहारस्वरूप देने का निर्णय किया था। वैसे वह लड़का इस लायक तो नहीं है कि उसे यह शानदार तोहफ़ा दिया जाये,” इन शब्दों को सुनकर अर्कादी इवानोविच बुरी तरह आंख झपकाने लगे। “चीज़ वह खासी बड़ी है और इसे घर तक ले जाने के लिये एक और स्लेज ले आना। हां, एक और भी ख़बर है—त्योहार के मौक़े पर, आन्ना अपोल्लोसोव्ना बाबकिना अपने बच्चों के साथ हमारे यहां आ रही है...”

“आगे और कुछ दिलचस्प नहीं है,” मां ने कहा और निकीता के अन्य सभी प्रश्नों के जवाब में आंखें मूंदे और सिर हिलाते हुए सिर्फ़ इतना ही कहा—“मैं कुछ नहीं जानती।”

अर्कादी इवानोविच भी चुप रहे, हाथ झटकते हुए यही कहते रहे—“मुझे कुछ मालूम नहीं।” वैसे भी अर्कादी इवानोविच उस दिन हर समय ही बहुत खुश रहे, बेध्यान से ग़लत-मलत जवाब देते रहे, बार-बार जेब से कोई ख़त निकालते, उसकी कुछ पंक्तियां पढ़ते और होंठ सिकोड़ते। जाहिर था कि उनका भी कोई अपना राज़ था।

झुटपुटा होने पर निकीता अहाता लांघकर नौकरों के क्वार्टरों की ओर गया। वहां पाले से जमी हुई दो खिड़कियों से बर्फ़ पर नीली-नीली सी रोशनी पड़ रही थी। नौकर खाना खा रहे थे। निकीता ने तीन बार सीटी बजाई। घड़ी भर बाद उसका सब से पक्का दोस्त मीशका कोर्याशोनोक बाहर आया, नमदे के बड़े-बड़े जूते पहने, नंगे सिर और कन्धों पर फ़र की जाकेट डाले। यहीं, नौकरों के क्वार्टरों की बग़ल में खड़े रहकर निकीता ने फुसफुसाते हुए अपने दोस्त से ख़त की चर्चा की और पूछा कि ऐसी कौन-सी चीज़ नगर से लाई जा रही है।

ठण्ड से मीशका कोर्याशोनोक के दांत बज रहे थे। उसने कहा—

“ज़रूर कोई बहुत ही बड़ी चीज़ होगी। अगर ऐसा न हो तो मेरी आंखें फोड़ डालना। मैं भाग चला, ठंड लग रही है। सुनो तो, कल हम कोंचान टोली के लड़कों की पिटाई करने गांव जा रहे हैं। तुम चलोगे न?”

“हां, चलूंगा।”

निकीता घर लौटा और ‘सिरकटा घुड़सवार’ किताब लेकर पढ़ने बैठ गया।

बड़े लैम्प के नीचे गोल मेज के गिर्द मां और अर्कादी इवानोविच अपनी-अपनी किताब लिये बैठे पढ़ रहे थे। अलावघर के पीछे झींगुर झीं-झीं कर रहा था। साथवाले अंधेरे कमरे में फर्श के तख्ते चटक रहे थे।

सिरकटा घुड़सवार लम्बे-चौड़े मैदान में से सरपट घोड़ा दौड़ाता और ऊंची ऊंची घास को लांघता हुआ चला आ रहा था। झील के ऊपर पूनम का बड़ा-सा गोल लाल चांद चमक रहा था। निकीता ने महसूस किया कि उसकी गुद्दी के बाल हिल रहे हैं। उसने धीरे से गर्दन घुमाई—काली काली खिड़कियों के पीछे उसे धुंधली-सी छाया की झलक मिली। क्रसम खुदा की, उसे सिरकटे घुड़सवार की झलक मिली थी। मां ने किताब से सिर उठाते हुए कहा—

“हवा तेज हो गई है, लगता है कि बर्फ का तूफान आयेगा।”

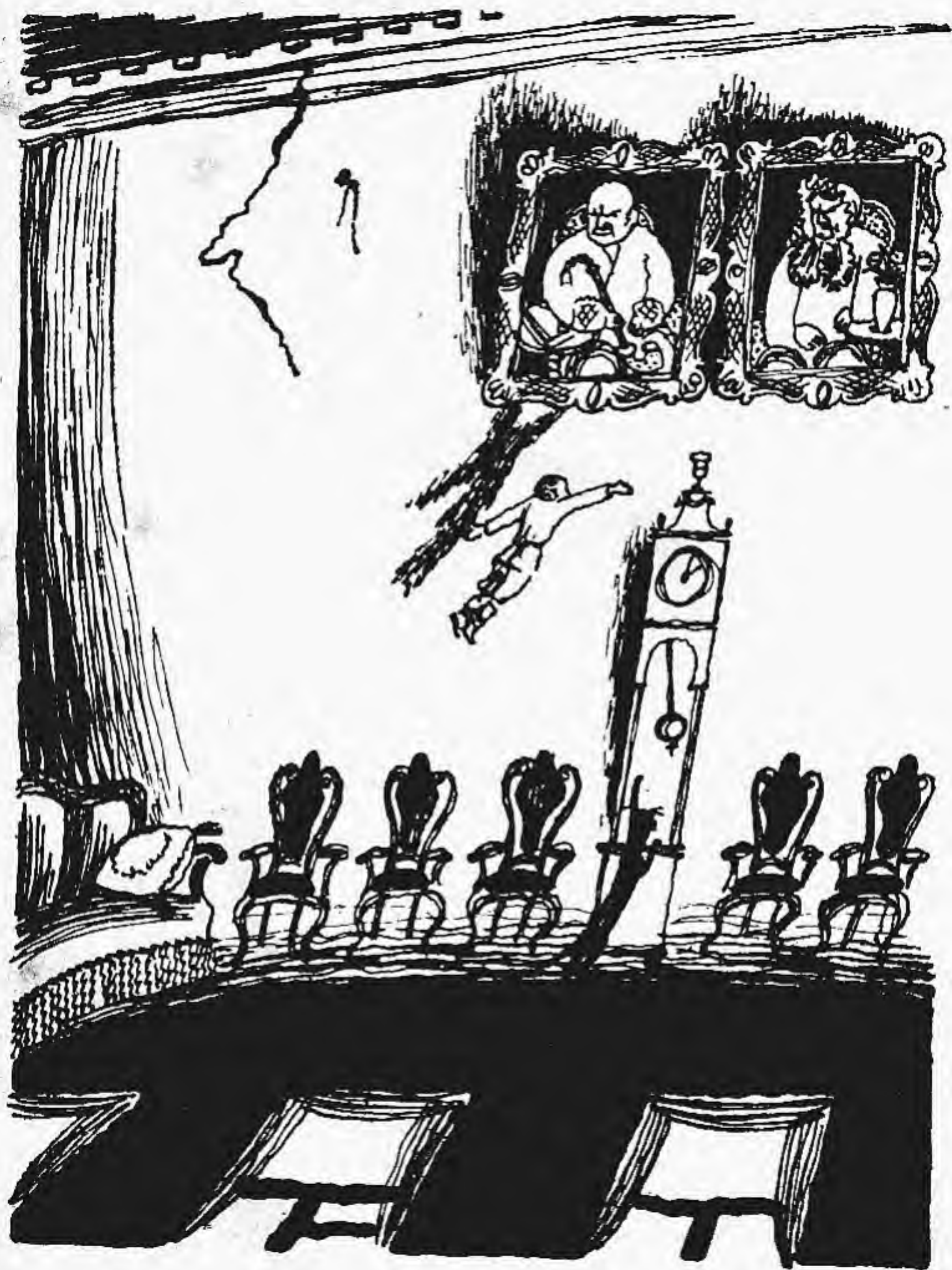
सपना

निकीता ने सपना देखा। वह कई बार यह सपना देख चुका था, हर बार एक ही जैसा।

बैठक का दरवाजा धीरे से खुला, किसी भी तरह की चूंचरं किये बिना। फर्श पर खिड़कियों की नीली-सी छाया पड़ रही थी। स्याह खिड़कियों के पार चांद लटक-सा रहा था—बड़े-से चमकते हुए गोले के समान। निकीता खिड़कियों के बीच रखी हुई ताश खेलने की मेज पर चढ़ गया। वहां से उसे यह दृश्य दिखाई दिया—

खड़िया की तरह सफ़ेद सामनेवाली दीवार पर बड़े-से केस में लटकी हुई दीवालघड़ी का इधर-उधर हिलता हुआ पेण्डुलम चांदनी में चमक रहा है। घड़ी के ऊपर एक रोबीले बुजुर्ग का फ्रेम किया हुआ छविचित्र लटक रहा है। बुजुर्ग के मुंह में पाइप दबी हुई है। उसकी बगल में टोपी और शॉल ओढ़े एक बूढ़ा है जो अपने होंठों को दबाये हुए सामने की ओर देख रही है। दीवार के साथ साथ, घड़ी से बैठक के कोने तक धारीदार चार आरामकुर्सियां हथ्थे फैलाये हुए अपनी चार-चार टांगों पर टिकी हुई हैं। कोने में नीची और टेढ़ी-टेढ़ी टांगोंवाला सोफ़ा रखा हुआ है। इन कुर्सियों की न तो आंखें हैं और न ही मुंह। फिर भी वे बिना हिले-डुले चांद पर नज़रें टिकाये हुए हैं।

सोफ़े की झालर के नीचे से एक बिल्ला बाहर निकलता है। वह अपनी कमर झुकाकर फैलाता है, उछलकर सोफ़े पर चढ़ता है और बढ़ता चला जाता है, काला और लंबा-सा। वह द्रुम झुकाये चला जा रहा है। सोफ़े से वह कुर्सी पर कूदता है, दीवार के साथ रखी कुर्सियों पर से चलता और झुककर हथ्थों के नीचे से निकलता हुआ बढ़ता जाता है। आखिर तक जाकर वह फर्श पर कूदता है और घड़ी के सामने तथा खिड़कियों की ओर पीठ करके बैठ जाता है। पेण्डुलम हिल-डुल रहा है, बूढ़ा-बुढ़िया गुस्से से बिल्ले को ताक रहे हैं। अब बिल्ला पिछली टांगों



पर खड़ा होता है, वह एक पंजा घड़ी के केस पर टिकाता है और दूसरे से पेण्डुलम को हिलने-डुलने से रोकने की कोशिश करने लगता है। केस में शीशा तो है ही नहीं... बस पेण्डुलम उसके पंजे में आया कि आया।

काश, वह चीख सकता! मगर निकीता तो उंगली तक नहीं हिला पा रहा, हिल-डुल भी नहीं सकता, डर ने उसे जकड़ लिया है। भयानक, बहुत भयानक दृश्य है और जल्द ही अधिक भयानक हो जायेगा...

चांदनी लम्बे-लम्बे चतुर्भुजों के रूप में फर्श पर लेटी हुई है। बैठक में एकदम सन्नाटा छा गया है, हर चीज ने दम साध लिया है। बिल्ला फैलता जा रहा है, उसने अपना सिर झुकाकर आगे की ओर बढ़ाया है, उसके कान तन गये हैं और वह पंजे से पेण्डुलम को पकड़ने की कोशिश करने लगा है। निकीता जानता है - अगर बिल्ले ने पेण्डुलम को छू लिया तो वह रुक जायेगा और उसी क्षण सभी कुछ लड़खड़ाकर, टुकड़े टुकड़े होकर भड़भड़ाता हुआ नीचे जा गिरेगा और धूल की तरह गायब हो जायेगा। तब न तो दीवारें ही रहेंगी, न बैठक और न चांदनी ही।

डर के मारे निकीता के सिर में शीशों के तेज-से टुकड़े छनछनाने लगते हैं, उसके सारे बदन पर चींटियां-सी चलने लगती हैं... निकीता अपना सारा कस-बल बटोरता है, हताशा से चीखता है और फर्श पर ढह पड़ता है। फर्श अचानक नीचे को घसक जाता है। निकीता उठकर बैठता है। वह अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाता है। उसे पाले से जमी हुई कमरे की दो खिड़कियां दिखाई देती हैं और उनके शीशों के बीच से नज़र आता है, साधारण से बहुत बड़ा और अजीब-सा चांद। फर्श पर एक गमला रखा है और उसके घुटनों तक के जूते पड़े हुए हैं।

“हे भगवान, हे भगवान!” निकीता ने झटपट अपने ऊपर सलीब बनाई और तकिये के नीचे सिर घुसेड़ दिया। तकिया गर्म-गर्म और नर्म-नर्म था, सपनों से ठसाठस भरा हुआ।

फिर जैसे ही उसकी आंख लगी कि उसने अपने को उसी बैठक में, उसी मेज पर खड़े देखा। पेण्डुलम चांदनी में हिल-डुल रहा था, बूढ़ा और बुढ़िया गुस्से से उसे घूर रहे थे। फिर सोफे के नीचे से बिल्ले का सिर बाहर आ रहा था। मगर इस बार निकीता ने अपनी बांहें फैला लीं, वह मेज से तनिक-सा टकरा कर नीचे कूद गया तथा अपनी टांगों को जल्दी-जल्दी हिलाता हुआ फर्श के ऊपर या तो उड़ने या तैरने-सा लगा। बड़ा अनूठा, बहुत ही असाधारण आनन्द मिल रहा था उसे कमरे में उड़ते हुए। जब उसके पैर फर्श को छूने लगते तो वह अपने हाथों को हिलाना शुरू कर देता, धीरे-धीरे छत की ओर ऊपर को उठता और टेढ़े-मेढ़े ढंग से दीवार के साथ-साथ उड़ने लगता। उसकी नाक के बिल्कुल निकट ही प्लास्टर की कार्निश थी और उसपर भूरी-भूरी और प्यारी-प्यारी धूल की तह जमी हुई थी। बहुत ही सोंधी-सोंधी गंध थी उसकी। इसके बाद उसे दीवार पर जानी-पहचानी दरार नज़र आयी, नक्शे पर बनी हुई वोल्गा नदी जैसी। फिर उसकी आंखों के सामने उभरी एक बहुत ही पुरानी और बड़ी अजीब-सी कील जिसके साथ रस्सी का एक टुकड़ा बंधा हुआ था और उसके साथ ढेरों मरी हुई मक्खियां चिपकी हुई थीं।

निकीता ने दीवार पर पैर से ठोकर लगायी और कमरे में से धीरे-धीरे उड़ता हुआ घड़ी की तरफ बढ़ गया। घड़ी के केस के ऊपर कांसे का छोटा-सा फूलदान रखा था। फूलदान में, उसके तल में कोई चीज़ पड़ी हुई थी जो निकीता को नज़र नहीं आ रही थी। अचानक किसी ने निकीता के कान में फुसफुसाकर कहा -

“जो कुछ उसमें पड़ा है, ले लो।”

निकीता घड़ी की ओर उड़ा और उसने फूलदान में हाथ घुसेड़ा। मगर इसी क्षण दीवार पर लटकी हुई तसवीर में से जीती-जागती बुढ़िया बाहर निकली और उसने अपने हड़ीले हाथों से निकीता का सिर पकड़ लिया। निकीता ने सिर छुड़ा लिया, मगर इसी समय दूसरी तसवीर से बूढ़ा बाहर निकला। उसने अपनी लम्बी-सी पाइप हिलायी और ऐसे जोर से निकीता की पीठ पर धौल जमायी कि वह फर्श पर जा गिरा। निकीता ने गहरी सांस ली और उसकी आंख खुल गयी।

पाले द्वारा बनाये गये बेल-बूटों के बीच से सूरज की किरणें छन रही थीं, चमक रही थीं। अर्कादी इवानोविच पलंग के पास खड़े और निकीता का कंधा हिलाते हुए कह रहे थे -

“उठो, उठो, नौ बज गये।”

निकीता जब आंखें मलने के बाद उठकर पलंग पर बैठ गया तो अर्कादी इवानोविच ने कई बार आंख झपकाई और खुशी से हाथ मलते हुए कहा -

“मेरे दोस्त, आज पढ़ाई नहीं होगी।”

“क्यों?”

“क्योंकि, ‘क्यों’ के अन्त में आता है ‘यों’। अब तुम दो हफ्तों तक जीभ निकाले भागते फिर सकते हो। चलो, उठो।”

निकीता उछलकर पलंग से नीचे उतरा और मुहाने फर्श पर नाचता हुआ चिल्ला उठा -

“किसमस की छुट्टियां!”

निकीता यह बिल्कुल ही भूल गया था कि आज/से हंसी-खुशी के दो लम्बे सप्ताह शुरू हो रहे हैं। अर्कादी इवानोविच के सामने नाचते हुए वह एक चीज़ और भी भूल गया - अपना सपना, घड़ी के ऊपर रखा हुआ फूलदान और कान में आकर फुसफुसानेवाली वह आवाज़ -

“जो कुछ उसमें पड़ा है, ले लो।”

पुराना घर

चौदह दिन अब निकीता के पूरी तरह अपने थे। जो मनमाने, वही करे। इससे कुछ हद तक तो उसे अब भी महसूस होने लगी।

सुबह का नाश्ता करते हुए उसने चाय, दूध, डबलरोटी और मुरब्बे को मिलाकर हलवा-सा बना लिया और इतना पेट भर कर खाया कि कुछ देर तक उसे चुपचाप बैठे रहना पड़ा।

समोवार में झलकती हुई अपनी परछाई देख वह देर तक यह सोचकर हैरान होता रहा कि मेरा इतना लम्बा चेहरा है, एकदम समोवार के बराबर और बहुत ही बदसूरत। फिर वह यह सोचने लगा कि अगर मैं चमची लेकर उसके दो टुकड़े कर दूँ तो एक टुकड़े की नाव बन सकती है और दूसरी की कुरेदनी—कुछ न कुछ कुरेदने के लिए।

आखिर मां ने कहा—“जाओ, अब बाहर जाकर घूमो।”

निकीता ने इत्मीनान से कपड़े पहने और प्लास्टर की हुई दीवार को उंगली से छूता हुआ लम्बे बरामदे में चल दिया जहाँ अलावघरों की प्यारी-प्यारी और राहत देनेवाली गंध आ रही थी। इस बरामदे के बायीं ओर, घर के दक्षिण में, जाड़े के कमरे थे, गर्माये हुए और रिहायशी। बरामदे के दायीं ओर, और घर के उत्तर में गर्मियों के आधे खाली पड़े हुए पांच कमरे थे और इनके मध्य में बैठक थी। यहाँ टाइलों के बड़े-बड़े अलावघर थे जो सप्ताह में एकबार ही गर्माये जाते थे, मलमल से ढके झाड़-फ़ानूस लटके हुए थे और फ़र्श पर ढेर सारे सेब पड़े थे—कुछ कुछ सड़े हुए। घर के गर्मियोंवाले अर्ध-भाग में उनकी मीठी-मीठी गन्ध फैली हुई थी।

निकीता ने बड़ा जोर लगाकर बलूत की लकड़ी के दोहरे दरवाजे खोले और दबे पांव खाली कमरों में गया। अर्ध गोलाकार खिड़कियों में से बर्फ़ से ढका हुआ बाग़ नज़र आ रहा था। वृक्ष एकदम शान्त खड़े थे, उनकी बर्फ़ से ढकी हुई शाखाएं झुकी हुई थीं। छज्जे के दोनों ओर ऊंची उगी हुई बकाइन की झाड़ियां बर्फ़ के बोझ से दबी हुई थीं। मैदान में खरगोश के पैरों के निशान साफ़ नज़र आ रहे थे। खिड़की के बिल्कुल निकट बड़े-से सिरवाला काला कौआ बैठा था, शैतान-सा लगता हुआ। निकीता ने उंगली से शीशे पर ठक-ठक की। कौआ एक ओर को उछला और शाखाओं पर जमी बर्फ़ को पंखों से नीचे गिराता हुआ उड़ गया।

निकीता कोनेवाले आखिरी कमरे में पहुंचा। यहाँ दीवार के साथ धूल से अटी हुई अलमारियां रखी थीं जिनके शीशों में से जिल्दबंदी पुरानी किताबें दिखाई दे रही थीं। टाइलों के अलावघर के ऊपर एक बहुत ही सुन्दर महिला का चित्र लटका हुआ था। वह घुड़सवारी की मखमली पोशाक और हाथों में दस्ताने पहने थी और एक हाथ में चाबुक ताने थी। निकीता को वह चलती-सी प्रतीत हुई, मानो मुड़ी और अपनी बड़ी-बड़ी और पैनी नज़र वाली आंखों में शरारत भरी चमक लाकर उसने निकीता की ओर देखा।

निकीता सोफ़े पर बैठ गया और हथेली पर ठोड़ी टिकाकर महिला को ताकने लगा। वह ऐसे ही बहुत देर तक बैठा रहकर उसे देखता रह सकता था। अपनी मां के मुंह से उसने अनेक बार यह बात सुनी थी कि इसी महिला के कारण निकीता के परदादा को बड़ी मुसीबतों का मुंह देखना पड़ा था। अभाग्य परदादा का चित्र भी किताबोंवाली अलमारी के ऊपर लटका हुआ था। हड्डियों का ढांचा सा, तीखी नाक और घंसी हुई आंखें—ऐसा था वह। वह अपने एक हाथ से छाती पर गाउन थामे था और उसकी उंगलियों में जड़ी हुई अंगूठियां चमक रही थीं। उसकी

बगल में अध-लिपटा भोजपत्र पड़ा था और पंख की कलम रखी थी। उसके चेहरे पर अंकित भाव इस बात की गवाही दे रहे थे कि वह बहुत ही अभागा आदमी था।

मां ने नikiता को बताया था कि उसके परदादा आम तौर पर दिन में सोते और रात को पढ़ते-लिखते। झुटपुटा होने पर ही घूमने-फिरने जाते। रात को घर के गिर्द चौकीदार पहरा देते हुए अपनी सोटी बजाते रहते ताकि रात के परिन्दे खिड़कियों के करीब उड़ते हुए अपने पंखों की फड़फड़ाहट से परदादा को डरा न दें। कहते हैं कि उन दिनों बाग में ऊंची ऊंची और घनी घास उग आई थी। इस कमरे के अलावा सारा घर बन्द पड़ा था, कहीं कोई नहीं रहता था। नौकर-चाकर भाग गये थे। परदादा की हालत ऐसी बुरी थी कि बयान से बाहर।

एक बार हुआ यह कि वे न तो अपने कमरे में मिले, न घर में और न बाग में। हफ्ता भर उनकी लगातार खोज की गई, मगर बेसूद। पांच वर्ष बाद उनके उत्तराधिकारी को साइबेरिया से भेजा हुआ यह अजीब-सा खत मिला—“मैंने बुद्धिमत्ता में चैन की खोज की और प्रकृति में विस्मृति पाई।”

इन सभी अजीब घटनाओं का कारण थी घुड़सवारी की पोशाकवाली महिला। नikiता उत्तेजित मन और जिज्ञासा से उसे देख रहा था।

खिड़की के बाहर फिर से कौआ दिखाई दिया। वह शाखा पर बैठा तो कुछ बर्फ नीचे गिर गई। उसने अपना सिर झटका, चोंच खोली और कांय-कांय करने लगा। नikiता को डर महसूस हुआ। वह खाली कमरों से निकल भागा और अहाते में पहुंच गया।

कुएं पर

अहाते के बीचोंबीच कुआं था। उसके इर्दगिर्द की बर्फ पैरों तले आ आकर जम गई थी, पीली पड़ गई थी। इसी कुएं के पास नikiता ने मीशका कोर्याशोनोक को बैठे पाया। मीशका हाथ में पहने हुए चमड़े के दस्ताने के सिरे को पानी में भिगो रहा था।

नikiता ने पूछा—“इसे पानी में क्यों भिगो रहे हो?” मीशका ने जवाब दिया—“कों-चान टोली के सभी लड़के ऐसा ही करते हैं। इसलिए अब हम भी दस्तानों को पानी में भिगोया करेंगे। ऐसा करने से दस्ताने सख्त हो जाते हैं और मार-पीट में बढ़िया काम देते हैं। गांव तो चलोगे न?”

“किस वक्त?”

“बस, खाना खाने के फौरन बाद। मां को कुछ नहीं बताना।”

“मां ने जाने की इजाजत तो दे दी है, मगर लड़ने-भिड़ने से मना किया है।”

“लड़ने-भिड़ने से मना किया है, इसका क्या मतलब? अगर कोई तुम पर पिल पड़ा, तब? जानते हो, कौन तुम पर झपटेगा? स्त्योप्का कार्नाऊशिकन। वह तुम पर एक धौल जमायेगा और तुम—जमीन चाटने लगोगे।”

“स्त्योप्का की बात तो तुम छोड़ो। उससे मैं निपट लूंगा। उसे तो इस कनिष्ठा से नीचे गिरा दूंगा।” इतना कहकर उसने मीशका को अपनी कनिष्ठा दिखाई।

मीशका ने उसकी कनिष्ठा की ओर देखा, थूका और खरखरी-सी आवाज में कहा —

“स्त्योप्का अपने घूसे पर जादू-टोना करवा आया है। पिछले हफ्ते वह नमक और मछली लाने के लिए अपने बाप के साथ ऊतेक्का गांव गया था। वहां उसने अपने घूसे पर टोना करवा लिया था। अगर मैं झूठ बोलूं, तो मेरी आंखें फूट जायें।”

निकीता सोच में पड़ गया। अच्छा तो यही है कि गांव जाऊं ही नहीं, मगर तब मीशका मुझे बुझदिल कहेगा।

“तो यह टोना होता कैसे है?” निकीता ने पूछा।

मीशका ने फिर थूका —

“अरे, यह तो बड़ी मामूली-सी बात है। सबसे पहले तो कालिख लो, उसे हाथों पर मलो और फिर तीन बार बोलो — ‘ताल-बैताल, आयी बला को टाल।’ बस, इतना ही...”

निकीता ने बड़े आदर से मीशका की ओर देखा। इसी समय अहाते का फाटक चरमरा कर खुला और वहां से ढेर सारी भूरी-मटमैली भेड़ें भागती हुई बाहर निकलीं। उनके खुर हड्डियों की तरह बज रहे थे, उनकी दुमें हिल रही थीं और मेंगनियां गिर रही थीं। कुएं के सब ओर उनका जमघट हो गया। वे ममियाती और रेलपेल करती हुई कुएं के करीब सट आईं, अपनी थूथनियों से बर्फ की पतली परतों को तोड़ने, पानी पीने और खांसने लगीं। लम्बे-लम्बे बालोंवाला और धूल-मिट्टी से सना हुआ एक मेढ़ा अपनी सफ़ेद, धब्बोंवाली आंखों से मीशका को घूरने और पांव पटकने लगा। मीशका ने उसकी ओर देखते हुए कहा — “हरामखोर!” मेढ़ा उसपर झपटा, मगर मीशका कुएं को फांदकर दूसरी ओर जा पहुंचा।

निकीता और मीशका हंसते और भेड़ों को चिढ़ाते हुए अहाते में दौड़ने लगे। मेढ़ा भी उनका पीछा करता रहा, मगर फिर कुछ सोचकर ऐसे मिमियाने लगा मानो कह रहा हो —

“तुम खुद हरा-आम-खो-ओर हो-ओ!”

जब निकीता को पिछवाड़े के ओसारे से खाना खाने के लिए पुकारा जाने लगा तो मीशका ने उससे कहा —

“देखो, धोखा नहीं देना। गांव जरूर चलना है।”

मुठभेड़

निकीता और मीशका बाग़ और तालाब को लांघते हुए छोटे रास्ते से गांव की ओर चल दिये। हवा ने जमे हुए तालाब पर से फूली-फूली बर्फ उड़ा दी थी। मीशका वहां घड़ी भर को रुका। उसने अपनी जेब से कलमतराश चाकू और दियासलाई की डिबिया निकाली, नीचे बैठा, जहां-तहां नाक से कुछ सूंघा-सांघी की और नीली बर्फ को उस जगह से खोदने लगा जहां उसके



अन्दर सफ़ेद बुलबुले थे। इन बुलबुलों को “विल्लियां” कहा जाता था। तालाब के तल से दलदली गैस ऊपर उठती थी तथा बर्फ़ में बुलबुलों के रूप में जम जाती थी। मीशका ने बर्फ़ को काटा, फिर दियासलाई जलाई और उसे सूराख के करीब किया। “बिल्ली” भड़क उठी और बर्फ़ के ऊपर पीली-सी शान्त लपटें जलने लगीं।

“देखो, तुम किसी से भी इसकी चर्चा न करना,” मीशका ने कहा। “अगले हफ़्ते हम निचले तालाब पर विल्लियां जलाने चलेंगे। वहां मुझे एक बहुत बड़ी बिल्ली का पता है। पूरे दिन जलती रहेगी।”

लड़के तालाब पर से भागते और गिरे हुए पीले सरकंडों को रौंदते दूसरे किनारे पर आये और गांव में पहुंचे।

इस जाड़े में बहुत बर्फ़ पड़ी थी। जहां अहातों के बीच हवा के तेज झोंके आते थे, वहां बर्फ़ बिल्कुल थोड़ी थी, मगर झोंपड़ों के अगल-बगल जहां हवा नहीं थी, छतों से भी ऊंचे बर्फ़ के टीले खड़े हो गये थे।

भूमिहीन, एकाकी और सिरफिरे सावोस्का की झोंपड़ी पूरी तरह बर्फ़ में दब गई थी। सिर्फ़ चिमनी ही बाहर नज़र आ रही थी। मीशका ने बताया कि तीन दिन पहले सारा गांव सावोस्का को बर्फ़ में से खोद कर निकालने के लिए जमा हो गया था। मगर उसी रात को जब बर्फ़ के तूफ़ान ने उसकी झोंपड़ी को पूरी तरह ढक दिया था, उस उल्लू ने अलावघर जलाया, मांस के बिना सब्जियों का कुछ शोरबा बनाया-खाया और फिर अलावघर पर चढ़कर सो रहा। वह वहां अलावघर पर ही सोया हुआ मिला, उसे जगाया गया और ऐसी बेवकूफी करने के लिए उसके कान ऐंठे गये।

गांव सूना था, बिल्कुल सन्नाटा था। कहीं-कहीं, किसी चिमनी से हल्का-हल्का धुआं निकल रहा था। बर्फ़ से ढके सफ़ेद मैदान, बर्फ़ ढकी भूसे की ढाल और छतों के ऊपर धुंधला-सा सूरज लटका हुआ था। निकीता और मीशका, अर्तमोन त्यूरिन के झोंपड़े के करीब पहुंचे। बड़ा ही भयानक था यह देहाती! बहुत ही जानदार, बहुत ही गुस्सैल। सारा गांव डरता था उससे। निकीता ने खिड़की में से झांका तो उसे अर्तमोन की लाल लाल दाढ़ी दिखाई दी, झाड़ू की तरह सख्त। वह मेज़ पर बैठा हुआ लकड़ी के प्याले में से कुछ खा रहा था। दूसरी खिड़की के शीशे के साथ नाक सटाये हुए अर्तमोन के तीन बेटे—स्योम्का, ल्योन्का और छोटा अर्तमोशका—खड़े थे। इन तीनों के चेहरे झाड़ूओं से भरे हुए थे।

झोंपड़े के बिल्कुल पास जाकर मीशका ने सीटी बजाई। अपना बड़ा-सा मुंह हिलाते हुए अर्तमोन ने मुड़कर देखा और चमचा दिखाकर मीशका को धमकाया। तीनों लड़के खिड़की के पास से गायब हो गये और भेड़ की खाल के कोटों की पेटियां बांधते हुए ओसारे में दिखाई दिये।

“अरे कुछ शर्म करो,” अपनी टोपी को एक कान पर खींचते हुए मीशका ने कहा।
“तुम तो लड़के नहीं, लड़कियां हो!... घर में घुसे बैठे हो—डर गये न!”

“हम किसी से डरे-वरे नहीं,” झाड़ियों से भरे चेहरेवालों में से एक यानी स्योम्का ने उत्तर दिया।

“बापू बिगड़ते हैं कि हम योही बाहर घूम-घूम कर जूते तोड़ डालते हैं,” ल्योन्का ने कहा।

“मैं तो एक बार कोंचान टोली के लड़कों की ओर जा भी आया हूँ। मैंने तो उन्हें ललकारा और भड़काया भी, मगर वे भड़कते ही नहीं,” छोटे अर्तामोश्का ने कहा।

मीशका ने टोपी को दूसरे कान पर नीचे खींच लिया, चटखारा भरा और फ़ैसलाकुन अन्दाज़ में कहा—

“चलो, उन्हें चलकर भड़कायें। फिर हम उन्हें मज़ा चखायेंगे।”

अर्तामोन के तीनों लड़कों ने कहा—“चलो।” वे सभी सड़क के बीच खड़े हुए बर्फ़ के एक बड़े-से टीले पर एक साथ चढ़ गये। यहीं, अर्तामोन के झोंपड़े के आगे से गांव का दूसरा छोर शुरू होता था।

निकीता का ख्याल था कि बर्फ़ के टीले के कोंचानवाले छोर पर लड़कों की भारी भीड़ होगी। मगर वहां तो एक भी लड़का नहीं था, खामोशी छाई हुई थी। शॉल लपेटे हुए सिर्फ़ दो लड़कियां थीं जो स्लेजों को खींचकर टीले के ऊपर ले जातीं, उनपर बैठ कर नमदे के जूतों से ढके हुए अपने पैरों को सामने फैला लेतीं, रस्सी को थामतीं, स्लेजों को धकेलतीं और शोर मचाती हुई सड़क तथा फिर खत्ती के पास से गुजरतीं और खड़े तट पर से होती हुई नदी के जमे हुए पानी की सतह पर पहुंच जातीं।

मीशका और उसके पीछे-पीछे झाड़ियोंवाले लड़के और निकीता बर्फ़ के टीले से चिल्लाने लगे—

“अरे, सामने तो आओ कोंचानियो!”

“हम तुम्हारी ख़ूब ख़बर लेंगे!”

“डर कर छिप गये हो न!”

“निकलो तो, ज़रा तुम्हारी मरम्मत करें!”

“ज़रा सामने तो आओ कोंचानियो, तुम्हारे दो-दो और हमारा एक ही हाथ होगा!”

मीशका दस्ताना बजाते हुए चिल्लाया।

बर्फ़ के टीले के उस ओर कोंचान टोली के चार लड़के सामने आये। अपने दस्तानों को बजाते, उन्हें अगल-बगल रगड़ते और टोपियों को ठीक करते हुए वे भी चिल्लाने लगे—

“ओह, बड़ा डर लगता है हमें तुम से!”

“अरे, हम तो थर-थर कांप रहे हैं!”

“मेंढक करते टर्-टर्!”

एक अन्य ओर से मीशका के साथी—अल्योश्का, नील, काले कानोंवाला वान्का, सावोस्का का भतीजा पेत्रूश्का और बड़े-से पेटवाला एक छोटा-सा लड़का—सामने आये। यह लड़का अपनी

मां की शॉल सिर पर लपेटे और सलीब की शकल में उसे छाती पर बांधे था। दूसरी तरफ से भी पांच-छः लड़के निकल आये। वे चिल्लाये -

“अरे, ओ झाड़्योंवालो, आओ, तुम्हारी झाड़ियां साफ़ कर दें!”

“देखो तो इन पहलवानों को जो चूहे मारा करते हैं!” इस ओर से मीशका कोर्याशिनोक चिल्लाया।

“मेंढक, मेंढक, टर्र-टर्र!”

दोनों ओर से लगभग चालीस लड़के इकट्ठे हो गये। मगर लड़ाई कोई भी शुरू नहीं करना चाहता था, सब डरे हुए थे। उन्होंने बर्फ़ के गोले फेंके, मुंह बना बनाकर एक-दूसरे को चिढ़ाया। एक ओर के लड़के चिल्ला रहे थे - “मेंढक, मेंढक, टर्र-टर्र!” और दूसरी ओर के “चूहेमार पहलवान!”। दोनों ओर के शब्द दिल में तीर की तरह चुभते थे। अचानक कोंचान टोली में से एक नाटा, चौड़े कंधों और उठी हुई नाकवाला लड़का आगे बढ़ा। अपने साथियों को दायें-बाय हटाता हुआ वह तेजी से बर्फ़ के टीले से नीचे उतरा, कमर पर हाथ रखकर खड़ा हो गया और चिल्लाकर बोला -

“ए मेंढको, आये तुम में से कौन माई का लाल सामने आता है। हो जायें मेरे साथ दो-दो हाथ!”

यही था मशहूर स्त्योप्का कार्नाऊशिकन जिसके घूसे पर टोने का वरदान था।

कोंचान टोली के लड़कों ने हवा में टोपियां उछालीं और खूब जोर से सीटियां बजाईं। मीशका की ओर के लड़के चुप हो गये। निकीता ने अपने सभी साथियों पर नज़र डाली। झाड़्यों-वाले लड़के नाक-भौं सिकोड़े खड़े थे। अल्योशका और काले कानोंवाला बान्का पीछे हट गये। मां की शॉल में लिपटा हुआ छोटा-सा लड़का स्त्योप्का की ओर गोल-गोल आंखों से देख रहा था। ऐसा लगता था कि वह रोया, कि अभी रोया। घर की बनी हुई पेटी को पेट से नीचे करते हुए मीशका बुदबुदाया -

“बहुत देखे हैं इसके जैसे! ऐसे बहुतों की मरम्मत की है! लड़ने को मन नहीं हो रहा - अगर गुस्सा आ गया तो कसकर ऐसी धूल जमाऊंगा कि टोपी मील भर दूर जा गिरेगी।”

स्त्योप्का ने देखा कि कोई भी उससे दो-दो हाथ करने को तैयार नहीं है। उसने अपना दस्ताना हिलाते हुए कहा -

“चलो लड़को, इन पर पिल पड़ो!”

कोंचान टोली के लड़के शोर मचाते और सीटियां बजाते बर्फ़ के टीले से नीचे भाग चले।

झाड़्योंवाले लड़कों का दम खुशक हो गया, वे भाग चले और उनके पीछे-पीछे ही भाग चला मीशका, काले कानों वाला बान्का और बाक़ी सभी लड़के भी। निकीता भी भागा। शॉलवाला छोटा-सा लड़का बर्फ़ पर बैठकर रोने लगा।

हमारी ओर के लड़कों ने भागते हुए अर्तामोन और चेनोऊवोव के अहातों को पार किया और बर्फ के दूसरे टीले पर जा चढ़े। निकीता ने मुड़कर देखा। उसने अपने पीछे अल्योशका, नील और अपनी ओर के अन्य पांच लड़कों को बर्फ पर पड़े पाया। उनमें से कोई तो गिर गया था और कोई डर के मारे खुद ही लेट गया था। लेटे हुआ को पीटना मना था।

शर्म और गुस्से से निकीता का मन रौने को हो रहा था। वे डरकर भाग खड़े हुए थे, उन्होंने डटकर मुकाबला नहीं किया था। वह रुक गया और उसने अपना घुंसा तान लिया। उसी समय उसने उठी हुई नाक और बड़े-से मुंहवाले स्त्योप्का को भागते हुए अपनी ओर आते देखा। भेड़ की खाल की टोपी में से उसके बाल बाहर निकले हुए थे।

निकीता ने उससे भिड़ने के लिए आगे बढ़ते हुए सांड की तरह अपना सिर तान लिया और अपनी पूरी ताकत से स्त्योप्का की छाती पर घुंसा जमाया। स्त्योप्का के सिर को जोर का झटका लगा, उसकी टोपी दूर जा गिरी और वह बर्फ पर ढह पड़ा।

“ओह, कम्बख्त!” स्त्योप्का ने कहा। “अब और नहीं मारना...”

कोंचान टोली के लड़के जहां के तहां रुक गये। निकीता उनकी ओर गया तो उन्होंने रास्ता छोड़ दिया। “हमारी जीत हो रही है!” ऐसे चिल्लाते हुए हमारी ओर के सभी लड़के निकीता से आगे निकल गये और एक दीवार की तरह कोंचान टोली के लड़कों पर टूट पड़े। अब कोंचान टोली के लड़के भाग चले। हमारे लड़कों ने पांच-छः अहातों के पास से उनका पीछा किया। आखिर वे सभी ज़मीन पर लेट गये यानी उन्होंने अपनी हार मान ली।

निकीता गांव के अपने छोर पर लौटा, उत्तेजित, गुस्से से उबलता और यह देखता हुआ कि अब किससे उलझे, किससे भिड़े। किसी ने उसे आवाज़ दी। खत्ती के पीछे स्त्योप्का खड़ा हुआ था। निकीता उसके करीब गया। स्त्योप्का ने नाक-भौं सिकोड़कर उसकी ओर देखते हुए कहा—

“खूब कसकर घुंसा जमाया तुमने। अब दोस्ती करना चाहते हो?”

“बेशक चाहता हूं,” निकीता ने झटपट जवाब दिया।

लड़कों ने मुस्कराते हुए एक-दूसरे की ओर देखा। स्त्योप्का ने कहा—

“आओ, चीजें बदल कर पक्के दोस्त बन जायें।”

“मैं तैयार हूं।”

निकीता घड़ी भर सोचता रहा कि वह स्त्योप्का को कौन-सी सबसे अच्छी चीज़ दे सकता है। आखिर उसने उसे चार फलोंवाला कलमतराश चाकू दिया। स्त्योप्का ने इसे जेब में रखा और सीसे से भरी हुई हड्डी* निकाल कर निकीता की ओर बढ़ाते हुए कहा—

“यह लो! इसे गुम नहीं करना, बड़ी कीमती चीज़ है यह।”

*पुराने ज़माने में रूसी बालक सीसे से भरी हुई हड्डियों से कौड़ियों की भांति खेलते थे। — अनु०

एक उदास शाम

उसी शाम को निकीता 'नीवा' पत्रिका में चित्र देख रहा था और उनके नीचे लिखे हुए स्पष्टीकरण पढ़ रहा था। पत्रिका में बहुत ही कम दिलचस्प सामग्री थी।

एक चित्र यह था—एक नारी ओसारे में खड़ी है कोहनियों तक उसकी बांहें नंगी हैं और बालों में फूल लगे हुए हैं। उसके कंधों पर और पैरों के निकट कबूतर बैठे हैं। बाड़ के पास कंधे पर बन्दूक टिकाये कोई व्यक्ति खड़ा हुआ दांत निपोर रहा है।

इस चित्र को देखकर सबसे ज्यादा परेशानी तो यह सोच कर होती थी कि उसे किस लिए बनाया गया है। यह समझ पाना किसी तरह मुमकिन नहीं था। उसके नीचे यह लिखा था—

“मनुष्य के इन सच्चे मित्रों, इन पालतू कबूतरों को किस ने नहीं देखा? (इसके आगे कबूतरों के बारे में लिखी हुई बातों को निकीता ने नहीं पढ़ा।) सुबह के समय इन पक्षियों को दाना-दुनका चुगाना किसे पसन्द नहीं? प्रतिभाशाली जर्मन चित्रकार हैन्स वूस्ट ने ऐसे ही एक दृश्य को चित्रपट पर उतारा है। प्रोटेस्टेंट मत के पादरी की जवान बेटी एल्जा ओसारे में आती है। कबूतर अपनी प्रियतमा को देखते हैं और खुश होते हुए उड़कर उसके पैरों के पास जा बैठते हैं। देखिये तो एक उसके कंधे पर जा बैठा है और दूसरे उसके हाथ से दाना चुग रहे हैं। जवान शिकारी, जो उसका पड़ोसी है, छिपे-छिपे इस दृश्य की सराहना कर रहा है।”

निकीता ने कल्पना की कि यह एल्जा बस कबूतरों को दाना ही चुगाया करती है और इसके अलावा कुछ भी नहीं करती-घरती—बड़ी ऊब महसूस करती होगी वह। उसका बाप पादरी भी कहीं कमरे में बैठा होगा—कुर्सी पर बैठा जम्हाइयां लेता हुआ ऊब रहा होगा। जवान पड़ोसी ऐसे दांत निपोर रहा है मानो उसके पेट में दर्द हो रहा हो। वह इसी तरह दांत निपोरता हुआ सड़क पर चलता जायेगा और जहां तक उसकी बन्दूक का सवाल है वह केवल दिखावटी है, उससे गोली-वोली कुछ नहीं चलती होगी। चित्र में दिखाया गया आकाश भी धुंधला था और सूरज भी।

निकीता ने थूक लगाकर अपनी पेंसिल का सिरा गीला किया और पादरी की बेटी की मुँछें बना दीं।

दूसरा चित्र था ब्रुजलूक नगर का—संगमील, सड़क किनारे पड़ा हुआ टूटा पहिया। दूरी पर तख्तों के झोंपड़े, छोटा-सा गिरजाघर और घटाटोप बादलों से बरसती हुई टेढ़ी जल-धाराएं।

निकीता ने जम्हाई ली, 'नीवा' पत्रिका बन्द कर दी और मेज पर झुककर आहट लेने लगा।

अटारी से छोटी-छोटी और फिर लम्बी सीटी सुनाई दी। फिर वह भारी आवाज की “ऊ-ऊ-ऊ” में बदल गई। यह “ऊ-ऊ-ऊ” की आवाज लम्बी थी, खीझ भरी थी और होंठों को गोल करके पैदा की जा रही थी। इसके बाद यह सीटी बारीक हो गई, दर्दभरी और नकियाती-सी आवाज में बदली और फिर सूत के बारीक धागे जैसी कराह बन गई। फिर से उसने भारी और होंठों को गोल कर पैदा की गई आवाज का रूप ले लिया।



गोल मेज़ के ऊपर एक लैम्प जल रहा था, चीनी के सफ़ेद शेड के नीचे। दीवार के पीछे बरामदे में किसी के भारी-भरकम पैरों की आहट सुनाई दी। शायद अंगीठी में लकड़ियाँ झोंकनेवाला झोंकिया आया था। लैम्प के नीचे लटकी हुई शीशे की छोटी-छोटी सजावटी चीज़ें धीरे से टनटना उठीं।

मां किताब पर सिर झुकाये थी। उसके बाल हल्के सुनहरे और मुलायम थे। उसकी कनपटी पर, जहाँ बाजरे के दाने के समान जन्म-चिह्न था, केश-कुण्डल लटके हुए थे। मां जब-तब बुनने की सिलाई से किताब का जुड़ा हुआ पृष्ठ काटती। किताब पर गेरुआ आवरण था। पिता के कमरे में पूरी की पूरी अलमारी ऐसी पुस्तकों से भरी पड़ी थी। उन सब का एक ही नाम था— 'यूरोप समाचार'। बड़ी अजीब बात है कि सभी वयस्कों को ऐसी ऊब भरी किताबें पढ़ना पसन्द है। ऐसी किताब पढ़ना तो ईंट घिसने का ऊब भरा काम करने के समान है।

मां की गोद में पालतू साही—अखीलका—सो रही थी अपनी सूअर जैसी और गीली नाक को पंजों पर टिकाये हुए। साही दिन भर सोयी रहकर अपनी नींद पूरी कर लेती और जब लोग सोते तो वह रातभर कमरे में आती-जाती, अपने पंजे रगड़ती, घों-घों की आवाज़ निकालती, सभी कोनों में सूंघा-सांघी करती और चूहों के बिलों में झांकती।

दीवार के पीछे झोंकिये ने लोहे के दरवाज़े को टनटनाया और भट्टी में लकड़ियों के हिलाये-डुलाये जाने की आवाज़ सुनाई दी। कमरे में गर्म हुए प्लास्टर और धुले हुए फ़र्श की गन्ध आ रही थी। वातावरण ऊब भरा, मगर आरामदेह था। ऊपर अटारी में कोई अपना पूरा जोर लगाकर "हू-ऊ-ऊ-ऊ" कर रहा था।

"मां, यह सीटी कौन बजा रहा है?" नikiता ने पूछा।

मां ने किताब पर से नज़र हटाये बिना ही भौहें चढ़ाईं। अर्कादी इवानोविच नikiता की कापी में लकीरें खींच रहे थे। वे तो मानो ऐसे ही प्रश्न की प्रतीक्षा में थे। झटपट बोले—

"जब हम किसी बेजान चीज़ की चर्चा करें, तो हमें 'क्या' सर्वनाम का उपयोग करना चाहिए।"

"हू-ऊ-ऊ-ऊ-ऊ," अटारी में से आवाज़ आ रही थी। मां ने सिर ऊपर उठाया, आहट ली, कंधों को हिलाया-डुलाया और उन्हें रोयेंदार शॉल से ढक लिया। साही जाग उठी और उसने खीझ कर नाक से गहरी सांस ली।

अब नikiता के मस्तिष्क में एक कल्पना-चित्र उभरा। उसने चित्र में देखा कि ठंडी और अंधेरी अटारी के झरोखे में से बर्फ़ अन्दर आ रही है। छत की बड़ी-बड़ी कड़ियों के बीच, जहाँ कबूतर बैठा करते थे, पुरानी, टूटी-फूटी कुर्सियाँ और आरामकुर्सियाँ तथा सोफ़ों के टूटे हुए हिस्से पड़े हैं। इन सभी के स्प्रिंग निकले हुए हैं। चिमनी के निकट रखी हुई ऐसी ही एक आरामकुर्सी पर "हवा" बैठी है, झबरीली-सी, धूल-मिट्टी और मकड़ी के जालों से लथपथ। वह हाथों पर अपने गाल टिकाये आराम से बैठी है और "ऊ-ऊ-ऊ-ऊ" का राग अलाप रही है। रात लम्बी है, अटारी ठंडी है और वह एकाकी, एकदम अकेली बैठी हुई "ऊ-ऊ" कर रही है।

निकीता अपनी कुर्सी से उठा और मां के पास जा बैठा। मां प्यार से मुस्कलाई, निकीता को उसने अपने निकट किया और माथा चूमा।

“तुम्हारा सोने का वक्त हो गया है न बेटे?”

“नहीं मां, आधा घंटा और ठहर जाइये।”

निकीता ने मां के कंधे पर अपना सिर टिका दिया। कमरे की गहराई में एक दरवाजा चरमराया और वास्का बिल्ला अन्दर आया—पूँछ ऊपर को उठाये हुए और उसका सारा व्यक्तित्व नम्रता और शिष्टता की मूर्ति-सा था। अपना गुलाबी मुँह खोलकर उसने बहुत ही धीरे से ‘म्याऊँ’ की। कापी पर नज़र टिकाये हुए ही अर्कादी इवानोविच ने पूछा—

“तुम किस काम से आये हो, वासीली वासील्येविच?”

बिल्ला वास्का मां के पास आया, सिकोड़ी हुई और ज़रा-से सूराख जैसी प्रतीत हो रही हरी आंखों से उसने मां की ओर देखा तथा कुछ अधिक जोर से म्याऊँ की। साही ने फिर से घों-घों की। निकीता को लगा कि वास्का को किसी बात की खबर है, वह कोई सूचना देने आया है।

अटारी में हवा बहुत बुरी तरह ‘हू-ऊ’ कर रही थी। इसी समय बाहर से हल्की-सी पुकार सुनाई दी, बर्फ़ कचकचाई और कुछ कण्ठस्वर सुनाई दिये। मां झटपट कुर्सी से उठी। साही खर-खर की आवाज़ करती हुई गोद से नीचे लुढ़क गई।

अर्कादी इवानोविच भागकर खिड़की के पास गये और बाहर झाँककर चिल्लाये—

“वे आ गये हैं!”

“हे भगवान!” उत्तेजित मां ने कहा। “क्या सचमुच आन्ना अपोल्लोसोव्ना आयी है?... बर्फ़ के ऐसे भयंकर तूफ़ान में...”

कुछ क्षण बाद वरामदे में खड़े हुए निकीता ने नमदे से मढ़े हुए भारी दरवाज़े को धीरे से खुलते देखा। पाले की भाप का एक बादल-सा अन्दर आया और फिर फ़र के दो कोट पहने और शॉल ओढ़े हुए एक ऊँचे क्रुद और गदराये वदन की नारी अन्दर आई। वह बर्फ़ से अटी पड़ी थी और एक लड़के का हाथ थामे थी। लड़का चमकते हुए बटनोंवाला सलेटी रंग का ओवरकोट और कज़ाकी हुड पहने था। उसके पीछे पीछे पाले से अकड़े हुए नमदे के बूटों को ठपठपाता हुआ कोचवान भीतर आया। उसकी दाढ़ी पर पाले की परत जमी हुई थी, मूँछों की जगह बर्फ़ के पीले छल्ले थे और पलकें फूली-फूली तथा सफ़ेद नज़र आ रही थीं। वह हाथों में एक बालिका को उठाये था। बालिका बकरे की खाल का कोट पहने थी जिसकी फ़र बाहर की ओर थी। बालिका कोचवान के कंधे पर सिर टिकाये और आँखें मूंदे हुए लेटी थी। उसके चेहरे पर कोमलता थी और साथ ही शरारत का भाव झलक रहा था।

अन्दर आते हुए यह लम्बे क्रुदवाली नारी ऊँची और भारी आवाज़ में बोली—

“अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना, लो यह रहे तुम्हारे मेहमान!” इतना कहकर उसने हाथ ऊपर उठाये और शॉल खोलने लगी। “पास नहीं आओ, तुम्हें ठण्ड लग जायेगी। मैं यह कहे बिना

नहीं रह सकती कि तुम्हारे यहां के रास्ते तो बहुत ही खराब हैं... बिल्कुल घर के करीब आकर ही हम झाड़ियों में जा फंसे।”

यह मां की सहेली थी, आन्ना अपोल्लोसोव्ना बाबकिना, जो सदा समारा में ही रहती थी। उसका बेटा वीक्टर इस इन्तज़ार में था कि कोई उसका हुड उतारे और नाक-भौं सिकोड़कर निकीता की ओर देख रहा था। निकीता की मां ने सोई हुई बालिका को कोचवान से ले लिया और उसकी फ़र की टोपी उतारी। उसी समय उसके सुन्दर, सुनहरे बाल बिखर गये। मां ने उसे चूमा और कहा—

“प्यारी लील्या, अब जागो, तुम मौसी के घर पहुंच गई।”

लड़की ने बड़ी-बड़ी नीली आंखें खोलते हुए गहरी सांस ली और पूरी तरह जागते हुए एक बार फिर सांस छोड़ी।

वीक्टर और लील्या

निकीता और वीक्टर बाबकिन की निकीता के कमरे में सुबह ही आंख खुली। अपने-अपने पलंग पर बैठे हुए उन्होंने माथे पर बल डालकर एक-दूसरे की ओर देखा।

“मुझे तुम्हारा ध्यान है,” निकीता ने कहा।

“मुझे भी तुम्हारी बहुत ही अच्छी तरह से याद है,” वीक्टर ने फ़ौरन जवाब दिया।

“तुम एकबार हमारे यहां समारा आये थे। तुमने सेबों के साथ इतनी अधिक बत्तख खा ली थी कि तुम्हें रेंड़ी का तेल पिलाना पड़ा था।”

“मुझे यह तो याद नहीं।”

“मगर मुझे याद है।”

लड़के चुप हो गये। वीक्टर ने जानबूझकर जम्हाई ली। निकीता ने लापरवाही से कहा—

“मेरे अध्यापक अर्कादी इवानोविच बहुत ही कठोर हैं, पढ़ा पढ़ाकर मेरे नाक में दम कर दिया है। वे किसी भी किताब को आधे घण्टे में पढ़ डालते हैं।”

वीक्टर मुस्कराया—

“मैं हाई स्कूल में पढ़ता हूं, दूसरी कक्षा में। हमारे यहां इतनी सख्ती होती है कि अक्सर मुझे दोपहर का खाना गोल करना पड़ता है।”

“तो क्या हुआ!” निकीता ने कहा।

“हां, तुम तो ऐसा ही कहोगे। वैसे यह सही है कि मैं एक हजार दिनों तक भूखा रह सकता हूं।”

“वाह,” निकीता ने कहा। “कभी आजमाकर देखा है?”

“नहीं, अभी तक तो नहीं। मां इजाजत नहीं देती।”

निकीता ने जम्हाई और अंगड़ाई ली।

“जानते हो, परसों मैंने स्त्योप्का कार्नाऊशिकन को पीट दिया।”

“यह कौन है स्त्योप्का कार्नाऊशिकन?”

“हमारे गांव का सबसे तगड़ा लड़का। मैंने कसकर ऐसा घूसा जमाया कि वह चारों शाने चित हो गया। फिर मैंने उसे चार फलोंवाला कलमतराश चाकू दिया और उसने मुझे सीसाभरी हुई हड्डी दी। वह मैं तुम्हें बाद में दिखाऊंगा।”

निकीता पलंग से उठा और इत्मीनान से कपड़े पहनने लगा।

“मैं एक हाथ से मकारोव का शब्द-कोश उठा लेता हूं,” खीझ से कांपती हुई आवाज में वीक्टर ने कहा। यह स्पष्ट था कि वह अब मैदान में और अधिक डटा नहीं रहना चाहता था।

निकीता टाइलों के अलावघर के करीब गया। उसपर लेटने के लिए भी सीट बनी हुई थी। अलावघर को हाथ से छुए बिना ही वह उछलकर सीट पर जा पहुंचा। फिर उसने एक पैर ऊपर उठाया और दूसरे पैर पर नीचे कूद गया।

“अगर जल्दी-जल्दी टांगें हिलाई-डुलाई जायें तो आदमी उड़ भी सकता है,” वीक्टर की आंखों में आंखें डालकर ध्यान से उसे देखते हुए निकीता ने कहा।

“यह तो बड़ी मामूली-सी चीज है। हमारी कक्षा में बहुत-से बालक ऐसे उड़ते हैं।”

लड़कों ने कपड़े पहने और खाने के कमरे में जा पहुंचे। वहां गर्म-गर्म डबलरोटी और पराठों की गंध फैली हुई थी, चमकते हुए समोवार से इतनी भाप निकल रही थी कि सभी खिड़कियों पर धुंध ही धुंध छा गई थी। मेज पर मां, अर्कादी इवानोविच और पिछले दिन आई वीक्टर की बहन लीलया बैठी थी। उसकी उम्र कोई नौ वर्ष की थी। बगलवाले कमरे से आन्ना अपोल्लोसोव्ना की भारी-भरकम आवाज सुनाई दी—“मुझे तौलिया दे जाइये।”

लीलया रेशमी नीले रिबनवाला, जो एक बड़ी ‘बो’ की शक्ल में पीछे की ओर बंधा हुआ था, फ़ाक पहने थी। उसके सुनहरे घुंघराले बालों में भी एक और नीला रिबन बंधा हुआ था, तितली की शक्ल में।

निकीता उसके करीब आया तो शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया और उसने अपना पैर रगड़ा। लीलया अपनी कुर्सी पर बैठी हुई ही घूमी और निकीता की ओर अपना हाथ बढ़ाते हुए उसने बहुत गम्भीरता से कहा—

“नमस्कार, लड़के!”

जब उसने यह कहा तो उसका ऊपरवाला होंठ ऊपर को उठ गया।

निकीता को लगा कि वह जीती-जागती लड़की नहीं, कोई मूर्ति है। इतनी सुन्दर थी वह! खासकर उसकी आंखें—रिबन से बढ़कर नीली और चमकती हुई और उसकी लम्बी-लम्बी बरौनियां—बिल्कुल रेशम जैसी। लीलया ने अभिवादन किया और उसके बाद निकीता की ओर कोई ध्यान न देते हुए उसने अपने दोनों हाथों में चाय का बड़ा-सा प्याला साधा और उसी में अपना मुंह गड़ा दिया। लड़के उसके पास ही मेज पर बैठ गये। वीक्टर बच्चों की भांति चाय



पीता था। वह प्याले पर झुक जाता और फिर अपने लम्बे-लम्बे होंठों को आगे की ओर बढ़ाकर चुस्कियां लेता। वह चोरी-छिपे चाय में शकर डालता गया, यहां तक कि वह शरबत बन गई और तब उसने दबी-सी आवाज़ में उसमें पानी डालने का अनुरोध किया। निकीता को अपने घुटने से टहोकते हुए वीक्टर ने फुसफुसाकर पूछा -

“तुम्हें मेरी बहन अच्छी लगी है?”

निकीता ने कोई उत्तर न दिया। शर्म से उसका चेहरा टमाटर की तरह लाल हो गया।

“ज़रा सम्भलकर रहना उसके मामले में,” वीक्टर ने फुसफुसाकर कहा। “बात बात पर मां के पास भागी जाती है शिकायत करने।”

लील्या ने इसी समय चाय खत्म की, नेप्किन से मुंह पोंछा और अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना के पास जाकर शिष्टतापूर्वक और ढंग से बोली -

“धन्यवाद, मौसी साशा।”

फिर वह खिड़की की ओर गई, बड़ी-सी बादामी रंग की आरामकुर्सी पर अपने नीचे टांगें दबाकर बैठ गई, अपनी किसी जेब से उसने सुइयों और घागों से भरा डिब्बा निकाला और सिलाई करने लगी। निकीता को अब तितली की शक्ल में बंधी हुई ‘बो’, लटकते हुए दो केश-कुण्डल और उनके बीच बाहर को निकली हुई जवान का ज़रा-सा सिरा दिखाई दे रहा था जिससे सिलाई के काम में मानो उसे मदद मिल रही थी।

निकीता के सभी विचार अब उलझ-उलझा गये थे। उसने वीक्टर को यह दिखाना शुरू किया कि कुर्सी की टेक से कैसे कूदा जा सकता है। मगर लील्या ने मुड़कर उस तरफ़ नहीं देखा। तभी मां ने कहा -

“बच्चो, बाहर अहाते में जाकर शोर मचाओ!”

लड़कों ने कपड़े पहने और अहाते में चले गये। दिन धुंधला था, कुछ गर्म भी। कम ऊंचाई पर लाल लाल सूरज बर्फ़ से ढके मैदानों जैसे प्रतीत होते हुए बादलों की लम्बी-लम्बी तहों के ऊपर लटका हुआ था। बगीचे में पाले की चादर से ढके हुए गुलाबी वृक्ष खड़े थे। बर्फ़ पर पड़ती हुई अस्पष्ट परछाइयां भी उसी तन सहलाते प्रकाश को प्रतिबिम्बित कर रही थीं। असाधारण शान्ति का साम्राज्य था। केवल पिछवाड़े के ओसारे के पास दो कुत्ते - शारोक और कातोक - एक-दूसरे से सटकर खड़े थे और सिर घुमाकर गुर्रा रहे थे। वे दोनों इसी तरह देर तक गुर्राते, दांत दिखाते और एक-दूसरे से सटे हुए खड़े रहा करते थे। फिर जब कोई उधर से गुज़रता हुआ मज़दूर उनपर दस्ताना फेंकता तो वे गुस्से से खांसते, अपनी पिछली टांगों पर खड़े हो जाते और ऐसे लड़ते कि बाल उड़ उड़कर दूर जा गिरते। वे दूसरे कुत्तों से डरते, भिखारी उन्हें फूटी आंखों न सुहाते और रात को रखवाली करने के बजाय बग़ीचाने में सोये रहते।

“तो अब हम क्या करेंगे?” वीक्टर ने पूछा।

निकीता ने एक झबरीले और खीझे हुए कौवे पर नज़र डाली जो खत्ती से पशुओं के बाड़े की ओर उड़ा जा रहा था। उसका खेलने को मन नहीं हो रहा था, एक अनबूझ-सी उदासी ने

उसके मन में घर कर रखा था। वह चाहता था कि बैठक में चलने का सुझाव दे और वहां वे सोफे पर बैठकर कुछ पढ़े-पढ़ावें। मगर वीक्टर ने कहा—

“अरे, मैं तुम्हें समझ गया हूं, तुम तो सिर्फ लड़कियों के साथ ही खेल सकते हो।”

“क्यों?” निकीता ने शर्म से लाल होते हुए पूछा।

“क्यों? यह तो तुम खुद ही जानते हो।”

“तुम तो बेकार मेरे पीछे पड़ गये हो। खैर, मैं कुछ नहीं जानता। आओ, कुएं पर चलें।”

लड़के कुएं की ओर चल दिये। इस समय खुले हुए फाटकों से बाहर निकलती हुई गायें भी पानी पीने के लिए कुएं की तरफ जा रही थीं। दूर खड़ा हुआ मीशका कोर्याशोनोक चरवाहों का एक बड़ा-सा कोड़ा सटकार रहा था जिससे गोली दगने की सी आवाज निकलती थी। मीशका अचानक चिल्ला उठा—

“वायान, वायान! निकीता, बचो! बचो इससे, निकीता!”

निकीता ने घूमकर देखा। चौड़े माथे पर घुंघराले बालों तथा छोटे-छोटे सींगोंवाला एक गुलाबी-भूरा और लम्बा-सा सांड गायों के झुंड से निकलकर लड़कों की ओर आ रहा था।

“धां... धां...” वायान रह-रहकर गरजता और अपनी पीठ पर दायें-बायें पूंछ मार रहा था।

“वीक्टर, भागो!” निकीता चिल्लाया और उसका हाथ पकड़ कर घर की ओर भाग चला।

सांड धां-धां करता हुआ बहुत तेजी से लड़कों के पीछे भागा।

वीक्टर ने मुड़कर देखा और चीख उठा। वह बर्फ पर गिर पड़ा और सिर को हाथों से ढक लिया। वायान चार-पांच कदमों की दूरी पर था। निकीता अब रुक गया, वह अचानक गुस्से से उबल पड़ा, उसने अपनी टोपी उतारी, सांड के पास भाग गया और टोपी को थूथनी पर मारते हुए चिल्लाने लगा—

“हटो यहां से! हटो!”

सांड रुक गया और उसने सींग झुका लिये। दूसरी ओर से मीशका कोर्याशोनोक अपना कोड़ा सटकारता हुआ आ पहुंचा। तब वायान दुख से रम्भाता हुआ मुड़ा और कुएं की ओर वापिस चला गया। उत्तेजना से निकीता के होंठ कांप रहे थे। उसने टोपी ओढ़ी और मुड़कर देखा। वीक्टर घर के करीब भी पहुंच चुका था और हाथ हिलाकर उसे अपने पास बुला रहा था। अनजाने ही निकीता का ध्यान ओसारे की ओर से तीसरी खिड़की की ओर चला गया। खिड़की के पीछे उसे दो आश्चर्यचकित आंखों और उनके ऊपर तितली की तरह खड़े हुए नीले रिबन की झलक मिली। लील्या खिड़की के दासे पर खड़ी हुई निकीता की ओर देख रही थी। वह अचानक मुस्करा दी। निकीता ने झटपट दूसरी ओर मुंह कर लिया। उसने फिर खिड़की की ओर नहीं देखा। उसका मन खिल उठा और उसने वीक्टर को पुकारते हुए कहा—

“चलो, स्लेज लेकर टीले पर चले और वहां से नीचे फिसलें! जल्दी करो!”

दोपहर के खाने का वक्त होने तक वे स्लेज पर टीले से नीचे फिसलते, ठहाके लगाते और मौज मनाते रहे। मगर निकीता लगातार मन ही मन यह सोचता रहा—

“जब घर लौटेंगे और खिड़की के पास से गुजरेंगे तो मैं खिड़की पर नजर डालूं या नहीं? नहीं, मैं उधर नहीं देखूंगा, दूसरी ओर देखता हुआ आगे चला जाऊंगा।”

फ़र वृक्ष के सजावटी खिलौनों का डिब्बा

दोपहर के खाने के समय निकीता ने कोशिश की कि लील्या की ओर न देखे। वैसे अगर वह उसे देखने की कोशिश करता भी, तो उसे लाभ कुछ न होता। कारण कि उन दोनों के बीच लाल रंग की मखमली जाकेट पहने हुए आन्ना अपोल्लोसोव्ना बैठी थी। वह हाथ हिलाती हुई इतनी ऊंची और भारी-भरकम आवाज में बातें कर रही थी कि लैम्प के नीचे लगी हुई शीशे की सजावटी चीजें छनछना उठती थीं।

“नहीं, नहीं, हरगिज नहीं, अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना,” उसने जोरदार आवाज में कहा, “घर पर ही पढ़ाना बंद करो। हाई स्कूल में तो ऐसी अव्यवस्था है कि कुछ न पूछो। मेरा तो यह मन होता है कि डायरेक्टर को अपने हाथों से पकड़कर दरवाजे से बाहर निकाल दूं... वीक्टर,” उसने अचानक चिल्लाकर कहा, “बड़ों के बारे में मां जो कुछ कहती है, तुम्हें उससे कोई मतलब नहीं है। तुम्हें उनकी इज्जत करनी चाहिए। अब इन अध्यापकों को ही ले लो, अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना! निरे उल्लू हैं। एक से एक बढ़कर। और वह भूगोल का अध्यापक? उसका क्या नाम है, वीक्टर?”

“सिनीचकिन।”

“मैं तुम्हें पहले भी बता चुकी हूं सिनीचकिन नहीं, सिन्याचकिन। यह अध्यापक तो ऐसा सिरफिरा है कि एक बार हमारी बैठक से निकलते हुए उसने टोपी की जगह सन्दूक पर सोई हुई बिल्ली उठाकर ओढ़ ली... वीक्टर, तुम छुरी-कांटा कैसे पकड़े हुए हो? ढंग से खाओ, मच-मच की आवाज नहीं करो... मेज़ के और नजदीक हो जाओ... हां तो मैं तुम्हें क्या बताना चाहती थी, अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना? अरे, हां, मैं किसमस वृक्ष को सजाने के लिए सभी तरह की छुटपुट चीजों का सन्दूक भर लाई हूं... कल बच्चों को इन्हें चिपकाने के काम में जुटाना चाहिए।”

“मगर मेरे ख्याल में तो इन्हें आज ही यह काम शुरू करना चाहिए, वरना वे इसे कर नहीं पायेंगे,” मां ने कहा।

“खैर, जैसा मनमाने वैसा करो। मैं तो जाकर खत लिखती हूं। खाने के लिए धन्यवाद, मेरी प्यारी।”

आन्ता अपोल्लोसोव्ना ने नेप्किन से होंठ पोंछे, जोर से आवाज करते हुए कुर्सी पीछे हटाई और खत लिखने के इरादे से सोने के कमरे में चली गई। मगर घड़ी भर बाद वहां पलंग के स्प्रिंग ऐसे बज उठे मानो उसपर कोई हाथी ढह पड़ा हो।

बड़ी मेज़ से मेज़पोश हटा दिया गया। मां चार कैंचियां लाई और लेई बनाने लगी। लेई ऐसे बनाई गई—मां ने कोनेवाली अलमारी से, जहां घरेलू दवाखाना था, मैदे का मर्तबान निकाला, मैदे से भरी एक चमची एक गिलास में डाली, फिर उसमें ठंडे पानी की दो चमचियां डालकर उसे अच्छी तरह हिलाना शुरू किया ताकि उसमें बिना घुला मैदा न रह जाये। फिर मां ने समोवार से उबलता हुआ पानी उसमें डाला और उसे लगातार हिलाती रही। मैदा जैली की तरह पारदर्शी हो गई। इस तरह बढ़िया लेई बन गई।

लड़कों ने आन्ता अपोल्लोसोव्ना का चमड़े का सूटकेस लाकर मेज़ पर रख दिया। मां ने सूटकेस खोला और उसमें से चीजें निकालनी शुरू कीं—सुनहरे कागज, चिकने और उभरे हुए, रुपहले, नीले, हरे और नारंगी रंग के कागज, त्रिस्तोल की दफ़ती, मोमबत्तियों से भरे डिब्बे, क्रिसमस वृक्ष के लिए शमादानों, सुनहरी मछलियों और मुर्गों, धागे से बंधे और सफ़ेद छल्लोंवाले शीशे के गोलों से भरे हुए गत्ते के डिब्बे। इन शीशे के गोलों पर चारों ओर गढ़े से बने हुए थे और ये गढ़े दूसरे रंगों के थे। इसके बाद मां ने पटाखों से भरा हुआ डिब्बा, सुनहरी और रुपहली किनारी का गुच्छा, खिड़कियोंवाले रंग-बिरंगे चंडोल और एक बड़ा-सा सितारा निकाला। हर नये डिब्बे के निकलने पर बच्चे खुशी से चिल्ला उठते।

“इसमें और भी कई बढ़िया चीजें हैं,” सूटकेस में हाथ डालते हुए मां ने कहा, “मगर फ़िलहाल हम उन्हें नहीं निकालेंगे। आओ, अब इन्हें लेई से जोड़कर तरह तरह की चीजें बनायें।”

वोक्तोर कागजों को जोड़कर जंजीर बनाने लगा। निकीता ने मिठाइयों के लिए कटोरियां बनानी शुरू कीं। मां कागज और गत्ता काट रही थी। लील्या ने नम्रता से पूछा—

“मौसी साशा, मैं डिब्बा बना सकती हूँ?”

“जो चाहो, वही बनाओ, बेटी।”

बालक नाक से सांस लेते और लेई वाले हाथ कपड़ों से पोंछते हुए चुपचाप काम करने लगे। इसी समय मां यह बताती रही कि कैसे बरसों पहले क्रिसमस वृक्ष सजाने के लिए नाम मात्र को भी खिलौने नहीं होते थे और सब कुछ हाथों से ही करना पड़ता था। इसलिए उन दिनों इस कला में माहिर ऐसे लोग होते थे (जिन्हें उसने अपनी आंखों से देखा था) जो मीनारों, चक्करदार सीढ़ियों और उठाऊ पुलोंवाले असली क़िले तक बना देते थे। क़िले के सामने काई वाली शीशे की झील होती थी। झील में सुनहरी नाव में जुते हुए दो हंस तैरते रहते थे।

लील्या सुनती और चुपचाप काम करती रही। केवल कठिन क्षणों में जीभ बाहर निकालकर अपने काम को हल्का कर लेती थी। निकीता अपनी कटोरियां नीचे रखकर उसकी ओर देखने

लगा। इसी समय मां बाहर चली गई। वीक्टर ने कोई दस गज लम्बी रंग-बिरंगी जंजीरें कुर्सियों पर लटका दीं।

“तुम क्या बना रही हो?” निकीता ने पूछा।

लील्या सिर झुकाये-झुकाये ही मुस्कराई, उसने सुनहरे कागज का एक सितारा काटा और उसे नीले ढक्कन पर चिपका दिया।

“तुम क्या करोगी इस डिब्बे का?” निकीता ने धीरे से पूछा।

“इसमें गुड़ियों के दस्ताने रखूंगी,” लील्या ने गम्भीर होकर उत्तर दिया। “तुम लड़के हो, यह बात तुम्हारी समझ में नहीं आयेगी।” लील्या ने सिर ऊपर उठाया और अपनी नीली कठोर नज़र से निकीता की ओर देखा।

उसके चेहरे पर लाली आने लगी, बढ़ती गई और आखिर उसका चेहरा बिल्कुल सुख हो गया।

“ओह, तुम कितने लाल हो, बिल्कुल चुक्रन्दर की तरह,” लील्या ने कहा।

वह फिर से डिब्बे पर झुक गई। उसके चेहरे पर शरारत खेलने लगी। निकीता ऐसे बैठा था मानो किसी ने उसे कुर्सी के साथ चिपका दिया हो। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि कहे तो क्या और किसी भी तरह कमरे से बाहर नहीं जा सकता था। लड़की उसका मजाक उड़ा रही थी, मगर उसने न बुरा माना और न उससे नाराज़ ही हुआ। केवल उसे देखता ही रहा। अचानक लील्या ने डिब्बे पर नज़र टिकाये-टिकाये ही कुछ ऐसे अन्दाज़ में उससे पूछा मानो उनका अपना कोई राज़ हो और वे उसकी चर्चा कर रहे हों—

“तुम्हें यह डिब्बा पसन्द है?”

निकीता ने उत्तर दिया—

“हां, पसन्द है।”

“मुझे भी बहुत पसन्द है,” लील्या ने कहा और सिर हिलाया जिससे उसका रिबन और केश-कुंडल झूल उठे। लील्या ने कुछ और भी कहना चाहा, मगर इसी समय वीक्टर आ गया और लील्या तथा निकीता के बीच अपना सिर करके जल्दी-जल्दी बोला—

“कैसा डिब्बा? कहां है डिब्बा?... अरे इसमें क्या खास बात है, मामूली-सा डिब्बा है। ऐसे तो जितने चाहो मैं बना सकता हूं।”

“वीक्टर, मैं सचमुच मां से शिकायत कर दूंगी कि तुम मेरे काम में खलल डालते हो,” लील्या ने कांपते होंठों से कहा। फिर उसने लेई और कागज उठाया तथा मेज़ के दूसरे सिर पर जा बैठी।

वीक्टर ने निकीता को आंख मारी और बोला—

“मैंने तुमसे कहा था न, इससे ज़रा बचकर रहना। शिकायतें करने का मर्ज़ है इसे!”

उसी रात को निकीता और वीक्टर जब अंधेरे कमरे में अपने पलंग पर लेटे हुए थे तो निकीता ने सिर ढके ढके ही कम्बल के नीचे से पूछा—

“वीक्टर, तुम सो गये क्या?”

“अभी तो नहीं... कुछ मालूम नहीं... क्या बात है?”

“सुनो तो वीक्टर... मैं तुम्हें एक खतरनाक राज बताना चाहता हूँ... वीक्टर... तुम सोओ नहीं... वीक्टर, सुनो तो...”

“हूँ... खर-र...” वीक्टर के खरटे सुनाई देने लगे।

अलग स्लेज पर उपहार

पौ फटने के समय निकीता जब अभी नींद में ही था तो उसे घर की अंगीठियों में लकड़ियों के हिलाये-डुलाये जाने की आवाज सुनाई दी। फिर बाहरवाला दरवाजा जोर से बन्द किया गया। यह झोंकिया था जो लकड़ियों और उपलों के गट्टे लाया था।

खुशी की अनुभूति के साथ निकीता की आंख खुली। आकाश साफ था, पाला कट रहा था।

खिड़की के शीशे पर पाले की मोटी तह जमी हुई थी और तरह तरह के फूल-पत्तों के डिजाइन बने हुए थे। वीक्टर अभी सो रहा था। निकीता ने उसपर तकिया फेंका, मगर वीक्टर ने थोड़ा खीझकर कम्बल सिर पर खींच लिया। खुशी के कारण निकीता झटपट बिस्तर से उठा, उसने कपड़े पहने और सोचा—“कहां जाऊं?” वह अर्कादी इवानोविच की ओर भाग गया।

अर्कादी इवानोविच की तो उसी समय आंख खुली थी। वे लेटे-लेटे वही खत पढ़ रहे थे जिसे तीस बार पहले भी पढ़ चुके थे। निकीता को देखकर उन्होंने कम्बल सहित अपनी टांगें ऊपर को उठाईं, उन्हें पलंग पर जोर से नीचे किया और चिल्ला उठे—

“यह तो कमाल ही हो गया! तुम सबसे पहले जाग गये!”

“अर्कादी इवानोविच, आज दिन कैसा सुहाना है!”

“हां, मेरे दोस्त, बहुत ही बढ़िया दिन है।”

“अर्कादी इवानोविच, मैं आपसे यह पूछना चाहता था,” निकीता ने भरेठ पर अपनी उंगली फेरते हुए कहा, “आपको मेहमान बहुत पसन्द हैं?”

“तुम किसके बारे में पूछ रहे हो?”

“बच्चों के बारे में।”

“हूँ, हूँ... तुम क्या चाहते हो कि कौन-सा बच्चा मुझे पसन्द आये?”

अर्कादी इवानोविच ने यह बातचीत की तो साधारण ढंग से, मगर... बहुत जल्दी-जल्दी। वे तकिये पर कुहनियां टिकाये हुए निकीता की ओर देख रहे थे। यह सच है कि उनके होंठों पर मुस्कान नहीं थी, मगर वे निकीता को देख रहे थे बहुत ही ध्यान से। शायद अर्कादी इवानोविच भी कुछ जानते थे। निकीता अचानक मुड़ा, कमरे से बाहर भागा, उसने घड़ी भर कुछ सोचा और अहाते में चला गया।

नौकरों के क्वार्टरों, खड्ड में बने हुए स्नानागार, बर्फ से ढके सफ़ेद मैदान और उससे आगे यानी सारे गांव के ऊपर नीले धुएं के खम्भे से खड़े दिखाई दे रहे थे। रात भर में वृक्षों पर पाले की और मोटी तहें जम गई थीं और तालाब के किनारे वाले विराटकाय काले चिनार की शाखाएं बिल्कुल झुक गई थीं और पालेवाले नीले आकाश में बिल्कुल साफ़ नज़र आ रही थीं। बर्फ़ चमक और कचकचा रही थी। पाले के कारण नाक में खुजली होती थी और वह पलकों पर जमा जा रहा था।

पिछवाड़े के ओसारे के निकट राख का एक ढेर पड़ा था जिसमें से हल्का-हल्का धुआं निकल रहा था। वहीं शारोक और कातोक कुत्ते एक-दूसरे पर गुर्रा रहे थे। मीशका कोर्याशोनोक मोटी-सी सोटी हाथ में लिये बर्फ़ पर लड़खड़ाता और अहाते को लांघता हुआ निकीता की ओर बढ़ा आ रहा था। वह बर्फ़ के जमे हुए गोलों से मानो हॉकी-सी खेलने जा रहा था। इसी समय गांव के दायीं ओर सड़क पर स्लेजों की कतार-सी नज़र आई। वे एक-दूसरी के पीछे खड्ड में से निकलती और हिचकोले खाती, बर्फ़ पर नीची और काली-सी नज़र आती और तालाब के पास से गुज़रती हुई बांध की ओर बढ़ी जा रही थीं।

मीशका कोर्याशोनोक ने दस्ताने से ढका हुआ अंगूठा नाक पर रख कर नाक सिनकी और कहा —
“ये हमारी स्लेजें शहर से लौटी हैं, उपहार लेकर।”

अब स्लेजें बर्फ़ से ढके हुए विल्लो वृक्षों द्वारा बनाई गई मेहराब के नीचे से गुज़रती हुई बांध को लांघ रही थीं। लड़कों को अब टूटती हुई बर्फ़ की कचकच, स्लेजों की पटरियों की रगड़ और घोड़ों की सांसें सुनाई दे रही थीं।

सदा की भांति स्लेजों के इस कारवां का नेतृत्व करता हुआ सबसे पहले अहाते में पहुंचा कारिन्दा निकीफ़ोर। वह कथई घोड़ी वेस्ता के साथ साथ चला आ रहा था। निकीफ़ोर मजबूत काठी का बुजुर्ग था। वह पाले से ठिठुरे और सिरों पर रस्सियों से बंधे नमदे के जूते पहने हल्के कदम रखता हुआ स्लेजों के पास से गुज़रा। उसके लम्बे और भेड़ की खाल के बने कोट के बटन खुले हुए थे, फ़र का कॉलर ऊपर को उठा था और उसकी फ़र की टोपी, दाढ़ी और भौंहों पर पाले की परतें जमी हुई थीं। पसीने के कारण वेस्ता घोड़ी का रंग गहरा नज़र आ रहा था, उसके अगल-बगल के पुट्टों में जोर की सांस आ-जा रही थी और वह खुद भाप के बादल में लिपटी हुई सी थी। निकीफ़ोर रुका, मुड़ा और पाले से खरखरी हुई, मगर ऊंची आवाज़ में उसने पिछली स्लेजों को हांकनेवालों से चिल्लाकर कहा —

“अरे सुनते हो, खत्तियों की ओर मुड़ जाओ। आखिरी स्लेज घर की ओर जाये!”

इस क्राफ़िले में कुल मिलाकर सोलह स्लेजें थीं। घोड़े तेज़ी से चले जा रहे थे, हवा में घोड़ों के पसीने की गंध फैली हुई थी, स्लेजों की लोहे की पटरियों की रगड़ सुनाई दे रही थी, चाबुक सटकारे जा रहे थे और क्राफ़िले के सभी ओर भाप का बादल छाया हुआ था।

जब आखिरी स्लेज बांध लांघकर निकट आई तो निकीता फ़ौरन ही यह न जान पाया कि उसमें क्या है। उसमें कोई बड़ी-सी चीज़ थी, अजीब-सी शक्ल की, हरे रंगवाली जिसपर

लम्बी-सी लाल धारी बनी हुई थी। निकीता का दिल जोर से धड़कने लगा। इस स्लेज पर, जिसके साथ एक और स्लेज जोड़ी गई थी, दो चप्पुओं और नुकीले सिरेवाली एक नाव रखी हुई थी। नाव चूंचर की आवाज करती हुई हिल-डुल रही थी। नाव की बगल में हरे रंग के दो चप्पू रखे थे और मस्तूल था जिसके सिरे पर तांबे का गोला लगा हुआ था।

तो यह था वह उपहार जिसकी ओर उस रहस्यपूर्ण पत्र में संकेत किया गया था।

क्रिसमस वृक्ष

पाले से ठिठुरा हुआ एक बड़ा-सा फ़र वृक्ष घसीटकर बैठक में लाया गया। लकड़ी के कास में उसे खड़ा करने के लिए पख़ोम देर तक कुल्हाड़ी से काट-छांट करता रहा। आख़िर वृक्ष खड़ा हो गया। वह इतना ऊंचा था कि उसका कोमल हरा सिरा छत को छूता हुआ झुक गया।

फ़र वृक्ष से ठंडक-सी आ रही थी। मगर कुछ देर बाद उसकी शाखाएं पाले की जकड़ से मुक्त होकर ऊपर को तन गईं, फैल गईं और घर भर में फ़र वृक्ष की गंध फैल गई। बालक रंग-बिरंगे कागज़ों की मालाएं और सजावटी चीज़ों से भरे हुए डिब्बे बैठक में ले आये, उन्होंने फ़र वृक्ष के क़रीब कुर्सियां रखीं और उसे सजाने लगे। मगर जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि चीज़ें नाकाफ़ी हैं। इसलिए उन्हें कागज़ चिपकाकर मिठाइयों के लिए और कटोरियां बनानी पड़ीं, सुनहरे अख़रोट बनाने और केकों और क्रीमिया के सेवों के गिर्द रुपहले तार लपेटने पड़े। बालकों ने इसी काम में सारी शाम लगा दी और आख़िर लील्या सिलवटें पड़ी हुई 'बो' वाला सिर कुहनियों पर रखकर सो गई।

क्रिसमस की शाम आई। फ़र वृक्ष की सजावट का काम पूरा हो गया। उसपर सुनहरे तार फैला दिये गये, रंग-बिरंगी कागज़ी मालाएं लटका दी गईं और छोटे-छोटे रंगीन शमादानों में मोमवत्तियां टिका दी गईं। जब सब कुछ तैयार हो गया तो मां ने कहा—

“बच्चो, अब यहां से भाग जाओ। ख़बरदार, जो शाम तक बैठक में आकर झांका भी।”

उस दिन उन्होंने देर से दोपहर का खाना खाया और सो भी जल्दी-जल्दी। बच्चों ने तो सिर्फ़ सेब की मिठाई खाई। घर में खासा हंगामा मचा हुआ था। लड़के इधर-उधर भाग रहे थे, हर किसी से पूछते फिर रहे थे कि शाम कब होगी? और तो और अर्कादी इवानोविच (जिन्होंने लम्बे छोरवाला कोट और कलफ़ से अकड़ी हुई क़मीज़ पहन ली थी) भी यह नहीं जानते थे कि वक्त कैसे काटें और सीटी बजाते हुए एक खिड़की से दूसरी खिड़की तक आ-जा रहे थे। लील्या अपनी मां के पास चली गई।

सूरज बहुत ही धीरे धीरे पृथ्वी की ओर सरक रहा था। वह गुलाबी हुआ, उसके ऊपर धुंधले-धुंधले से बादल बिखर गये और सफ़ेद बर्फ़ पर पड़ती हुई कुएं की बैंगनी परछाइयां लम्बी हो गईं। आख़िर मां ने लड़कों से कहा कि वे जाकर कपड़े बदल लें। निकीता के पलंग पर नीली रेशमी क़मीज़ रखी थी जिसके कॉलर, कफ़ों और घेरे पर लहरदार बारीक बखिया किया

हुआ था। वहीं झब्बों और फुंदनों वाली रेशमी पेटी और मखमली बिरजिस भी रखी हुई थी। वह कपड़े पहनकर मां के पास भाग गया। मां ने कंधे से उसके बालों में चीर निकाला, उसके कंधों को अपने हाथों में साधा, गौर से उसके चेहरे को देखा और फिर उसे महोगनी की लकड़ी में जड़े हुए बड़े-से दर्पण के सामने ले गई।

निकीता ने दर्पण में देखा एक बना-ठना और सलीके का लड़का। वह सोचने लगा —

“क्या यह मैं ही हूँ?”

“ओह, निकीता, निकीता,” उसका सिर चूमते हुए मां ने गहरी सांस ली। “काश तुम हमेशा ही ऐसे अच्छे लड़के बने रहते!”

निकीता दबे पांव बरामदे में गया। उसने सफ़ेद पोशाक पहने हुए एक लड़की को बड़ी शान से अपनी ओर आते देखा। वह मलमल के पेटीकोट पर बढ़िया-सा सफ़ेद फ़ाक पहने थी, उसके बालों में बड़ी-सी सफ़ेद ‘बो’ लगी हुई थी और उसके चेहरे के (जो पहचान में नहीं आ रहा था) दोनों ओर मोटे-मोटे छः केश-कुण्डल लटके हुए थे जो उसके पतले-पतले कंधों को छू रहे थे। निकीता के निकट आकर लील्या ने मुंह बनाते हुए कहा —

“तुमने क्या मुझे भूत समझा है? ऐसे डर क्यों गये हो?” इतना कहकर वह पढ़ाई के कमरे में गई और टांगें अपने नीचे दबाकर सोफ़े पर बैठ गई।

निकीता भी कमरे में जाकर सोफ़े पर बैठ गया, मगर उसके दूसरे सिरे पर। कमरे में अंगीठी जली हुई थी, लकड़ियां चिटकती थीं और उनसे जलते हुए कोयले झड़कर गिर रहे थे। चमड़े की आरामकुर्सियों, दीवार पर लगे हुए सुनहरे चौखटे और अलमारियों के बीच रखी हुई पुश्कन की मूर्ति पर फड़फड़ाती हुई लाल रोशनी पड़ रही थी।

लील्या निश्चल बैठी थी। अंगीठी के प्रकाश से जब तब उसके गाल और उसकी उठी हुई नाक चमक उठती, तो वह बहुत भली लगती। वीक्टर चमकते हुए बटनों वाली नीली और सुनहरे गोटे से सुसज्जित कॉलरवाली वर्दी पहने हुए आया। उसका कॉलर इतना तंग था कि उसे बातचीत करने में भी कठिनाई होती थी।

वीक्टर भी चुपचाप आरामकुर्सी पर बैठ गया। पास ही बैठक थी जहां मां और आन्ना अपोल्लोसोन्ना कुछ बंडल खोल रही थीं, फ़र्श पर कोई चीज़ खड़ी करती हुई खुसुर-फुसुर कर रही थीं। बच्चों को ये आवाजें सुनाई दे रही थीं। वीक्टर का मन हुआ कि चाबीवाले सूराख में से झांके, मगर उसे दूसरी ओर से कागज़ लगाकर बन्द कर दिया गया था।

कुछ देर बाद बरामदे का दरवाजा जोर से बन्द हुआ, उन्हें बहुत-सी आवाजें और छोटे-छोटे पैरों की आहटें सुनाई दीं। गांव के बालक आये थे। चाहिए तो यह था कि वह भागकर उनके पास जाता, मगर निकीता तो जैसे जहां का तहां जमकर ही रह गया था। खिड़की पर पाले से बने हुए बेल-बूटों में से तन सहलाती हुई नीली-नीली रोशनी छन रही थी। लील्या ने बारीक और धीमी-सी आवाज में कहा —

“सितारा निकल आया है।”

इसी समय पढ़ाई के कमरे के दरवाजे चौपट खोल दिये गये। बच्चे उछलकर सोफ़े से खड़े हुए। बैठक में फ़र्श से लेकर छत तक फैला हुआ किसमस वृक्ष ढेरों ढेर मोमबत्तियों से जगमगा रहा था। वह तो जैसे अग्नि-वृक्ष लग रहा था जिसमें सोना, चिनगारियां और प्रकाश की लम्बी-लम्बी किरणें चमक रही थीं। उससे आनेवाला प्रकाश घना और सुहाना था और शंकुधर, मोम, नारंगियों और शहदवाले केकों की गन्ध से बोझल था।

बालक निश्चल और स्तम्भित खड़े थे। बैठक के दूसरे दरवाजे भी खोल दिये गये और गांव के बालक अन्दर आये। वे एक-दूसरे के निकट होते हुए दीवार से सटते गये। उन्होंने अपने नमदे के बूटे उतार दिये थे। वे मोटी ऊनी जुराबें, लाल, गुलाबी और पीली कमीजें पहने थे और पीले, लाल तथा सफ़ेद रुमाल बांधे थे।

मां ने पियानो पर पोलका की धुन बजानी शुरू की। धुन बजाते हुए उसने मुस्कराकर वृक्ष की ओर देखा और गाने लगी—

टांगें तो लम्बी-लम्बी हैं सारस की।

ढूंढ़ न पाई राह मगर अपने घर की...

निकीता ने लील्या की ओर अपना हाथ बढ़ाया। लील्या ने उसके हाथ में अपना हाथ रख दिया, मगर वृक्ष की ओर देखती रही। पूरे का पूरा वृक्ष उसकी नीली आंखों में प्रतिबिम्बित हो रहा था, हर आंख में एक वृक्ष। बच्चे निश्चल खड़े थे।

अर्कादी इवानोविच भाग कर लड़के-लड़कियों की भीड़ की ओर गये, उनके हाथ थामे और लगे किसमस वृक्ष के गिर्द तेजी से उछलने-कूदने। उनके कोट के छोर लहराने लगे। भागते-भागते उन्होंने और दो बच्चों के हाथ थाम लिये, फिर निकीता, लील्या और वीक्टर को भी खींचा और आखिर सभी बालक एक-दूसरे का हाथ पकड़कर किसमस वृक्ष के गिर्द नाचने लगे।

गांव के बालक गा रहे थे—

छिपा रहा हूं मैं सोना, मैं सोना

छिपा रहा हूं मैं चांदी, मैं चांदी...

निकीता ने किसमस वृक्ष से एक पटाखा तोड़कर ज़मीन पर दे मारा। उसके अन्दर से एक ऊंची नोकदार टोपी निकली जिसके सिरे पर सितारा लगा हुआ था। कुछ क्षण बाद सभी जगह पटाख-पटाख पटाखे फटने लगे, बारूद की गंध फैल गई और पतंगोंवाले पतले कागज़ की टोपियां सरसराने लगीं।

लील्या को जेबोंवाला कागज़ी पेशबन्द मिला। उसने उसे पहन लिया। उसके गाल सेबों की तरह लाल थे और उसके होंठों पर चाकलेट लगा हुआ था। जब भी वह किसमस वृक्ष के नीचे एक बड़ी सी टोकरी पर रखी हुई बृहदाकार गुड़िया को उसके पूरे साज-सामान के साथ देखती थी, उसे हंसी आ जाती थी।

वृक्ष के नीचे ही रंग-बिरंगे रुमालों में लिपटे हुए लिफाफे रखे थे जिनमें लड़कों-लड़कियों के लिए उपहार थे। वीक्टर को तोपों और तम्बुओं के साथ पूरी रेजीमेन्ट मिली और निकीता को असली चमड़े का जीन, लगामें और चाबुक मिला।

अब अखरोटों के तोड़े जाने की आवाज सुनाई देने लगी, उनके छिलके पैरों के नीचे दब कर टूटने लगे। बालक अपने उपहारों को खोलते हुए नाकों से सूं-सूं कर रहे थे।

मां फिर से पियानो बजाने लगी, बालक क्रिसमस वृक्ष के गिर्द नाचने-गाने लगे। मोमबत्तियों की रोशनी अब धीमी हो गई थी। अर्कादी इवानोविच ने उछलते-कूदते हुए उन्हें बुझा दिया। क्रिसमस वृक्ष धुंधला-सा हो गया। मां ने पियानो बजाना बन्द कर दिया और बालकों से चाय पीने के लिए खाने के कमरे में चलने को कहा।

मगर अर्कादी इवानोविच ने यह मौका भी हाथ से न जाने दिया। उन्होंने बालकों की एक लम्बी रेलगाड़ी-सी बना ली। खुद इंजन की तरह सबसे आगे और पचीस बालक-बालिकाएं उनके पीछे खड़े हो गये। फिर वे बरामदे का लम्बा-सा चक्कर लगाते और भागते हुए खाने के कमरे की ओर चल दिये।

इयोढ़ी में पहुंचकर लील्या बालकों की रेलगाड़ी से अलग हो गई। वह मुस्कराती आंखों से निकीता को देखती हुई दम लेने लगी। वे दोनों उन खूंटियों के निकट खड़े थे जहां फर के कोट लटके हुए थे।

“किसलिए हंस रहे हो तुम?” लील्या ने पूछा।

“मैं नहीं, यह तो तुम हंस रही हो,” निकीता ने जवाब दिया।

“तुम मुझे घूर क्यों रहे हो?”

शर्म से निकीता का मुंह लाल हो गया। पर साथ ही वह लील्या के और निकट हो गया और खुद भी कुछ न समझ पाते हुए वह उसकी ओर झुका और उसने उसे चूम लिया। लील्या ने भी जल्दी-जल्दी ये शब्द कह डाले—

“तुम भले लड़के हो। मैंने इसीलिए तुमसे अब तक यह नहीं कहा था कि किसी और को इसका पता न चल जाये। यह राज है!”

वह इतना कहकर मुड़ी और खाने के कमरे की ओर भाग गई।

चाय के बाद अर्कादी इवानोविच ने बुझारतें बूझने और दण्ड देने का खेल शुरू किया। मगर बालक थक गये थे, उन्होंने खूब पेटभर कर खाया था और इसलिए खेल उनकी समझ में नहीं आ रहा था। खेल के दौरान ही बुन्दनियोंवाली कमीज पहने हुए एक छोटा-सा लड़का ऊंघने लगा, कुर्सी से नीचे जा गिरा और गला फाड़कर रोने लगा।

मां ने कहा कि क्रिसमस त्योहार की पार्टी अब खत्म होती है। बालक बरामदे में गये जहां दीवार के साथ उनके घुटनों तक के नमदे के जूते और भेड़ की खाल के कोट रखे हुए थे। उन्होंने कोट और जूते पहने तथा पाले से ठिठुरी हुई रात में सभी एकसाथ बाहर आ गये।

निकीता बालकों को छोड़ने के लिए बांध तक गया। जब वह अकेला घर लौटा तो आकाश के एक पीले और रंग-बिरंगे कोने में बहुत ऊंचाई पर चांद चमक रहा था। बांध पर और बाग में खड़े हुए वृक्ष बहुत बृहदाकार नजर आ रहे थे और सफ़ेद सफ़ेद थे। चांदनी में वे और भी अधिक लम्बे मालूम हो रहे थे। निकीता के दायाँ ओर पाले का सफ़ेद रेगिस्तान था और वह अभेद्य अन्धेरे में दूर-दूर तक फैला हुआ था। बड़े सिर और लम्बी-लम्बी टांगोंवाली एक परछाई निकीता के साथ-साथ चल रही थी।

निकीता को ऐसे प्रतीत हुआ मानो वह सपने में किसी परी-देश में चला जा रहा है। केवल किसी परी-देश में ही ऐसी अजीब-सी और साथ ही ऐसी उल्लासपूर्ण अनुभूति होती है।

वीक्टर के साथ बुरी हुई

इन्हीं दिनों वीक्टर की मीशका कोर्याशोनोक के साथ गहरी छनने लगी थी। एक दिन वह उसके साथ निचले तालाब पर "बिल्लियां" जलाने के लिए गया। उनमें से एक "बिल्ली" इतनी बड़ी थी कि बर्फ़ में से उसकी लपटें आदमी के क्रद से भी ऊंची उठीं। तब उन्होंने तालाब से आगे खड्ड में एक किला बनाया—बर्फ़ की मीनार और उसके गिर्द झरोखों और फाटकों वाली दीवार बनाई। इसके बाद वीक्टर ने कोंचान टोली के लड़कों को यह ख़त लिखा—

"ए कोंचान टोलीवालो, भेंगी आंखों और चूहों को नाल लगानेवाले लुहारो, हम तुम्हारी वह पिटाई करेंगे कि उम्रभर याद करोगे। हम अपने किले में तुम्हारा इन्तज़ार करेंगे।

वीक्टर बावकिन, किले का कमांडर,
हाई स्कूल की २ री कक्षा का छात्र।"

इस पत्र को एक डंडे पर कील ठोक कर लगा दिया गया। मीशका कोर्याशोनोक इस डंडे को लेकर गांव में गया और उसने वह अर्तामोन के झोंपड़े की बगल में बर्फ़ के ढेर में गाड़ दिया। स्योम्का, ल्योन्का और छोटा अर्तामोन, अल्योशका और काले कानोंवाला वान्का तथा सावोस्का का भतीजा पेत्रूशका डंडे की बगल में टीले पर जा खड़े हुए, कोंचान टोली के लड़कों को देर तक धमकियां देते और उनपर बर्फ़ के गोले फेंकते रहे। इसके बाद वे मीशका के साथ आकर किले में बैठ गये।

वीक्टर ने उन्हें बर्फ़ के छोटे-बड़े गोले बनाने का आदेश दिया। ये गोले उन्होंने किले के अन्दर दीवार के साथ जमा कर दिये, मीनार पर सरकंडों के साथ एक डंडा खड़ा कर दिया और दुश्मन का इन्तज़ार करने लगे।

निकीता यहां आया, उसने किलेबन्दी देखी और जेब में हाथ डालकर बोला—

“कोई नहीं आयेगा, तुम्हारा किला किसी काम का नहीं, मैं तुम लोगों के साथ नहीं खेलूंगा, घर जा रहा हूँ।”

“छोकरी से खेलोगे,” वीक्टर ने दीवार के पास खड़े होकर कहा। “छोकरियों का दीवाना!”

अर्तामोन के लड़के ठठाकर हंसे, काले कानोंवाले वान्का ने मुंह में उंगलियां डालकर सीटी बजाई।

निकीता ने कहा—

“अगर मैं चाहूँ तो तुम सभी को किले से निकाल बाहर करूँ। मगर तुम लोग इस लायक नहीं हो कि तुम्हारी खातिर मैं अपने हाथों को तकलीफ दूँ।” इतना कह कर उसने वीक्टर को जबान दिखाई और तालाब लांघता हुआ घर की ओर चला गया।

निकीता पर पीछे से बर्फ के गोले फेंके गये, मगर उसने तो मुड़कर भी नहीं देखा।

किले में बैठे हुए लड़कों को बहुत देर तक इन्तजार नहीं करना पड़ा। गांव की ओर से जमे हुए पानी पर से गुजर कर कोंचान टोली के लड़के आये। घुटनों तक बर्फ से लथपथ वे सीधे किले के करीब पहुंचे। कोई पन्द्रह होंगे वे।

वीक्टर ने डींग हांकी कि वह उन सबका भुरकस बना देगा और उसने पाले से लाल हुई अपनी नाक से सूं-सूं की। धबराहट से उसकी पुतलियां इधर-उधर डोलने लगीं। कोंचान टोली के लड़के किले के फाटक पर रुक गये, उनमें से कुछेक बर्फ पर बैठ गये। उनके साथ अपनी मां की शॉल लपेटे हुए छोटा-सा लड़का भी था। स्त्योप्का कार्नाऊशिकन कोंचान टोली का अगुआ था। उसने किले को गौर से देखा और दीवार के पास जा खड़ा हुआ।

“चमकते हुए बटनोंवाला यह लड़का हमारे हवाले कर दो,” उसने कहा। “हम बर्फ में ज़रा उसके कान मलेंगे।”

वीक्टर ने चिन्तित होकर नाक सुड़की। मीशका फुसफुसाया—“उस पर बर्फ का बड़ा-सा ढेला दे मारो। दे मारो भी!” वीक्टर ने बर्फ का ढेला उठाया और फेंका, मगर वह निशाने पर ठीक नहीं बैठा। स्त्योप्का अपने लड़कों के बीच लौट गया। कोंचान टोली के लड़के उठकर खड़े हुए और बर्फ के गोले बनाने लगे। इन पर किले की ओर से तड़ातड़ बर्फ के गोले पड़ने लगे। अर्तामोन के बेटे तो खास तौर पर बहुत अच्छे निशानेबाज थे। मां की शॉल लपेटे हुए लड़के को तो उन्होंने फौरन चित कर दिया। कोंचान टोली के लड़कों ने जवाबी कार्रवाई शुरू की। दोनों ओर से बर्फ के ढेरों गोले बरसने लगे। मीनार पर खड़ा हुआ डंडा नीचे गिर गया।

काले कानोंवाला वान्का दीवार से गिर पड़ा और उसने कोंचान टोली के लड़कों के सामने हार मान ली। अचानक वीक्टर की टोपी उतरकर दूर जा गिरी और बर्फ का एक और गोला उसके मुंह पर आकर लगा। कोंचान टोली के लड़कों ने शोर मचाते, हो-हल्ला करते और सीटियां बजाते हुए किले पर धावा बोल दिया...

किले की दीवार टूट गई और रक्षक सरकंडों को लांघते जमे हुए तालाब के पार भाग गये।

दीवालघड़ी के फूलदान में क्या था

निकीता खुद भी यह नहीं जानता था कि लड़कों के साथ खेलना उसे क्यों अच्छा नहीं लगा था। वह घर लौटा, उसने अपना टोप और कोट उतारा। वह जब कमरों को लांघ रहा था तो उसने लील्या को अपनी मां से यह कहते सुना —

“मां, मुझे साफ़ कपड़े का एक टुकड़ा तो दीजिये। मेरी नई गुड़िया वालेन्तीना की टांग पर चोट लग गई है, मुझे उसकी तन्दुरुस्ती के बारे में फ़िक्र हो रही है।”

निकीता जहां का तहां खड़ा रह गया। वह उन दिनों लगातार अनुभव होनेवाली खुशी को फिर से अनुभव कर रहा था। इतनी अधिक थी यह खुशी कि उसे अपने अन्दर कोई छोटा-सा बाजा हिलता-डुलता और उससे कोई प्यारी और लुभावनी-सी धुन निकलती प्रतीत हुई।

निकीता पढ़ाई के कमरे में गया और सोफ़े पर उसी जगह जा बैठा जहां दो दिन पहले लील्या बैठी थी। उसने अपनी आंखें सिकोड़ीं और पाले द्वारा खिड़कियों के शीशों पर बनाये गये नमूनों को गौर से देखने लगा। परी-देश के नाजुक और अद्भुत नमूनों जैसे थे ये। उस परी-देश के, जहां से उसे मूक जादुई संगीत-लहरियां सुनाई दे रही थीं। वहां शाखाएं थीं, पत्ते थे, वृक्ष थे और जानवरों तथा इन्सानों की अजीबोगरीब आकृतियां थीं। निकीता इन नमूनों को देख रहा था और उसे ऐसे महसूस हो रहा था मानो शब्द आपस में जुड़ते जाते थे और कोई गीत गाते थे। इन गाते हुए अद्भुत शब्दों से उसे अपने वालों में झनझनाहट-सी अनुभव हुई।

निकीता धीरे से सोफ़े पर से उठा, पिता की मेज से उसने कागज़ का एक टुकड़ा उठाया और बड़े-बड़े अक्षरों में कविता की ये पंक्तियां लिखनी शुरू कीं —

ओह जंगल, मेरे जंगल,
तुम जादू की दुनिया हो, मेरे जंगल,
तुम में तरह-तरह के पक्षी...
तरह-तरह के जीव-जन्तु हैं...
खुशदिल जंगली मानव भी...
मुझको तुमसे बहुत प्यार है
बहुत प्यार मुझको तुमसे, रे जंगल...

जंगल के बारे में और अधिक पंक्तियां रचना उसे कठिन प्रतीत हुआ। निकीता ने कलम का सिरा कुतरा और छत की ओर ताका। हां, उसने जो शब्द लिखे थे वे वही नहीं थे जो कुछ क्षण पहले अपने आप गा उठे थे और जो अभिव्यक्ति पाने के लिए बेचैन थे।

निकीता ने कविता पढ़ी। फिर भी वह उसे रुची। उसने कागज़ के टुकड़े को आठ तहें दीं और उसे जेब में डालकर खाने के कमरे की ओर चल दिया जहां लील्या खिड़की के पास बैठी हुई सिलाई कर रही थी। जेब में रखे हुए कागज़ को वह जिस हाथ से थामे था, वह

पसीने से तर हो गया था, मगर फिर भी निकीता अपनी कविता लील्या को दिखाने का इरादा न बना पाया।

झुटपुटा होने पर वीक्टर घर लौटा, ठण्ड से अकड़ा हुआ और सूजी हुई नाक के साथ। आन्ना अपोल्लोसोव्ना ने परेशानी से हाथ बजाते हुए कहा—

“फिर किसी ने तुम्हारी नाक तोड़ डाली! किससे लड़-भिड़ कर आये हो? फौरन जवाब दो मुझे।”

“किसी से भी लड़ा-भिड़ा नहीं। मेरी नाक तो अपने आप ही सूज गई है,” वीक्टर ने उदासी से उत्तर दिया और अपने कमरे में जाकर पलंग पर लेट रहा।

निकीता भी कमरे में आया और अंगीठी के पास खड़ा हो गया। हरे हरे आकाश में कुछ सितारे झिलमिला उठे, बिल्कुल इस तरह मानो सूई मारकर उन्हें आकाश की चादर में से बाहर निकाल लिया गया हो। निकीता ने पूछा—

“चाहो तो तुम्हें एक कविता सुनाऊँ, जंगल के बारे में?”

वीक्टर ने कंधे झटके और पलंग की टेक पर अपने पैर रख कर बोला—

“तुम इस स्त्योप्का कार्नाऊशिकन को कह देना कि वह फिर कभी मेरे सामने न आये।”

“जानते हो,” निकीता ने कहा, “इस कविता में एक जंगल का वर्णन किया गया है। यह जंगल ऐसा है जिसे देखना मुमकिन नहीं, मगर इसके बारे में जानते सभी हैं... अगर तुम्हारा दिल परेशान है तो तुम यह कविता पढ़ लो, तुम्हारी सारी परेशानी दूर हो जायेगी। या फिर कभी-कभी ऐसा भी होता है कि सपने में कुछ नजर आता है, कुछ बहुत ही अद्भुत। यह समझना मुमकिन नहीं होता कि वह क्या है, मगर होता है बहुत ही अद्भुत। पर जब आंख खुलती है तो किसी तरह भी याद नहीं आता कि वह क्या था... समझे न?”

“नहीं, कुछ नहीं समझा,” वीक्टर ने उत्तर दिया। “और तुम्हारी कविता भी मैं नहीं सुनना चाहता।”

निकीता ने गहरी सांस ली, कुछ क्षण अंगीठी के पास खड़ा रहा और फिर कमरे से बाहर चला गया। अंगीठी में जल रही आग की रोशनी से बड़ी ड्योढ़ी रोशन थी। वहीं अंगीठी के सामने भेड़िये की खाल से ढके हुए सन्दूक पर लील्या बैठी थी और चिंगारियों के खेल का मजा ले रही थी।

निकीता उसके करीब सन्दूक पर बैठ गया। ड्योढ़ी में अंगीठी की गरमाहट और खूटी पर लटके हुए फर कोटों की गन्ध फैली थी। बहुत बड़ी अलमारी की दराजों में रखी हुई पुरानी चीजों की गन्ध भी आ रही थी, मन को उदास करनेवाली।

“आओ, कुछ बातचीत करें,” लील्या ने सोचते हुए कहा। “मुझे कोई दिलचस्प बात सुनाओ!”

“कहो तो तुम्हें वह सपना सुनाऊँ जो मैंने कुछ ही दिन पहले देखा था?”

“हां, हां, सुनाओ! जरूर सुनाओ!”



निकीता ने बिल्ले और सजीव हो उठनेवाले चित्रों के बारे में बताना शुरू किया। उसने बताया कि कैसे वह उड़ता रहा और छत के नीचे उड़ते हुए उसने क्या कुछ देखा।

घुटनों पर उस गुड़िया को टिकाये हुए जिसकी टांग पर पट्टी बांध दी गई थी, लील्या बहुत ध्यान से उसकी बातें सुन रही थी।

निकीता जब सपने के बारे में सुना चुका तो लील्या उसकी ओर मुड़ी। वह डर और जिज्ञासा से आंखें फाड़ फाड़ कर उसे देख रही थी। उसने फुसफुसाकर पूछा—

“फूलदान में क्या था?”

“मालूम नहीं।”

“उसमें जरूर कोई दिलचस्प चीज होगी।”

“मगर मैंने तो यह सपने में देखा था।”

“फिर भी तुम्हें उसे देखना चाहिए था। तुम लड़के हो, कुछ भी नहीं समझते। यह बताओ, क्या तुम्हारे घर में सचमुच ऐसा फूलदान है?”

“उस तरह की घड़ी तो हमारे घर में है, मगर फूलदान का मुझे कुछ ख्याल नहीं। घड़ी तो दादा के पढ़ाई के कमरे में है, खराब हुई पड़ी है।”

“आओ, चलकर देखें।”

“वहां अन्धेरा है।”

“हम क्रिसमस वृक्ष से लालटेन उतार लेंगे। तुम जाकर लालटेन ले आओ। कृपया जाओ।”

निकीता भागकर बैठक में गया, उसने क्रिसमस वृक्ष से रंगीन अभ्रक की खिड़कियोंवाली लालटेन उतारी, उसे जलाया और हॉल में वापिस चला गया।

लील्या ने एक बड़ी-सी ऊनी शॉल कंधों पर डाल ली। बालक दबे पांव बरामदे में आये और चुपके-चुपके गर्मी के कमरों में जा पहुंचे। ऊंची छतवाले अन्धेरे दीवानखाने की खिड़कियों पर पाले की मोटी परत जमी हुई थी। चांदनी में उन पर शाखाओं की भारी और काली परछाइयां पड़ रही थीं। वहां ठण्ड थी और सड़े हुए सेबों की गन्ध फैली हुई थी। बगल के कमरे में खुलनेवाले बलूत के दरवाजे अघबुले थे।

“घड़ी वहां अन्दर है क्या?” लील्या ने पूछा।

“नहीं, और आगे, तीसरे कमरे में।”

“निकीता, तुम्हें किसी चीज से भी डर नहीं लगता?”

निकीता ने दरवाजे को खींचा। वह दर्दोली आवाज में चरमराया और यह आवाज सभी खाली कमरों में धीरे से गूंज गई। लील्या ने निकीता की बांह थाम ली। लालटेन हिल गई और उसकी लाल और नीली किरणें दीवारों पर हिलने-डुलने लगीं।

बालक पंजों के बल अगले कमरे में पहुंचे। यहां खिड़कियों में से छन रही चांदनी लकड़ी के फर्श पर नीले चौके बनाती हुई लेटी थी। दीवार के साथ धारीदार आरामकुर्सियां रखी थीं

और कोने में टेढ़ी-मेढ़ी टांगोंवाला सोफ़ा टिका था। निकीता का सिर घूमने लगा — बिल्कुल ऐसा ही तो कमरा उसने सपने में देखा था।

“वे हमारी ओर देख रहे हैं,” बूढ़े और बूढ़िया के दीवार पर लगे चित्रों की ओर संकेत करते हुए लील्या फुसफुसाई।

बालक भागकर कमरे में गये और उन्होंने दूसरा दरवाज़ा भी खोल दिया। कमरे में चांदनी खिली हुई थी। अलमारियों के शीशे और उनके अंदर रखी हुई किताबों की सुनहरी जिल्दें चांदनी में खूब चमक रही थीं। अंगीठी के ऊपर घुड़सवार की पोशाक पहने और चांदनी में नहाई हुई महिला की तस्वीर रहस्यपूर्ण ढंग से मुस्कुरा रही थी।

“यह कौन है?” निकीता के निकट होते हुए लील्या ने पूछा।

“यह वही है,” निकीता ने फुसफुसाकर जवाब दिया।

लील्या ने सिर हिलाकर हामी भरी और कमरे में नज़र दौड़ाते हुए अचानक चिल्ला उठी —

“फूलदान! निकीता, वह रहा फूलदान!”

कमरे के सिरे पर महोगनी के केस में एक बड़ी-सी घड़ी लटकी हुई थी, उसका पेण्डुलम गतिहीन था। घड़ी के ऊपर, लकड़ी के दो कंगूरों के बीच बरकर के सिर से सुसज्जित कांसे का एक फूलदान था। न जाने क्यों, मगर उसकी ओर निकीता का पहले कभी ध्यान नहीं गया था। हां, अब उसे पहचानने में देर न लगी। यह वही फूलदान था जो उसने सपने में देखा था।

उसने घड़ी के साथ एक कुर्सी टिकाई, उसपर चढ़ा और पंजों के बल खड़े होकर फूलदान में अपना हाथ डाला। उसके तल में उसकी उंगलियां धूल से सन गईं और उसे किसी सख्त-सी चीज़ की अनुभूति हुई।

“मिल गई!” उस चीज़ को मुट्ठी में कसकर बन्द करने और फर्श पर कूदते हुए निकीता ने कहा।

इसी समय अलमारियों के पीछे से घुर-घुर की आवाज़ हुई, दो बैंगनी आंखें चमक उठीं और यहां चूहों का शिकार करने के लिए आया हुआ बिल्ला, वासीली वासील्येविच, उछलकर सामने आ गया।

लील्या हाथ झटकती हुई भागी और निकीता उसके पीछे-पीछे। वह बेहद डर गया था। उसे ऐसी अनुभूति हुई मानो किसी ने उसके बालों को छुआ हो। बिल्ला बालकों से आगे निकल गया और आहट किये बिना तथा अपनी पूंछ झुकाये हुए चांदनी से नहाये कमरों को लांघता चला गया।

बालक भागकर ड्योढ़ी में पहुंचे और अंगीठी के सामने फिर से सन्दूक पर जा बैठे। डर के मारे मुश्किल से ही उनकी सांस आ जा रही थी।

“हूं, तो फूलदान में से क्या चीज़ मिली है?” निकीता की आंखों में झांकते हुए लील्या ने पूछा।

निकीता ने मुट्ठी खोली। उसकी हथेली में नीलम जड़ी एक पतली-सी अंगूठी थी। लील्या अवाक-सी रह गयी, उसने हाथ बजाये।

“अंगूठी !”

“यह जादुई अंगूठी है,” निकीता ने कहा।

“सुनो तो, मगर हम इसका क्या करेंगे?”

निकीता ने माथे पर बल डाले, लील्या का हाथ पकड़ा और उसकी तर्जनी में अंगूठी पहनाने लगा।

“नहीं नहीं, मुझे क्यों पहना रहे हो?” लील्या ने पूछा। उसने हीरे की ओर देखा, मुस्कराई, गहरी सांस ली और निकीता के गले में बाहें डालकर उसे चूम लिया।

निकीता ऐसे लाल हो गया कि उसे अंगूठी से दूर हटना पड़ा। उसने अपना पूरा साहस बटोरकर कहा—

“यह भी तुम्हारे लिए है,” इतना कहकर उसने अपनी जेब से आठ बार तह किया हुआ कागज का वह टुकड़ा निकाला जिसपर कविता लिखी हुई थी और लील्या को दे दिया।

लील्या ने वह कागज खोला, होंठ हिलाते हुए उसे पढ़ा और फिर सोचते हुए कहा—

“धन्यवाद, निकीता। तुम्हारी यह कविता मुझे बहुत अच्छी लगी है!”

आखिरी शाम

शाम की चाय के समय मां ने कई बार आन्ना अपोल्लोसोव्ना की आंखों में झांका और कंधे झटके। अर्कादी इवानोविच अपने गिलास को एकटक देख रहे थे। उनका चेहरा भावशून्य था। उसे देखकर ऐसी अनुभूति होती थी कि अगर इस व्यक्ति की हत्या भी कर दी जाये, तो भी यह उफ़ नहीं करेगा। आन्ना अपोल्लोसोव्ना ने गर्मागर्म मीठी पावरोटियों के साथ क्रीमवाली चाय का पांचवां प्याला खत्म किया, अपने सामने से प्याले, प्लेटें और पावरोटियों के कण हटाकर मेज पर कुछ जगह साफ़ की और अपनी बड़ी-सी हथेली वहां टिका कर भारी-भरकम आवाज़ में बोली—

“नहीं, नहीं, हरगिज़ नहीं, अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना। मैंने जो कहा है वही होगा। उसे पत्थर की लकीर समझो। थोड़े दिन तक ही मेहमान रहने में ज्यादा मज़ा है। हां, तो बच्चो,” वह मुड़ी और उसने अपनी तर्जनी वीक्टर की पीठ में घुसेड़ी ताकि वह कूबड़ निकाल कर न बैठे, “कल सोमवार है। जाहिर है कि तुम्हें तो उसका ध्यान नहीं होगा। चाय खत्म करो और फ़ौरन जाकर सो रहो। कल पौ फटते ही हम यहां से खाना हो जायेंगे।”

वीक्टर ने चुपचाप अपने होंठ आगे को फैला लिये, नाक से भी आगे। लील्या ने झटपट आंखें झुका लीं और चाय के प्याले पर झुक गई। निकीता की आंखों में अन्धेरा-सा छा गया और उसे ऐसे प्रतीत हुआ मानो लैम्प के शोले से चिंगारियां निकल रही हों। उसने मुंह फेर लिया और बिल्ले वासीली वासील्येविच की ओर देखने लगा।

बिल्ला धुले हुए साफ-सुथरे फर्श पर बैठा पिस्तौल की तरह तानी हुई अपनी पिछली टांग को चाट रहा था। उसकी आंखें सिकुड़ी हुई थीं। बिल्ला न उदास था न खुश। उसे कहीं भी जाने की जल्दी नहीं थी। “कल तुम इन्सानों का काम-काज का दिन शुरू हो जायेगा,” उसने सोचा, “तुम फिर से हिसाब के सवाल हल करोगे और इमला लिखोगे। मगर मैंने तो न छुट्टियां मनाई हैं, न कविताएं रची हैं, न किसी लड़की को चूमा है। मेरा तो कल भी हर दिन जैसा ही रहेगा।”

वीक्टर और लील्या ने चाय खत्म की। अपनी मां की घनी भौंहों की ओर देखते हुए, जो तनने लगी थीं, उन्होंने शुभरात्रि कहा और निकीता के साथ कमरे से बाहर चले गये।

“वीक्टर!” आन्ना अपोल्लोसोव्ना ने पुकार कर कहा।

“क्या है मां?”

“तुम चल कैसे रहे हो?”

“कैसे चल रहा हूं मां?”

“जैसे कोई तुम्हें रस्सी से बांध कर खींचे लिये जा रहा हो... सीधे चलो। कमरे में चक्कर मत काटो, वह देखो, वह रहा दरवाजा। तनकर चलो। भगवान जाने, तुम अपनी ज़िन्दगी में कुछ कर-धर भी पाओगे या नहीं!”

बालक बाहर चले गये। गर्म और धुंधली-धुंधली ड्योढ़ी में पहुंचकर, जहां से लड़कों को दायीं ओर जाना था, निकीता लील्या के सामने खड़ा हो गया और अपने होंठ काटते हुए बोला—

“तुम गर्मियों में हमारे यहां आओगी?”

“यह तो मेरी मां ही बता सकती है,” नज़र झुकाये हुए ही लील्या ने अपनी पतली-सी आवाज़ में जवाब दिया।

“मुझे खत लिखोगी?”

“हां, लिखूंगी।”

“अच्छा, तो नमस्ते।”

“नमस्ते, निकीता।”

लील्या ने सिर का रिबन झटका और अपनी उंगलियों के सिरे निकीता के हाथ से मिलाकर अपने कमरे की ओर चल दी। वह तनकर और सधे-सधाये कदम रखती हुई चलती गई। उसने तो मुड़कर भी नहीं देखा। उसे जाते देखकर यह भांपना कठिन था कि उस समय वह क्या सोच रही थी। “बहुत ही घुन्नी लड़की है,” आन्ना अपोल्लोसोव्ना अक्सर कहती थी।

वीक्टर एक टोकरी में अपनी किताबें और खिलौने समेटते, तस्वीरों को उखाड़कर छोटे-से डिब्बे में बन्द करते और मेज़ के नीचे अपने कलमतराश चाकू को दूँढ़ते हुए कुछ बड़बड़ाता रहा। इस बीच निकीता मौन साधे रहा। उसने झटपट कपड़े उतारे, बिस्तर में घुसकर कम्बल ओढ़ लिया और ऐसे जाहिर किया मानो सो रहा हो।

निकीता को ऐसे लगा कि दुनिया में प्रलय होनेवाली है। जब उसकी आंखों में नींद घिरती आ रही थी तो उसकी बन्द आंखों के सामने बालों में लगी हुई एक बहुत बड़ी 'बो', मानो दीवार पर परछाई बनकर झलकी। यह वह 'बो' थी जिसे वह जिन्दगी भर नहीं भूल पायेगा। नींद में उसे कुछ आवाजें सुनाई दीं, कोई उसके बिस्तर के करीब आया और आवाजें फिर से दूर हो गईं। सपने में उसे पंजों जैसे बड़े-बड़े गर्म-गर्म पत्ते, विराट वृक्ष और घने जंगल में आसानी से नज़र आ जानेवाला लाल-सा रास्ता दिखाई दिया। प्रकाश के कारण लाल लाल हुआ यह अजीब-सा जंगल उसे बहुत ही सुहाना लगा। किसी ऐसी उदासी के कारण जिससे वह सर्वथा अनजान था, उसका मन रोने को हो रहा था। अचानक पत्तों के बीच से सुनहरा चश्मा लगाये हुए एक रेड इंडियन सामने आया और गरजते हुए बोला—“अरे, तुम अभी तक सो रहे हो!”

निकीता ने आंखें खोलीं। सुबह का सुहाना प्रकाश उसके चेहरे को चूम रहा था। अर्कादी इवानोविच सामने खड़े पेंसिल का सिरा अपनी नाक पर मारते हुए कह रहे थे—

“उठो, उठो, रे शैतान!”

जुदाई

जनवरी के अन्त में निकीता के पिता वासीली निकीत्येविच का यह खत आया—

“...मैं बहुत परेशान हूँ। प्यारी साशा, लगता है कि विरासत का झंझट अभी बहुत समय तक मुझे घर नहीं लौटने देगा। सम्भवतः मुझे दौड़-धूप करने के लिए मास्को जाना होगा। खैर, जो भी हो, लेण्ट के मौके पर मैं जरूर तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा...”

खत पढ़कर मां बहुत उदास हो गई और शाम को उसने वह खत अर्कादी इवानोविच को दिखाया।

“भाड़ में जाये यह विरासत का मामला, अगर इसके कारण इतनी परेशानियों से दो-चार होना जरूरी है। जाड़े भर एक-दूसरे से जुदा रहे हैं। मुझे तो अब ऐसे लगता है कि निकीता अपने बाप को भूलने लगा है।”

मां दूसरी ओर मुंह करके अंधेरी और पाले से जमी हुई खिड़की को घूरने लगी।

बाहर अन्धेरा था और इतने जोर का पाला पड़ रहा था कि बगीचे में वृक्ष चिटक रहे थे, अटारी की शहतीरियां इतने जोर से चरमरा उठती थीं कि सारा घर हिलने लगता था। अगली सुबह उन्हें बर्फ पर मरी हुई गौरैयां पड़ी मिलेंगी। मां ने रुमाल से धीरे से आंखें पोंछीं।

“हां, जुदाई, जुदाई,” अर्कादी इवानोविच बड़बड़ाये। जाहिर था कि उन्हें अपनी जुदाई की कसक अनुभव हो रही थी। उनका हाथ जेब में पड़े हुए खत को टटोलने लगा।

निकीता इस समय दक्षिणी अमरीका का नक्शा बना रहा था। उस दिन मां ने उसे डांटा-डपटा था। वह उत्तेजित थी और उसने निकीता के दिमाग में यह बात डालने की कोशिश की

थी कि वह छुट्टियों के दौरान आलसी और कामचोर हो गया है और इस तरह वह हल्के के किसी दफ्तर में क्लर्क या बेजेनचूक स्टेशन पर तार बाबू बनकर रह जायेगा। “ऊट-पटांग तस्वीरें बनाने के बजाय,” मां ने कहा था, “आज शाम को तुम दक्षिणी अमरीका का नक्शा बनाना।”

निकीता दक्षिणी अमरीका का नक्शा बना रहा था, मगर लगातार यही सोच रहा था कि क्या वह सचमुच अपने पिता को भूल गया है? नहीं ऐसा कुछ नहीं है। अमजन नदी की जगह, उस बिन्दु पर, जहां देशान्तर और अक्षांश रेखाएं एक-दूसरी को काटती हैं, उसे अपने पिता का चेहरा दिखाई दिया—लाल लाल गाल, चमकती आंखें, मोतियों जैसे दांत, खिला हुआ चेहरा, दो हिस्सों में विभाजित काली दाढ़ी और ऊंचे ठहाकोंवाली गूंजती आवाज। उनके चेहरे को एकटक निहारते और उनके किस्से-कहानियों को सुन सुनकर लोट-पोट होते हुए घंटों गुजर जाते थे। मां अक्सर गैरजिम्मेदारी और लापरवाही के लिए उनकी आलोचना करती, मगर वास्तव में उनकी यह लापरवाही उनकी बेहद जिन्दादिली का ही नतीजा थी। मिसाल के तौर पर उनके दिमाग में अचानक यह ख्याल समा गया कि जागीर के तीन तालाबों में भरे हुए मेंढक योंही बेकार जाते हैं। अब वे कई शामों तक इसी बात की चर्चा करते रहे कि उन्हें कैसे खिलाया-पिलाया जाये, उनकी नसल बढ़ायी जाये, उन्हें चटपटा बनाया जाये और पीपों में बन्द कर पेरिस भेजा जाये। मां ये बातें सुनकर खूब जोर से हंस देती और हंसी के मारे उसकी आंखें डबडबा आतीं। “तुम मेरी बातों पर हंसती हो न,” वे कहते। “मगर देख लेना कितना पैसा कमाता हूं मैं मेंढकों से।” बस, पिता ने तालाब के एक हिस्से को बाड़ लगाकर अलग कर देने का हुक्म दे दिया, मेंढकों को खिलाने के लिए दलिया बनाया जाने लगा और वे परीक्षण के मेंढकों को घर लाने लगे। आखिर मां ने, जिसकी मेंढकों से जान निकलती थी, एलान कर दिया कि निकीता के पिता या तो उसे रखें या मेंढकों को। उसने कहा कि मेंढकोंवाले घर में मैं किसी सूरत भी रहने को तैयार नहीं हूं।

पिता एक दिन शहर गये और वहां से उन्होंने बलूत के दरवाजों और खिड़कियों के चौखटों से भरे हुए छकड़े भेज दिये। उन्होंने खत में लिखा—“प्यारी साशा, संयोगवश मैंने ढेर सारे दरवाजे और खिड़कियों के चौखटे सस्ते दामों पर खरीद लिये हैं। प्यारी, तुम्हें याद होगा कि तुम टीले पर चिनारों के नीचे एक मंडप बनवाने की सोच रही थीं। उसके लिए हमें इन्हीं की जरूरत थी। मैंने एक वास्तुशिल्पी से सलाह ले ली है। उसने ऐसा मंडप बनाने का मशविरा दिया है जिसमें जाड़े में भी रहना मुमकिन हो। यह बात मुझे बहुत पसन्द आई है। कारण कि हमारा घर तो ऐसे खड्ड में है जहां खिड़कियों से बाहर झांकने पर कोई सुन्दर दृश्य नहीं दिखाई देता।”

खत पढ़कर मां तो बस आंसू बहाकर रह गई। तीन महीनों से अर्कादी इवानोविच को वेतन नहीं दिया गया था और अचानक यह नया खर्च... उसने मंडप बनवाने से साफ़ इनकार कर दिया और अब दरवाजे तथा खिड़कियों के चौखटे एक शेड में पड़े सड़ रहे थे।

फिर पिता जी को अचानक एक नया जनून हुआ। उन्होंने खेती के तरीकों में सुधार करने की ठान ली। यह भी मुसीबत ही साबित हुई। उन्होंने अमरीका से मशीनें मंगवा लीं। खुद उन्हें स्टेशन से लदवा कर लाये। मजदूरों को उन्हें चलाने का ढंग सिखाते हुए सभी पर बरसते-बिगड़ते और बार-बार चिल्लाते रहे—“ध्यान से काम करो शैतानो, तुम्हारा बुरा हो!”

कुछ समय बाद मां ने पूछा—

“कहिये, आपकी पूले बांधनेवाली अद्भुत मशीन का क्या हुआ?”

“होना क्या था?” पिता ने खिड़की पर उंगलियों से ताल देते हुए जवाब दिया, “खूब बढ़िया मशीन है।”

“मगर मैंने तो उसे छानी में खड़े देखा है।”

पिता ने कंधे झटके और दाढ़ी को थपथपाते हुए उसे झटपट दो भागों में बांट दिया।

“क्या वह टूट गई है?” मां ने नम्रता से पूछा।

“ये उल्लू अमरीकी ऐसी ही मशीनें बनाते हैं जो हर घड़ी टूटा करती हैं,” पिता ने बिगड़कर कहा। “इसमें मेरा क्या क्रमूर है?”

अमजन नदी और उसकी शाखाओं को नक्शे पर खींचते हुए निकीता प्यार और खुशी की कोमल अनुभूति के साथ पिता को याद करता रहा। उसका मन खिल उठा। मां ने गलत कहा था कि मैं अपने पिता को भूल गया हूँ।

अचानक दीवार में कोई चीज ऐसे जोर से चिटकी मानो पिस्तौल से गोली चली हो। मां ने जोर से आह भरी और बुनाई की सिलाइयां उसके हाथ से नीचे गिर गईं। अलमारी की दरवाजे के नीचे साही अखीलका गुस्से से घुरघुराई। निकीता ने अर्कादी इवानोविच पर नज़र डाली जो ऐसे जाहिर कर रहे थे मानो पढ़ने में मस्त हों। मगर वास्तव में उनकी आंखें बन्द थीं, यद्यपि वे जाग रहे थे। निकीता को अर्कादी इवानोविच के लिए अफ़सोस होने लगा। बेचारे हर समय अपनी प्रेयसी वास्सा नीलोव्ना की याद में धुलते रहते थे। वास्सा नीलोव्ना किसी नगर में अध्यापिका थी। इसे कहते हैं जुदाई!

निकीता ने हथेली पर अपना गाल टिका दिया और अपनी जुदाई के बारे में सोचने लगा। मेज़ पर इसी जगह लील्या बैठा करती थी, मगर अब वह यहां नहीं है। कैसे मन उदास हो रहा है यह सोचकर कि कभी वह यहां थी और अब नहीं है। और यह रहा मेज़ पर वह धब्बा जहां उसने गोंद गिरा दिया था। और इस दीवार पर कभी उसके वालों में लगी हुई ‘बो’ की छाया नज़र आया करती थी। “पंख लगाकर उड़े सुखद दिन।” इन असाधारण और इसी समय दिमाग में आ जानेवाले शब्दों से निकीता के गले में दर्द-सा होने लगा। इसलिए कि कहीं ये शब्द दिमाग से निकल न जायें, उसने उन्हें दक्षिणी अमरीका के नक्शे के नीचे लिख दिया—“पंख लगाकर उड़े सुखद दिन।” वह नक्शा बनाता रहा और अमजन को दूसरी ही दिशा में—पाराग्वाय और उरुग्वाय के बीच से गुज़ारता हुआ टिएरा डेल फ़्वेगो में ले गया।

“अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना, मेरे ख्याल में आपकी बात सच ही थी। यह लड़का बेजेनचूक रेलवे स्टेशन पर तार वाबू बनने की ही तैयारी कर रहा है,” अर्कादी इवानोविच ने कुछ ऐसे शान्तिपूर्ण अन्दाज़ में यह बात कही जिसे सुनकर तन में झुरझुरी सी होने लगती है। वे बहुत देर से यही देख रहे थे कि निकीता नक्शे का क्या बुरा हाल कर रहा है।

काम-काज के दिन

पाला और भी जोर से पड़ने लगा। बर्फ़ीली हवाओं से वृक्षों में जमी हुई पाले की परतें झड़कर गिरने लगीं। बर्फ़ पर पाले की सख्त तह जमी हुई थी जिस पर कोई ठिठुरा हुआ, भूखा और अकेला भेड़िया या फिर इकट्ठे दो भेड़िये जागीर तक आ जाते।

शारोक और कातोक को जब भेड़ियों की गंध आती तो वे डरकर कू-कू करने लगते, बग्घीखाने में घुस जाते और दिल को चीरती हुई दर्दभरी बारीक आवाज़ में हूंकने लगते — हूं-हूं-ऊ-ऊ...

भेड़िये जमे हुए तालाब को लांघते और इन्सानी बस्ती की गन्ध सूंघते हुए सरकंडों के बीच खड़े रहते। कुछ समय बाद उनकी हिम्मत और बढ़ी और वे बगीचे में आने लगे। वे घर के सामनेवाले मैदान में बैठ जाते, अपनी चमकती हुई आंखों से जमी हुई अन्धेरी खिड़कियों को देखते, ठण्ड से जमे हुए अंधेरे में अपने सिर ऊपर उठाते और धीमे स्वर में मानो गुराने लगते। उनकी यह आवाज़ धीरे-धीरे ऊंची होती जाती, उनकी भूख को जाहिर करनेवाली चीख-पुकार बढ़ती जाती और वे अधिकाधिक जोर से हूंकते। उनका हूंकना दिल में तीर की तरह चुभता...

भेड़िये जब इस तरह हूंकते तो शारोक और कातोक घास-फूस में अपने सिर छिपा लेते और डरके मारे सुध-बुध खोकर बग्घीखाने में दुबके पड़े रहते। नौकरों के क्वार्टरों में अलावघर पर भेड़ का लम्बा ओवरकोट ओढ़ कर लेटा हुआ बड़ई पखोम ऊंधता और करवटें बदलता हुआ कहता —

“हे भगवान, कितने बड़े हैं हमारे गुनाह!”

घर में ये काम-काज के दिन थे। जब नीली-काली खिड़कियों को ऊषा की गुलाबी किरणें चूमने लगतीं, पाले से जमे हुए शीशे हल्के-हल्के रोशन होने लगते और उनके ऊपरी भाग नीले हो जाते, तब सभी लोग जाग उठते।

घर में अंगीठी के लोहे के दरवाजों की टनटनाहट सुनाई देती। रसोईघर में अब भी लालटेन जलती होती। समोवार और गर्म रोटी की गन्ध आती। नाश्ता झटपट ख़त्म किया जाता। मां खाने के कमरे की मेज़ साफ़ करती और सिलाई की मशीन निकाल लेती। पेस्त्राव्का गांव से सोन्या नाम की एक दर्ज़िन आती — कुबड़ी और चेचकरू, लगातार धागा काटते रहने से उसका सामनेवाला दांत ख़राब हो गया था। मां के साथ मिलकर वह हर दिन के इस्तेमाल की सभी तरह की चीज़ों की सिलाई करती। वे सिलाई करती हुई धीरे-धीरे बातें करतीं और जब छोट को फाड़तीं तो बहुत जोर की आवाज़ होती। दर्ज़िन सोन्या तनिक भी आकर्षक नहीं थी।

उसे देखकर कुछ ऐसे अनुभव होता मानो वह बरसों तक किसी अलमारी के पीछे पड़ी रही हो, वहीं से किसी को मिल गई हो और उसे झाड़-पोंछकर सिलाई करने के लिए बिठा दिया गया हो।

अर्कादी इवानोविच इन दिनों पढ़ाई के मामले में कुछ ज्यादा ही कड़ाई से काम लेने लगे थे। वे अपने मनपसन्द शब्दों को दोहराते हुए अक्सर कहते—हम आगे की ओर छलांग लगा रहे हैं। अब बीजगणित की पढ़ाई शुरू हो गई थी। बहुत ही खुशक है यह विषय!

गणित सीखते हुए तो सभी तरह की बेकार, मगर दिलचस्प चीजों की कल्पना करना सम्भव है। मिसाल के तौर पर जंग लगे और मरे हुए चूहोंवाले ऐसे तालाब की कल्पना की जा सकती है जिसमें तीन पाइपों द्वारा पानी डाला जाता है। या फिर स्थायी रूप से लम्बी नाक और मोमजामे के कोटवाले उस फर्जी आदमी को ध्यान में लाया जा सकता है जो तीन किस्मों की कॉफ़ी मिलाता है या तांबे के डले खरीदता है या फिर कपड़े के दो थानोंवाले उस बदकिस्मत बज़ाज़ को ही आंखों के सामने उभरता हुआ देखा जा सकता है। मगर बीजगणित में तो ऐसा कुछ भी नहीं होता जिसकी कल्पना की जा सके, उसमें तो प्राणियों की चर्चा ही नहीं होती। अगर कोई दिलचस्प चीज़ थी तो सिर्फ़ यह कि बीजगणित की किताब से गोंद की गंध आती थी और यह भी कि जब अर्कादी इवानोविच नियम समझाने के लिए निकीता की कुर्सी पर झुकते तो दवात में उनका चेहरा झलक उठता था, घड़े की तरह गोल-मटोल।

एक दिन अर्कादी इवानोविच इतिहास पढ़ाते समय अंगीठी की ओर पीठ करके खड़े थे। सफ़ेद टाइलों पर उनके काले फ़ाककोट, लाल दाढ़ी और सुनहरे चश्मे की जो परछाई पड़ रही थी, वह तो बस कमाल की ही थी। वे निकीता को सोयस्सोन के फ़्रांसीसी बादशाह पेपिन नाटे के बारे में यह बता रहे थे कि कैसे वह तलवार के एक भरपूर हाथ से मग के दो टुकड़े कर डालता था। इस बात को व्यक्त करने के लिए अर्कादी इवानोविच ने अपने हाथ को जोर से लहराकर हवा को काटा।

“तुम्हें यह बात अपने दिमाग में बिठा लेनी चाहिए,” अर्कादी इवानोविच ने निकीता से कहा, “कि पेपिन नाटे जैसे लोग दृढ़ संकल्प और साहस के लिए ही विख्यात हैं। कुछ अन्य लोगों की तरह वे आलसी नहीं थे, वे बेकार ही दवात को नहीं ताका करते थे जिसमें कुछ भी लिखा नहीं रहता, ‘मैं नहीं कर सकता’, ‘मैं थक गया हूँ’ जैसे शर्मनाक शब्द तो वे जानते तक नहीं थे। बीजगणित के नियमों को समझने और याद करने के बजाय वे माथे पर जुल्फ़ों को नहीं मरोड़ा करते थे। इसीलिए,” इतना कहकर अर्कादी इवानोविच ने किताब ऊपर उठाई, जिसके पृष्ठों के बीच वे अपनी उंगली रखे हुए थे, और बोले, “ऐसे लोग आज हमारे लिए मिसाल बने हुए हैं...”

दोपहर के खाने के बाद मां आम तौर पर अर्कादी इवानोविच से कहती—

“अगर आज भी तापमान शून्य से बीस दर्जे नीचे है, तो निकीता फिर बाहर नहीं जायेगा।”

अर्कादी इवानोविच आज भी खिड़की के पास गये और उन्होंने खिड़की के शीशे पर उस जगह सांस छोड़ी जहां थर्मामीटर लगा हुआ था।

“साढ़े इक्कीस है, अलेक्सान्द्रा लेओन्येवना।”

“मेरा भी ऐसा ही ख्याल था,” मां ने कहा। “जाओ, निकीता, अन्दर जाकर किसी तरह अपना मन बहलाओ।”

निकीता अपने पिता के अध्ययन-कक्ष में जाकर चमड़े के सोफ़े के उस सिरे पर बैठ गया जो अंगीठी के निकट था। वहां बैठकर वह फ्रेनीमोर कूपर की जादुई कहानियों की किताब पढ़ने लगा।

कमरे में ऐसा गहरा सन्नाटा था कि मृश्किल से ही सुनाई देनेवाली एक अजीब-सी आवाज़ उसके कानों में गूँजने लगी। ऐसी आवाज़ सुनता हुआ जब कोई व्यक्ति सोफ़े पर अकेला बैठा हो, तो कैसी-कैसी कहानियों के ताने-बाने उसके दिमाग में बन सकते हैं। पाले से जमी हुई खिड़कियों में से सफ़ेद प्रकाश छन रहा था। निकीता कूपर को पढ़ता रहा और फिर अपनी भाँहों को सिकोड़े हुए बहुत देर तक अन्तहीन और विस्तृत मैदानों में लहराती हुई ऊंची-ऊंची घास की लहरों की कल्पना करता रहा। अपनी कल्पना में उसने चितकवरे मुस्तांग घोड़ों को सरपट दौड़ते, हिनहिनाते और अपनी ओर थूथनी हिलाते हुए देखा। उसने देखे कार्डिल्येरास के काले काले दर्रे, उसे दिखाई दिया सफ़ेद जल-प्रपात और उसके ऊपर मिस्री के कूजे की शकलवाली चट्टान के शिखर पर निश्चल खड़ा हुआ रेड इंडियनों का सरदार, लम्बी-सी बन्दूक हाथ में लिये हुए। उसने अपने को किसी घने जंगल के बीच एक अतिकाय वृक्ष की जड़ों के पास, गालों में मुट्ठियां गड़ाये एक पत्थर पर बैठे देखा। उसके पैरों के पास अलाव जल रहा था। जंगल में ऐसी खामोशी थी कि उसे अपने कानों की सूं-सूं भी सुनाई दे रही थी। निकीता यहां लील्या को खोजने आया था जिसे धोखे से हर लिया गया था। यहां उसने बहादुरी के बड़े बड़े कारनामे किये। अनेक बार वह लील्या को जंगली मुस्तांग घोड़े पर बिठाकर ले उड़ा, रेंगकर दर्रे पर चढ़ा और उसने ऐसा साधकर निशाना लगाया कि रेड इंडियनों का सरदार मिस्री के कूजे की शकलवाली चट्टान से नीचे जा गिरा। मगर जितनी बार भी उसने सरदार को गोली का निशाना बनाया, वह उतनी बार ही फिर चट्टान पर आ खड़ा हुआ। निकीता लील्या को बचा कर ले भागा और उसे लगातार यही करते रहना पड़ा।

जब पाले का जोर कम हुआ और मां ने घर से बाहर जाने की इजाजत दे दी, तो निकीता अहाते में अकेला घूमता रहता। मीशका कोर्याशोनोक के साथ वह जो खेल खेला करता था, उन से अब उसे ऊब महसूस होती थी। मीशका इन दिनों अपना अधिकतर समय नौकरों के क्वार्टरों में ताश के ऐसे खेल खेलने में बिताता था जिन में हारनेवाले को बालों से पकड़कर घसीटा जाता है।

निकीता कुएं के पास गया तो उसे याद आया—यहीं से तो मैंने घर की खिड़की में से झांकती हुई दुनिया की एकमात्र नीली ‘बो’ देखी थी। मगर अब खिड़की सूनी थी। बग्घीखाने के निकट शारोक और कातोक ने बर्फ़ में दबा हुआ एक मृत कौवा निकाल लिया था। यह वही कौवा था जिसके करीब झुककर लील्या ने कहा था—“ओह, मुझे कितना दुःख हो रहा है यह

मरा हुआ पक्षी देखकर। निकीता, इसे देखो तो!” निकीता ने कुत्तों से कौआ छीन लिया और तहखाने से आगे जाकर उसे बर्फ के टीले में दफना दिया।

बांध को लांघते हुए निकीता को याद आया कि कैसे क्रिसमस के समारोह के बाद वाली रात को मैं चांदनी में पारदर्शी लगनेवाले अतिकाय विल्लो वृक्षों के नीचे से घर लौटा था और कैसे मेरी छाया मेरे साथ साथ चलती रही थी। क्यों मैंने उस समय उस चीज का महत्व नहीं समझा था जो मेरे साथ घटी थी? उस समय ही तो मुझे अपनी आंखें मूंदकर यह अनुभव करना चाहिये था कि कितनी अपार, कितनी असीम थी मेरी खुशी! अब पाले से जमे हुए काले विल्लो वृक्षों के बीच से तेज हवा सांय-सांय कर रही थी। तालाब पर की वह जमी हुई ढाल अब बिल्कुल बर्फ से ढंक गई थी जिस पर वह और लील्या अपनी स्लेज नीचे की ओर दौड़ाते रहे थे। उसे याद आया कि लील्या गुपचुप रही थी, उसने अपनी आंखें सिकोड़ ली थीं और स्लेज के पहलुओं को कसकर पकड़े रही थी। अब सभी चिह्न बर्फ के नीचे दबकर रह गये थे।

जमकर सख्त हुई बर्फ पर चलता हुआ निकीता अहाते से आगे चला गया। वहां उत्तर की ओर बर्फ के टीले घास-फूस की झोंपड़ियों की छतों के बराबर ऊंचे थे। वहां से उसे समतल सफेद मैदान, बर्फ का वह रेगिस्तान नजर आया जो पाले के धुंधलके में लिपटा हुआ आकाश से जा मिला था। बर्फ पर धुएं के बादल की तरह एक वातचक्र चला जा रहा था। निकीता के भेड़ की खाल के कोट के छोर पीछे की ओर फड़फड़ाने लगे। बर्फ के एक टीले की चोटी पर से बर्फ उड़ रही थी। निकीता खुद भी यह नहीं समझ पा रहा था कि क्यों वह बर्फ के रेगिस्तान को ताकते रहना चाहता था।

मां ने इस बात की ओर ध्यान दिया कि निकीता लुटा-लुटा सा और अकेला घूमता रहता है। उसने अर्कादी इवानोविच से इसकी चर्चा की। यह तय हुआ कि बीजगणित के पाठ बन्द कर दिये जायें, निकीता को रात को जल्दी सुलाया जाया करे और अर्कादी इवानोविच के अटपटे शब्दों में “रेंडी का तेल पिलाकर उसकी सफाई” की जाये।

यह सभी कुछ किया गया। अर्कादी इवानोविच के अनुसार निकीता खुश नजर आने लगा था। मगर उसे असली खुशी तीन हफ्तों बाद ही नसीब हुई। तब दक्षिण से तेज हवा आई, अपने साथ धुंधली सी धुंध लाई जो खेतों और बाग-बगीचों पर छा गई। उसके साथ ही बिखरे-बिखरे बादल आये जो पागलों की तरह आकाश में भागने लगे।

रुक पक्षी

इतवार का दिन था और नौकरों के क्वार्टरों में मजदूर वासीली, मीशका कोर्याशोनोक, चरवाहा छोकरा लेक्सया और लम्बा, हड़ीला तथा लम्बी टेढ़ी नाकवाला अत्योम ताश खेल रहे थे। अत्योम एक गरीब घोड़ाहीन किसान था, जो जिंदगी भर रोजनदार और हमेशा शादी करने की फ्रिक में रहा था, मगर कोई लड़की इसके लिये तैयार ही न हुई थी। पिछले कुछ समय से

वह दुन्याशा की ओर ध्यान देने लगा था। दुन्याशा प्यारी-सी लड़की थी, लाल लाल गालोंवाली। वह पशुशाला की देखभाल करती थी। दिन भर वह पशुशाला से तहखानों या रसोईघर की ओर दौड़ती-घूमती रहती, उसके हाथों में जस्ते की कलाई चढ़ी हुई लोहे की बालटियां खनकती रहतीं, उससे हमेशा ताजा दूध की गंध आती और जब बर्फ पड़ती तो उसके गालों पर बर्फ के गाले-से चमकते हुए प्रतीत होते। बड़ी हंसोड़ थी वह! अत्योम चाहे किसी जगह कुछ भी करता होता — खत्तियों से भूसा लेकर जाता होता या भेड़ों के बाड़े की सफाई करता होता — फौरन तंग-ली जमीन में गाड़ता और अपनी लम्बी-लम्बी टांगों से ऊंट की तरह चलता हुआ उसकी ओर बढ़ जाता।

दुन्याशा के करीब जाकर वह अपनी टोपी उतारता और सिर झुकाकर कहता —

“नमस्ते, दुन्याशा।”

“नमस्ते!” दुन्याशा बालटियां नीचे रखकर अपने पेशबन्द के छोर से मुंह ढक लेती।

“अभी तक दूध के झंझट से छुट्टी नहीं मिली?”

तब दुन्याशा का हंसी के मारे ऐसा बुरा हाल होता कि उसके लिये खड़े रहना मुश्किल हो जाता और वह नीचे बैठ जाती। वह बालटियां उठाती और बर्फ जमे संकरे मार्ग पर तहखाने की ओर भाग जाती। वहां पहुंच कर वह फटाक से बालटियां फर्श पर फेंकती और जल्दी-जल्दी बोलती हुई घर की देखभाल करनेवाली नौकरानी बसिलीसा को बताती — “वह ऊंट आज फिर मुझ से कह रहा था कि मैं उससे शादी कर लूं! हाय राम, मेरा तो किसी दिन दम निकल जायेगा!” इसके बाद वह इतने जोर से हंसती कि पूरे अहाते में उसकी गूंज सुनाई देती।

निकीता नौकरों के क्वार्टरों में चला गया। आज वहां भेड़ के सिर का शोरबा तैयार किया जा रहा था और उबले हुए भेड़ के मांस और ताजा पकायी गयी रोटी की प्यारी-प्यारी गंध फैली हुई थी। दरवाजे के पास हाथ मुंह धोने के लिये टूटीवाली मिट्टी की गागर लटकी हुई थी और उसके नीचे लकड़ी का कठौता रखा हुआ था। वहां लोगों के जूतों के साथ सड़क पर से आई हुई नम बर्फ जमा थी। पखोम अंगीठी के करीब एक बेंच पर बैठा था और उसके चेचकरू माथे तथा तनी हुई भौंहों पर काले बाल बिखरे हुए थे। वह घुटने तक के जूते के ऊपरी भाग की सिलाई कर रहा था। वह सूजे से बहुत सावधानी के साथ चमड़े में सूराख करता, फिर सिर को सीधा कर आंख मिचमिचाता, सूराख पर नजर टिका कर उसमें सूअर का बाल और उसके बाद राल से मजबूत किया हुआ डोरा घुसेड़ता तथा जूते के ऊपरी भाग को घुटनों के बीच कसकर डोरे को आर-पार खींचता। उसने माथे पर बल डालकर निकीता की ओर देखा। आज वह बहुत गुस्से में था। बावर्चिन से उसकी तू तू मैं मैं हो गई थी जिसने उसकी पैरों की गर्म पट्टियां सूखने के लिये डाली थीं और उन्हें जला दिया था।

ताश खेलनेवाले लोग मेज के गिर्द डटे थे, छुट्टी के दिन की साफ-सुथरी क्रमीजें पहने, बालों को तेल लगाकर ढंग से संवारे हुए। सिर्फ अत्योम के ही बाल अस्तव्यस्त थे और वह घर

की बुनी हुई फटी-फटाई जाकेट पहने था। उसकी देखभाल करने और कमीजें धोनेवाला कोई नहीं था। ताश खेलनेवाले चिकने और गन्धयुक्त पत्तों को जोर से मेज पर फेंकते हुए चिल्ला रहे थे —

“यह रहा गुलाम।”

“यह रही बेगम।”

“और इसे देखते हो?”

“और यह?”

“मार ली बाजी।”

“क्यों, कैसी रही?”

“अत्योम, अपनी नाक आगे करो!”

“मैं क्यों?” पत्तों को हैरानी से देखते हुए अत्योम ने पूछा। “यह गलत है, भूल हुई है।”

“नाक आगे करो!”

अत्योम ने दोनों हाथों में एक-एक पत्ता लेकर उनसे अपनी आंखें ढक लीं।

मजदूर वासीली ने तीन पत्ते लिये और उन्हें धीरे-धीरे अत्योम की नाक पर मारने लगा। बाकी खिलाड़ी अत्योम की ओर देखते हुए गिनती करने और गुस्से से चीखकर अत्योम से कहने लगे कि वह हिले-डुले नहीं।

निकीता उनके साथ खेलने बैठ गया और फौरन ही बाजी हार गया। उसकी नाक पर पन्द्रह बार पत्ते मारे गये। इसी समय पखोम ने जूते का ऊपरी भाग और सूजा बेंच के नीचे रखे और कड़ाई से कहा —

“कुछ लोग अभी प्रार्थना कर गिरजे से लौटेंगे और यहां ऐसे हजरत भी हैं जो अपने ऊपर सलीब तक बनाने की भी परवाह नहीं करते। ताश लेकर बैठे हुए हैं। और तो और लेण्ट में मांस खाने से भी गुरेज नहीं करते... स्तेपानीदा!” हाथ धोने के कठौते की ओर जाते हुए वह चिल्लाया, “खाना लगाओ!”

रसोईघर में बावर्चिन स्तेपानीदा ऐसी डरी कि पतीली का ढक्कन उसके हाथ से छूटकर नीचे जा गिरा। मजदूरों ने पत्ते समेट लिये। वासीली उस कोने की ओर मुड़ा जहां तिल-चटों द्वारा बनाये गये निशानोंवाली कागजी देव-प्रतिमा रखी थी। उसके सामने खड़े होकर वासीली ने अपने ऊपर सलीब बनाई।

स्तेपानीदा लकड़ी के प्याले में भेड़ों के सिरों के मांस का शोरबा लाई। प्याले से उठनेवाली प्यारी भाप के कारण स्तेपानीदा ने मुंह दूसरी ओर कर लिया। मजदूर अपना अपना चमचा ले, चुपचाप और संजीदा होकर मेज के गिर्द बैठ गये। वासीली ने डबलरोटी के लम्बे-लम्बे टुकड़े काटे, हर मजदूर को एक-एक टुकड़ा दिया और फिर चमचे से लकड़ी के प्याले पर ठक ठक की। इसका मतलब था — खाना शुरू करो। सभी मजदूर खाने में जुट गये। भेड़ों के सिरों के मांस का शोरबा जायकेदार था।

पख़ोम दूसरों के साथ खाना खाने नहीं बैठा। उसने तो केवल रोटी का एक टुकड़ा लिया और अंगीठी के पास बेंच पर आ बैठा। बावर्चिन उसके लिये उबले हुए कुछ आलू और लकड़ी की नमकदानी में नमक ले आई। वह लेण्ट के व्रत के अनुसार खाना खा रहा था।

“पट्टियां,” पख़ोम ने गर्म-गर्म आलू को सावधानी से दो हिस्सों में काटते और आधे को नमक लगाते हुए कहा। “तुमने पट्टियां जला दीं। मैं तुम से फिर कहता हूं कि तुम सिरफिरी बुढ़िया हो, बेवकूफ़ खूसट हो। वस, यही कुछ हो...”

निकीता बाहर अहाते में चला गया। बड़ा उदासी भरा दिन था। सीली-सीली भारी हवा चल रही थी। नमी में नमक की तरह भुरभुरी मटमैली बर्फ़ को घोड़ों की लीद ने थोड़ा पीलापन दे दिया था। बांध की ओर मुड़नेवाला स्लेज का रास्ता, जिसपर गोबर पड़ा था और बहुत-से डबरे थे, इर्दगिर्द के बर्फ़ ढके मैदान से ऊंचा था। छानियों और खत्तियों की लट्टों की दीवारें, फूस की काली पड़ी हुई छतें, निपत्ते वृक्ष, लट्टों का रंग-रोगन के बिना बड़ा-सा घर, — हर चीज़ काली, मटमैली और साफ़ नज़र आ रही थी।

निकीता बांध के करीब चला गया। दूर से उसे गीले वृक्षों की सरसराहट सुनाई दे रही थी। यह सरसराहट दूरी पर फाटकों से पानी गिरने के कारण पैदा होनेवाली आवाज़ के समान थी। विल्लो वृक्षों की झूमती हुई चोटियां निचाई पर इधर-उधर उड़ने और बिखरे-बिखरे बादलों में लिपटी हुई थीं। बादलों में लिपटी हिलती हुई शाखाओं के बीच काले काले पक्षी चक्कर लगाते हुए उड़ रहे थे और आतंकित-से चीख-चिल्ला रहे थे।

निकीता पीछे की ओर अपना सिर किये और मुंह खोले वहां खड़ा था। ऐसा लगता था मानो ये पक्षी बोझिल और सीली हवा में से नमूदार हुए थे, बादलों के साथ उड़ते चले आये थे और सरसराते तथा झूमते विल्लो वृक्षों के साथ लटके हुए वे कुछ अस्पष्ट, भयानक और सुखद चीज़ों के बारे में चिल्ला रहे थे। निकीता ने अपना दम साध लिया और उसका दिल जोर से धड़कने लगा।

ये रुक पक्षी थे जो वसन्त के पहले तूफ़ान के साथ अपनी पुरानी जगहों पर, अपने तबाह हुए घोंसलों में लौट आये थे। वसन्त आ गया था।

पहियोंवाला घर

तीन दिन तक नम हवा चलती रही, बर्फ़ को चट करती हुई। ऊंची जगहों पर बर्फ़ के बीच से काली काली ज़मीन के टुकड़े नज़र आने लगे। हवा में पिघलती हुई बर्फ़, घोड़ों की लीद और पशुओं की गंध बसी हुई थी। जब पशुओं के बाड़े के दरवाजे खोले गये तो गायें एक-दूसरी को धकेलती, सींग टकराती और जोर-जोर से रम्भाती हुई कुएं की ओर चली गईं। वासन्ती हवा से मदमत्त हुआ बायान सांड बुरी तरह गरज रहा था। मीशका कोर्याशोनोक और लेक्स्या ने अपने कोड़ों से पशुओं को गोबर की गंधवाले बाड़ों में मुश्किल से वापिस भेजा। इसके बाद

उन्होंने घुड़साल का दरवाजा खोला। घोड़े ऐसे ऊँघते हुए बाहर निकले मानो उन्होंने पी रखी हो। उनकी चमड़ी पहले की तुलना में काली हो गई थी, बाल झड़ गये थे, उनके अयाल लम्बे, मैले और उलझे हुए थे और उनके पेट फूले-फूले थे। वेस्ता घोड़ी ने घुड़साल की बगल में रखे पिंजरे में बच्चे जने थे। काले कौवे वेमतलव कांय कांय करते और पंख फड़फड़ाते हुए छतों के ऊपर उड़ते फिर रहे थे। कौवे तहखानों के पीछे किसी मरे हुए जानवर के गिर्द जमा हो गये थे जो अचानक बर्फ में से निकल आया था। वृक्ष जोर से सांय-सांय कर रहे थे, परेशान करनेवाला भारी शोर मचा रहे थे। बांध के ऊपर वृक्षों और बादलों में उड़ते हुए रूक पक्षी कांय कांय कर रहे थे।

इन दिनों निकीता के सिर में लगातार दर्द होता रहा। वह उनींदा और परेशान-सा अहाते में और पानी से छपछपाती सड़कों पर भटकता रहा, खलिहान में गया जहां भूसी के ढेर से अनाज की धूल और चूहों की गन्ध आ रही थी। एक अनबूझ-सी परेशानी उसे घेरे हुए थी। उसे लगता था कि कोई भयानक बात होगी। मगर क्या, यह न तो उसकी समझ में आती थी और न वह उसकी उपेक्षा ही कर सकता था। धरती, जंगली जानवर, चौपाये और पक्षी — कोई भी अब उसका दोस्त नहीं रहा था, किसी को भी तो अब वह समझ नहीं पाता था, सभी तो बेगाने, शत्रु और द्वेषपूर्ण हो गये थे। कुछ तो होनेवाला था, कुछ ऐसा जो समझ में न आये, कुछ ऐसा गुनाह से भरा हुआ कि जिससे मौत ही आ जाये। मगर बेशक वह उनींदा था, बेशक हवा, जानवर की लाश, घोड़ों के खुरों, गोबर और पिघलती हुई बर्फ की गंध से उसका सिर चकराने लगा था, फिर भी कोई उत्सुकता थी जो उसे यहां भटकते रहने की प्रेरणा देती थी, उसे यहां खींच लाती थी।

जब वह भीगा हुआ, परेशान-सा और कुत्तों की गन्ध के साथ घर लौटा, तो मां ने बहुत गौर से उसकी ओर देखा। मां की नज़र में दया की नहीं, भर्त्सना की झलक थी। निकीता समझ नहीं पाया कि मां क्यों नाराज़ थी, इससे उसकी उदासी और भी बढ़ गई, वह और परेशान हो उठा। पिछले कुछ दिनों के दौरान उसने कोई भी तो बुरी बात नहीं की थी, मगर फिर भी वह इस तरह परेशान था कि मानो उसने कोई बड़ा अपराध कर दिया हो, ऐसा अपराध जो सारी पृथ्वी को अपनी लपेट में लेता जा रहा था।

निकीता हवा के रुख वाली दिशा से भूमी की पुलियों के पास से गुज़र रहा था। पुलियों की इस टाल में अभी तक वे सूराख कायम थे जो मजदूरों और मजदूरियों ने पतझर के दिनों में गोहूँ की कंडनी करते समय बना दिये थे। रात के समय लोग इनमें घुसकर सो रहते थे। गर्म और सोंधी गन्धवाले भूसे के नीचे निकीता ने अंधेरे में कभी कुछ बातचीत सुनी थी। उसे वह याद हो आई। भूसे की यह टाल उसे बहुत भयानक-सी प्रतीत हुई।

निकीता खलिहान के निकट खड़े हलवाहे के कोष्ठक की ओर चला गया। यह तख्तों का बना हुआ छोटा-सा पहियेदार घर था। एक चूल के सहारे लगा हुआ उसका दरवाजा हवा में बुरी तरह चूँ-चूँ कर रहा था। घर खाली पड़ा था। पांच पैड़ियोंवाली छोटी-सी सीढ़ी चढ़कर

निकीता उसमें गया। इसमें शीशे के छोटे-छोटे चार टुकड़ोंवाली एक छोटी-सी खिड़की थी। फर्श पर अभी तक बर्फ पड़ी हुई थी। छत के नीचे दीवार के साथ लगे हुए तख्ते पर जहां तहां से कुतरा हुआ लकड़ी का एक चमचा पड़ा था। पिछली पतझर से उसे किसी ने यहां से नहीं उठाया था। वहीं एक बोतल भी थी जिसमें कभी वनस्पति तेल रहा होगा और चाकू का दस्ता भी पड़ा हुआ था। छत के ऊपर हवा सीटियां बजा रही थी। निकीता वहां खड़ा हुआ सोच रहा था कि मैं अब एकदम एकाकी हूं, सब ने मुझे भुला दिया है, कोई मुझ से प्यार नहीं करता, हर कोई मुझ से नाराज है। उसे दुनिया की हर चीज सीली, काली और अभिशापित लग रही थी। उसकी आंखें डबडबा आईं, उसे अपने लिये बहुत दुख होने लगा! होता भी क्यों न, वह इस दुनिया में एकदम एकाकी था, खाली कोष्ठक में अकेला खड़ा था...

“हे भगवान,” निकीता ने धीरे से कहा। उसे अपने सारे शरीर में झुरझुरी-सी महसूस हुई। “हे भगवान, फिर से सब कुछ ठीक-ठाक कर दो। मैं चाहता हूं कि मां मुझे प्यार करे, कि मैं अर्कादी इवानोविच का कहा मानने लगूं... कि फिर से सूरज चमके और घास लहलहा उठे... कि ये रूक पक्षी ऐसे जोर से न चीखें-चिल्लाएँ... कि मुझे बायान सांड का गरजना सुनाई न दे... हे भगवान, फिर से सभी चीजों को ऐसा कर दो कि मुझे चैन मिले...”

निकीता ने ये शब्द कहते हुए सिर झुकाया और झटपट अपने ऊपर सलीब बनाई। प्रार्थना करने के बाद जब उसने लकड़ी के चमचे, तेल की बोतल और चाकू के दस्ते पर नजर डाली तो सचमुच अपने दिल को कुछ हल्का पाया। छोटी-सी खिड़कीवाले इस कोष्ठक में वह कुछ देर और खड़ा रहा और फिर घर वापिस चला गया।

छोटे से घर ने सचमुच उसकी मदद की। वह जब ड्योढ़ी में अपना कोट उतार रहा था तो वहां से गुजरती हुई मां ने उसे बहुत ध्यान से देखा। इन दिनों वह हमेशा ही अपनी भूरी आंखों से उसे बहुत गौर और कड़ाई से देखती थी। वह सहसा सस्नेह मुस्करा दी और उसने निकीता के सिर पर हाथ फेरा।

“कहो, इधर-उधर काफ़ी दौड़ चुके हो न?” उसने पूछा। “अब चाय पीना चाहते हो?”

वासीली निकीत्येविच अचानक ही आये

आखिर इस रात पानी बरसा, सो भी मूसलधार। खिड़कियों और टीन की छत पर बरसात ने पटापट का ऐसा जोरदार शोर मचाया कि निकीता की नींद टूट गई, वह उठकर बिस्तर में बैठ गया और मुस्करा दिया।

रात के समय बरसात का गीत शीशे पर ताल देता हुआ मानो लोरी दे रहा था—
“सोओ, सोओ, सोओ।” अन्धेरे में तेज हवा घर के सामनेवाले पोपलार के वृक्षों से जूझ रही थी।

निकीता ने अपने तकिये की नीचेवाली ठंडी तरफ ऊपर कर ली और फिर से बिस्तर में लेट गया। ऊनी कम्बल के नीचे वह तब तक करवटें बदलता और हिलता-डुलता रहा जब तक कि उसे फिर से चैन महसूस नहीं हुआ। “सब कुछ अच्छा हो जायेगा, बहुत ही अच्छा हो जायेगा,”—उसने सोचा और नींद के कोमल तथा प्यारे-प्यारे बादलों में खो गया।

सुबह को बरसात बन्द हो गई, मगर आकाश बोझल और जलभरे बादलों से ढका रहा। ये बादल दक्षिण से उत्तर की ओर तैर रहे थे। निकीता ने खिड़की से बाहर झांका तो आह भर कर रह गया। बर्फ का तो नाम-निशान ही बाक़ी नहीं रह गया था। अहाते में सभी ओर नीले पानी के डबरे थे जिनमें हवा के कारण छोटी-छोटी लहरियां उठ रही थीं। ज़मीन के साथ लगी हुई सूखी बादामी घास के साथ साथ डबरों के बीच से स्लेज का मार्ग अभी भी नज़र आ रहा था, पूरी तरह गायब नहीं हुआ था। पोपलार की भीगी हुई लाल-पीली शाखाएं मस्ती में झूम रही थीं। दक्षिण में फटे-फटे बादलों के बीच से आंखों को चकाचौंध करता हुआ आकाश का नीला धब्बा-सा दिखाई दिया जो भयानक रफ़्तार से उड़ता हुआ घर की ओर आने लगा।

नाश्ते के समय मां परेशान थी और बार-बार खिड़कियों की ओर देखती रही।

“पांच दिन से डाक नहीं आई,” उसने अर्कादी इवानोविच से कहा। “न जाने क्यों?... अब बाढ़ आ गई है और दो हफ़्ते तक सड़कों पर आना-जाना न हो सकेगा... ऐसी लापरवाही तो बहुत भयानक चीज़ है।”

निकीता समझ गया कि मां उसके पिता की चर्चा कर रही थी। हर दिन ही उनकी प्रतीक्षा हो रही थी। अर्कादी इवानोविच कारिन्दे से बात करके यह मालूम करने गये कि क्या डाक लाने के लिए किसी घुड़सवार को भेजना मुमकिन होगा। मगर उसी समय खाने के कमरे में लौट आये और बहुत ऊंचे तथा असाधारण अन्दाज़ में बोले—

“हे भगवान, यह क्या हो रहा है!... ज़रा बाहर जाकर सुनिये... पानी कैसे शोर मचा रहा है।”

निकीता ने ओसारे में खुलने वाला दरवाज़ा चौपट खोल दिया। तेज़ और ताज़ा हवा गिरते हुए पानी की जोरदार और मधुर आवाज़ से भरपूर थी। यह आवाज़ थी पिघली हुई बर्फ़ की असंख्य जल-धाराओं की जो हल-रेखाओं, गडों और खाइयों में से बहती हुई खड्डों में गिर रही थीं। किनारों तक भरे हुए खड्ड वसन्त के पानी को नदी में पहुंचा रहे थे। बर्फ़ की तह को तोड़कर नदी अपने किनारों से बाहर उमड़ पड़ी थी और उसका पानी बर्फ़ के तूदों तथा जड़ से उखाड़ी गयी झाड़ियों को चक्कर देता हुआ तेज़ी से बांध की ओर दौड़ रहा था, भंवर बना रहा था।

आकाश का वह नीला-सा धब्बा जो घर की ओर उड़ता हुआ आया था, बादलों को फाड़कर बढ़ता जा रहा था। आकाश ठंडे और नीले प्रकाश से जगमगा उठा और अहाते के डबरे

गहरी और तलहीन नीलिमा में बदल गये। जल-धाराओं, खेतों की बड़ी-बड़ी झीलों और लबालब भरे खड्डों में सूरज की किरणें प्रतिबिम्बित हो रही थीं, आंखों को चौंधियाता हुआ प्रकाश-प्रतिबिम्ब कौंध उठता था।

“हे भगवान, कैसी कमाल की हवा है!” अपनी ऊनी शॉल के नीचे छाती पर हाथ रखते हुए मां ने कहा। उसका चेहरा खिला हुआ था और उसकी भूरी आंखों में हरी-सी चमक झलक उठी थी। मां जब मुस्कराती थी तो उसका रूप दुनिया में बेजोड़ हो जाता था।

निकीता ने यह देखने के लिये अहाते के गिर्द चक्कर लगाया कि वहां क्या हालत है। सभी जगह जल-धाराएं थीं, जिनमें से कुछ मटमैले और पैर आ जाने पर आह-सी भर कर चूर-चूर हो जानेवाले बर्फ के टुकड़ों के नीचे गायब हो जाती थी। चारों ओर पानी ही पानी था। घर एक द्वीप-सा बन गया था। निकीता सिर्फ लुहारखाने तक ही जा पाया जो एक छोटे-से टीले पर बना हुआ था। सूखती हुई ढाल से उतर कर वह खड्ड की ओर भागा। पिछले साल की घास को डुबोता हुआ बर्फ का साफ और सुगन्धित पानी तेजी से बहा चला जा रहा था। उसने चुल्लू भर पानी पिया।

खड्ड में कुछ आगे जाकर बर्फ के पीले और नीले टुकड़े अभी तक कायम थे। कुछ जगहों पर पानी इन टुकड़ों को चीर कर बह निकला था और दूसरी जगह बर्फ के ऊपर से बहा जा रहा था। भगवान न करे कि कोई घुड़सवार बर्फ की इस खिचड़ी में आ फंसे! निकीता खड्ड के करीब घास के साथ-साथ चला जा रहा था। वह सोच रहा था कि वसन्त के पानी में तैरते हुए एक के बाद एक खड्ड को पार करने, सूखते हुए, मगर अभी तक सीले तटों को लांघने और बड़ी-बड़ी चमकती हुई झीलों के पार जाने में कितना मजा होगा जिनकी सतहों पर बसन्ती हवा लहरियां पैदा कर रही थी।

खड्ड के दूसरी ओर समतल मैदान था जो कई जगहों पर बादामी था और कई जगह अभी तक बर्फ से ढका हुआ था। उसके ऊपर अनेक जल-धाराएं बह रही थीं और सारा मैदान आंखों को चकाचौंध करता हुआ चमक रहा था। कुछ दूर घोड़ों की नंगी पीठों पर पांच घुड़सवार मैदान को धीरे-धीरे पार कर रहे थे। उनके अगुआ ने गर्दन घुमाई और रस्सियों का एक गुच्छा हिलाते हुए चिल्लाकर वाकियों से कुछ कहा। निकीता ने चितकबरी घोड़ी देखकर पहचान लिया कि वह अर्तामोन त्यूरिन था। आखिरी घुड़सवार अपने कंधे पर एक लम्बा-सा बांस रखे हुए था। घुड़सवार खोम्याकोव्का गांव की ओर जा रहे थे जो खड्डों के परे, नदी के दूरवर्ती तट पर स्थित था। जलमग्न खेतों में से, जहां कहीं कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था, घुड़सवारों को जाते हुए देखना बहुत अजीब-सा लग रहा था।

निकीता नीचेवाले तालाब पर चला गया। पीली बर्फ पर से अपनी मोटी और फेनिल जलधारा को बहाता हुआ खड्ड उसे इसी तालाब में गिरा रहा था। छोटी-छोटी लहरियों में बहते हुए पानी ने तालाब की समूची बर्फ को ढक दिया था। बायीं ओर को बर्फ की जकड़ से मुक्त हुए कोमल, चौड़े-चौड़े और अतिकाय विल्लो वृक्ष जोर से सांय-सांय कर रहे थे। पिछली



रात की बरसात में भीगे हुए रुक पक्षी नंगी और हिलती-डुलती शाखाओं में बैठे थे।

विल्लो वृक्षों के टेढ़े-मेढ़े तनों के बीच एक घुड़सवार बांध पर दिखाई दिया। वह मरियल-से घोड़े की बगलों में लगातार एड़ियां मारता हुआ दायें-वायें हिलडुल रहा था और अपनी कुहनियों को ऊपर-नीचे झटक रहा था। यह स्त्योप्का कार्नाऊशिकन था। पानी के डबरों के बीच से सरपट अपना घोड़ा दौड़ाते हुए उसने चिल्लाकर निकीता से कुछ कहा। घोड़े के कीचड़ से लथपथ सुम ढेरों बर्फ और पानी के छींटे उड़ाते जा रहे थे।

जाहिर था कि कुछ खास बात हो गयी थी। निकीता घर की तरफ दौड़ा। पिछवाड़े के ओसारे की बगल में कार्नाऊशिकन का हांफता हुआ घोड़ा खड़ा था। उसने निकीता को देखकर सिर झटका। निकीता जैसे ही घर पहुंचा, उसे अपनी मां की डरी-सहमी, संक्षिप्त और ऊंची-सी चीख सुनाई दी। वह बरामदे के सिरे पर नजर आई, उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं और आंखें डर से फैली हुई थीं। स्त्योप्का उसके पीछे नजर आया और अर्कादी इवानोविच दूसरी ओर के दरवाजे से भागते हुए बाहर निकले। मां चल नहीं रही थी, बरामदे में से उड़ी चली जा रही थी।

“जल्दी करो, जल्दी करो,” रसोईघर का दरवाजा फटाक-से खोलते हुए वह चिल्लाई। “स्तेपानीदा, दुन्याशा, भागकर नौकरों के क्वार्टरों में पहुंचो!... वासीली निकीत्येविच खोम्याकोव्का के करीब डूब रहे हैं...”

सबसे भयानक बात तो यह थी कि खोम्याकोव्का के करीब यह घटना घट रही थी। निकीता की आंखों के सामने अंधेरा छा गया। बरामदे में अचानक तले हुए प्याजों की गन्ध फैल गई। मां ने बाद में बताया कि निकीता आंखें सिकोड़ कर खरगोश की भांति चीख उठा था। उसे तो खैर यह याद नहीं रहा था कि वह इस तरह चीखा था। अर्कादी इवानोविच उसे बाहों में कसकर पढ़ाई के कमरे में ले गये।

“तुम्हें शर्म नहीं आती, निकीता, तुम इतने बड़े लड़के हो,” कोहनी के ऊपर उसकी दोनों बाहों को दबाते हुए वे लगातार दोहराते रहे। “आखिर हुआ क्या है, हुआ ही क्या है? वासीली निकीत्येविच जल्द ही घर आ जायेंगे... वे शायद किसी गढ़े में गिरकर भीग गये हैं... और उस उल्लू स्त्योप्का ने तुम्हारी मां को डरा दिया है... कसम भगवान की... मैं जरूर उसके कान खींचूंगा...”

फिर भी निकीता ने देखा कि अर्कादी इवानोविच के होंठ कांप रहे थे और उनकी आंखों की पुतलियां सिकुड़कर बिन्दुओं जैसी हो गई थीं।

इसी बीच मां केवल एक शॉल लपेटे हुए भाग कर नौकरों के क्वार्टरों में जा पहुंची थी। मजदूरों को तो इस बात का पहले ही पता लग चुका था और वे बग्गीखाने में बड़े-से, जानदार और बदमिजाज नीग्रो नामक घोड़े को चौड़े तले की स्लेज में जोतने की कोशिश कर रहे थे। घोड़ों के चरागाह से वे घुड़सवारी के घोड़े पकड़ लाये। एक आदमी घास-फूस की छत से लम्बे

हथेली वाली नाव की हुक खींचकर नीचे उतार रहा था। दूसरे ने फावड़ा सम्भाला और एक अन्य ने रस्से का लच्छा उठाया। दुन्याशा भेड़ की खाल का लम्बा कोट और भारी फ़र कोट उठाये हुए घर से बाहर निकली। पखोम मां के पास जाकर बोला -

“अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना, कृपया, दुन्याशा को वोद्का लाने के लिये गांव भेज दीजिये। जैसे ही हम उन्हें लेकर घर पहुंचें, आप उन्हें वोद्का पिलाकर गर्म करें...”

“पखोम, मैं आपके साथ चल रही हूँ...”

“हरगिज़ नहीं! आप घर जाइये, कहीं ठण्ड लग जायेगी।”

पखोम सिमट कर स्लेज की सीट पर जा बैठा और उसने कसकर लगामें पकड़ लीं। “छोड़ दो अब इसे!” उसने उन लड़कों से पुकार कर कहा जो घोड़े की लगाम पकड़े खड़े थे। नीग्रो ने बमों पर जोर मारा, हिनहिनाया, झटके के साथ आगे बढ़ा और स्लेज को कीचड़ और डबरों के ऊपर से आसानी से खींच ले चला। मजदूर एक दल-सा बनाकर अपने घोड़ों को रस्सियां मारकर तेज़ी से दौड़ाते हुए स्लेज के पीछे-पीछे बढ़ चले।

मां देर तक निश्चल खड़ी रहकर उन्हें जाते देखती रही और फिर सिर झुकाये हुए घर में लौट गई। मां खाने के कमरे की खिड़की के करीब जा बैठी। वहां से खुला मैदान और दूरी पर, पहाड़ियों से आगे, खोम्याकोव्का गांव के विल्लो वृक्षों के शिखर नज़र आ रहे थे। मां ने निकीता को बुलवाया। वह भागता हुआ आया, उसने अपनी बांहें मां के गले में डाल दीं और अपना सिर उसके कंधों पर पड़ी हुई शॉल के ऊपर टिका दिया...

“भगवान हमें मुसीबत से बचाये, प्यारे निकीता,” मां ने धीरे से कहा और देर तक निकीता के बालों पर अपने होंठ टिकाये रही।

अर्कादी इवानोविच कई बार कमरे में आये, उन्होंने अपना चश्मा ठीक किया और हाथ मले। मां कई बार यह देखने के लिये ओसारे में गई कि वे लौटे या नहीं, फिर खिड़की के पास आकर बैठ गई और निकीता को उसने अपने पास से नहीं हटने दिया।

सूर्यास्त के पहले दिन के प्रकाश में हल्की-सी लालिमा घुल गई थी। खिड़की के शीशों के निचले भागों पर पाले ने हल्के-हल्के बेलबूटे बना दिये थे। सन्ध्या समय ठण्ड बढ़ गई थी। अचानक घर के बाहर घोड़े के सुम बज उठे और नीग्रो दिखाई दिया। उसके मुंह से झाग निकल रहा था। पखोम स्लेज के एक ओर बैठा था और स्लेज के अन्दर भेड़ की खाल के बड़े कोट, फ़र कोट और नमदे के ढेर के नीचे वासीली निकीत्येविच का लाल लाल और मुस्कराता हुआ चेहरा दिखाई दे रहा था। वे भेड़ की खाल के बड़े कोट के नीचे से मुस्करा रहे थे और उनकी मूंछों की जगह जमी हुई बर्फ़ के दो बड़े-बड़े छल्ले नज़र आ रहे थे।

मां जल्दी से उठती हुई चीख उठी, उसका चेहरा कांप रहा था।

“वे ज़िन्दा हैं!” वह चिल्लाई और उसकी चमकती हुई आंखों से आंसू की धार बह चली।

मैं तो लगभग डूब ही गया था

पिता चमड़े की बड़ी सी आरामकुर्सी पर बैठे हुए थे। यह कुर्सी विशेष रूप से खाने के कमरे में गोल मेज के गिर्द लाकर रख दी गई थी। वासीली निकीत्येविच ऊंट के बालों का मुलायम ड्रेसिंग गाउन और नमदे के नर्म बूट पहने थे। वे अपनी मूंछों और नम दाढ़ी को कंधे से संवार कर दो हिस्सों में बांटे हुए थे। उनका हंसता हुआ चेहरा समोवार में प्रतिबिम्बित हो रहा था। अन्य सभी चीजों की भांति इस शाम को समोवार भी बहुत जोर से सूं-सूं करता हुआ उबल रहा था और उसके नीचेवाले झरोखे से चिंगारियां निकल रही थीं।

वासीली निकीत्येविच खुशी के कारण और वोदका के असर से अपनी आंखें सिकोड़े हुए बैठे थे और उनके सफ़ेद दांत खूब चमक रहे थे। मां बेशक वही साधारण सलेटी पोशाक पहने और ऊनी शॉल लपेटे थी, फिर भी बिल्कुल दूसरी ही नज़र आ रही थी, पहचान से बाहर थी। उसके चेहरे पर मुस्कान बरबस खिल उठती थी, उसके होंठ सिकुड़ जाते थे और ठुड़ी कांप उठती थी। अर्कादी इवानोविच ने खास खास मौकों पर पहनने के लिये सुरक्षित रखा हुआ कछुए के फ्रेमवाला अपना नया चश्मा पहन रखा था। निकीता मेज के साथ अपना पेट सटाये एक कुर्सी पर घुटनों के बल बैठा हुआ था और दम साधकर अपने पिता की बातें सुन रहा था। दुन्याशा बार-बार अन्दर आती, कुछ ले जाती, कुछ लाती और मालिक को बहुत गौर से देखती। स्तेपानीदा एक बड़ी-सी कड़ाही में बड़े-बड़े मीठे पराठे लाई जिनके ऊपर अभी तक घी सूं-सूं कर रहा था। इन्हें मेज पर रखा हुआ देखकर बरबस मुंह में पानी भर आता था। बिल्ला वासीली वासीत्येविच अपनी दुम को सीधी अकड़ाये इधर-उधर और चमड़े की आरामकुर्सी के इर्दगिर्द घूम रहा था, उसके साथ अपनी पीठ, बगलें और सिर रगड़ता था और अस्वाभाविक रूप से ऊंची और खुशीभरी आवाज़ में म्याऊं-म्याऊं करता था। अखीलका साही ने अलमारी के नीचे से अपना मुअर जैसा सिर बाहर निकाला। उसके कांटे उसकी पीठ के साथ चिपके हुए थे। इससे यह स्पष्ट था कि वह भी खुश है।

पिता ने बड़ी खुशी के साथ एक मीठा पराठा खाया। फिर उन्होंने दूसरा पराठा लेकर उसे नली की तरह लपेटा और वह भी खा लिया। “शाबाश, स्तेपानीदा!” उन्होंने कहा, क्रीमवाली चाय का बड़ा-सा घूंट भरा, मूंछों को थपथपाया और एक आंख सिकोड़ ली।

“अब मैं तुम्हें बताता हूं कि कैसे मैं लगभग डूब ही गया था।” इतना कहकर उन्होंने अपनी कहानी सुनानी शुरू की।

“मैं समारा से परसों रवाना हुआ। क्रिस्ता यह हुआ, साशा,” वे घड़ी भर के लिये गम्भीर रहे, “कि मैंने बहुत ही फ़ायदे की एक ख़रीदारी कर डाली थी। वह पोज़्दुनिन लगातार मेरे पीछे ही पड़ा रहा कि मैं उसका काला घोड़ा, लार्ड वायरन, ख़रीद लूं।

“‘मैं क्या करूंगा तुम्हारा घोड़ा ख़रीदकर?’ मैंने उससे पूछा। ‘ज़रा आकर उसे एक नज़र देख तो लो,’ उसने कहा। मैंने घोड़ा देखा तो उसपर लट्टू हो गया। बला का खूब-

सूरत! बड़ा समझदार भी! मुझे लगा कि वह अपनी बैंगनी आंखों से मुझे देखते हुए मानो कह रहा है—‘मुझे खरीद लो!’ पोर्जुनिन मेरे पीछे पड़ा रहा कि मैं उसका घोड़ा खरीद ही लूं। उसके साथ स्लेज भी है और साज भी... साशा, तुम मुझ से नाराज तो नहीं हो यह खरीदारी करने के लिये?’ पिता ने मां का हाथ अपने हाथ में ले लिया। “मुझे क्षमा कर दो।” मां ने तो अपनी आंखें भी मूंद लीं। इस दिन मां नाराज हो ही कैसे सकती थी? पिता जी ने अगर जेमस्त्वो (नगरपालिका) के अध्यक्ष, खुद पोर्जुनिन को भी खरीद लिया होता, तो भी वह नाराज न होती। “सो, मैंने हुक्म दे दिया कि लार्ड वायरन को मेरे अहाते में लाकर खड़ा कर दिया जाये। फिर सोचने लगा कि अब क्या करूं! घोड़े को समारा में अकेले छोड़ने को मन नहीं मानता था। एक सूटकेस में बहुत-से तोहफे भरे,” पिता ने शरारती ढंग से एक आंख सिकोड़ी, “पी फटते ही वायरन को स्लेज में जोत दिया गया और मैं अकेला ही समारा से रवाना हो गया। शुरू में तो कहीं-कहीं बर्फ बाकी नजर आई, मगर बाद में तो सड़क पर कीचड़ ही कीचड़ हो गया। मेरे घोड़े के बदन पर थकान के मारे पसीने के झाग के धब्बे उभर आये और वह लड़खड़ाने लगा। मैंने कोल्दिवान में पादरी वोज़द्विजेन्स्की के पास रात बिताने का निर्णय किया। पादरी ने मुझे ऐसी सासेज खिलाई कि बस, कुछ न पूछो! तो खैर! पादरी ने मुझ से कहा—‘वासीली निकीत्येविच, आप घर नहीं जा पायेंगे। आज रात को खट्टों में जमी हुई बर्फ अवश्य ही पिघल जायेगी।’ मगर मैंने तो हर हालत में वहां से चल देने का इरादा बना लिया था। इसलिये आधी रात तक पादरी से मेरी बहस होती रही। उसने मुझे काली बेरियों की ऐसी बढ़िया शराब पिलाई कि मजा ही आ गया! कसम खुदा की, अगर ऐसी शराब पेरिस में पहुंच जाये, तो फ्रांसीसी तो पागल हो उठें... खैर, इसकी चर्चा हम बाद में करेंगे। मैं बिस्तर में जा लेटा और कुछ देर बाद मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। तुम कल्पना कर सकती हो, साशा, कि उस समय मेरे दिल पर क्या गुजरी होगी। मैं तुम से सिर्फ बीस कोस की दूरी पर था और फिर भी यह नहीं जानता था कि कब तुम्हारे पास पहुंच पाऊंगा... भाड़ में जाये बरसात, पादरी और शराब...”

“वासीली,” मां ने उन्हें टोका और बहुत कड़ाई से घूरते हुए बोली—“मैं बहुत संजीदगी से कह रही हूं कि फिर कभी ऐसा खतरा मोल नहीं लेना।”

“मैं कसम खाता हूं,” घड़ी भर भी सोचे बिना वासीली निकीत्येविच ने कहा। “और इस तरह... सुबह होते तक बारिश बन्द हो गई, पादरी प्रार्थना के लिये चला गया, मैंने वायरन को जोतने का हुक्म दिया और वहां से रवाना हो गया। हे भगवान!... वहां सभी ओर बस पानी ही पानी था। मगर घोड़े को चलने में कम तकलीफ हो रही थी। हम बिना सड़कों के घुटने घुटने तक पानी और झीलों में से गुजर रहे थे... ओह, क्या नज़ारा था... सूरज, हवा... मेरी स्लेज तैर रही थी, मेरे पांव भीगे हुए थे। बड़ा ही मजा आ रहा था! आखिर दूरी पर मुझे अपने गांव के विल्लो वृक्ष दिखाई दिये। मैंने खोम्याकोव्का को पीछे छोड़ा और नदी को पार करने के लिये सबसे अधिक सुविधाजनक स्थान खोजने लगा... उस कमीने पोर्जुनिन को मैं

बताऊंगा,” वासीली निकीत्येविच ने कुर्सी के हत्ये को जोर से ठोककर कहा, “कहां कहां पुल बनाने की जरूरत है! कोई तीन कोस तक मुझे खोम्याकोव्का गांव से आगे जाकर नदी को पार करना पड़ा। बहुत कमाल का है यह घोड़ा बायरन! खड़े तट पर मुझे सीधे ऊपर खींच ले गया। कुछ आगे जाकर मैं सोचने लगा कि नदी तो पार कर ली और अब आगे तीन खड्ड हैं, और भी ज्यादा खतरनाक! इरादा बदलने में अब कोई तुक नहीं थी। मैं पहले खड्ड तक पहुंचा। अब तुम कल्पना करो, साशा, बर्फ मिला हुआ पानी किनारों को छू रहा था। यह तो तुम्हें मालूम ही है कि यह खड्ड कोई पन्द्रह फुट गहरा है।”

“हे भगवान!” मां ने जर्द होते हुए कहा।

“मैंने घोड़े को जोत से निकाला, उसके अंसबंध खोले, साज उतारा और उन्हें स्लेज में रख दिया। मगर मैं अपना फ़र कोट उतारना भूल गया। वही सारी मुसीबत की जड़ साबित हुआ। मैं घोड़े की पीठ पर सवार हो गया। भगवान भला करे! घोड़ा शुरू में तो अड़ा। मैंने उसकी पीठ ठोंकी। उसने पानी को सूंघा और हिनहिनाया। वह ज़रा लड़खड़ाया और फिर खड्ड में उतर गया, बर्फ़ीले कीचड़ में। वह गर्दन तक कीचड़ में धसक गया, उसने हिलने-डुलने के लिये जोर लगाया, मगर टस से मस न हो पाया। मैं उसकी पीठ से नीचे उतरा और खुद भी बर्फ़ीले कीचड़ में धसक गया, सिर्फ़ मेरा सिर बाहर रहा। मैं इधर-उधर हाथ-पैर मारने, एक तरह से कुछ तैरने और कुछ रेंगने लगा। घोड़े ने देखा कि मैं उसे छोड़े जा रहा हूँ—वह दर्दनाक ढंग से हिनहिना उठा मानो कह रहा हो—मुझे छोड़कर न जाओ! अब वह अपनी टांगों को हरकत में लाया और मेरे पीछे-पीछे रेंगने लगा। वह मेरे करीब पहुंच गया और उसके अगले सुम मेरे खुले हुए कोट के छोरों में उलझ गये और मुझे पानी में घसीट ले चले। मैंने अपने को सम्भालने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगाया, मगर अधिकाधिक नीचे ही पहुंचता गया। मेरे पैरों के नीचे कहीं ज़मीन नहीं थी। खुशकिस्मती ही समझो कि मेरे कोट के बटन खुले हुए थे और जब मैं अपने को बचाने के लिए पानी में संघर्ष कर रहा था, तो मेरा कोट उतर गया। वह अभी तक खड्ड के तल में पड़ा हुआ है... मैं सतह पर आया, फिर से सांस लेने लगा और बाहें फैलाकर मेढक की तरह निश्चल-सा पड़ा रहा। तभी मुझे पानी में से बुलबुले उठने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने घूमकर देखा तो पाया कि घोड़े का सिर पानी के नीचे था और उसकी नाक से बुलबुले निकल रहे थे—लगामों पर उसका पैर आ गया था। मैं उसकी ओर मुड़ा। मैंने उसके बन्द खोले और लगामें अलग कीं। उसने मेरी ओर सिर घुमाया और इन्सान की तरह मुझे देखा। कोई घंटे भर तक हम इस कीचड़ में छपछपाते रहे। मुझे लगा कि मेरी हिम्मत अब जवाब दिये जा रही है और शरीर ठंड से अकड़ने लगा है। मेरा दिल बैठने लगा। तभी मैंने देखा कि घोड़े ने कीचड़ में चलना बन्द कर दिया था, वह मुड़कर तैरने लगा था। इसका मतलब यह था कि हम खुले पानी में पहुंच गये थे। पानी में तैरना आसान था और हम खड्ड के तट पर जा पहुंचे। पहले बायरन और फिर मैं घास पर पहुंचा। मैंने उसके अयाल पकड़ लिये और हम

दोनों लड़खड़ाते हुए साथ-साथ चल दिये। हमारे सामने अभी दो खड्ड और थे... तभी मैंने अपने लोगों को घोड़ों पर अपनी ओर आते देखा..."

वासीली निकीत्येविच ने कुछ और अस्पष्ट-से शब्द कहे और फिर अचानक उनका सिर नीचे को झुक गया। उनका चेहरा एकदम सुर्ख हो गया था और दांत बजने लगे थे।

"घबराने की कोई बात नहीं है, कोई बात नहीं है। यह तो समोवार की गैस का असर है," उन्होंने कहा, कुर्सी की टेक लगाई और आंखें मूंद लीं।

उनके शरीर में कंपकंपी शुरू हो गई। उन्हें बिस्तर में लिटा दिया गया और वे बेहोशी की हालत में कुछ बड़बड़ाने लगे...

पावन सप्ताह

पिता तीन दिन तक बुखार में पड़े रहे और जब होश आया तो सबसे पहले उन्होंने यही पूछा कि बायरन जिन्दा है या नहीं। वह खूबसूरत घोड़ा खूब मजे में था।

वासीली निकीत्येविच की जिन्दादिली और खुशमिजाजी ने उन्हें जल्द ही फिर से अपने पैरों पर खड़ा कर दिया। वसन्त की बोआई के पहले का व्यस्त समय शुरू हो गया था। लुहारखाने में फालों के सिरे तेज किये जाने लगे, हलों की मरम्मत होने लगी और घोड़ों को नाल लगाये जाने लगे। खत्तियों में मजदूर चूहों को डराते और धूल के बादल उड़ाते हुए बहुत दिनों से बन्द पड़े अनाज को फावड़ों से इधर-उधर हिलाने-डुलाने लगे। एक छानी में छंटाई की मशीन भड़भड़ा रही थी। घर में जोर-शोर से वसन्त के दिनों की सफाई शुरू हो गई थी—खिड़कियां साफ की गईं, फर्श धोये गये और छतों से मकड़ियों के जाले उतारे गये। कालीनों, कुर्सियों और सोफों को छज्जे में लाकर, उन्हें पीट-पीट कर उनमें से जाड़े का असर निकाला गया। जाड़े में जो भी चीजें अपनी ही जगह पड़ी रही थीं, उन्हें हिलाया-डुलाया गया, उन्हें झाड़ा-पोंछा गया और नये ढंग से व्यवस्थित किया गया। साही अखीलका को तो होहल्ला बिल्कुल नागवार था, वह तो बुरी तरह झल्ला उठी और एक स्टोर में जाकर रहने लगी।

खाने के कमरे के चांदी के बर्तन और देव-प्रतिमाओं के चांदी के फ्रेम तो मां ने खुद ही साफ किये, पुराने संदूक खोले, जिनसे घर भर में नेफ्थलीन की गन्ध फैल गई, वसन्त के कपड़े बाहर निकाले जिनमें संदूकों में पड़े रहने के कारण सिलवटें पड़ गई थीं और जो जाड़े भर पड़े रहने से अब नये जैसे लगते थे। खाने के कमरे में पूरी तरह उबले हुए अंडों से भरी एक टोकरी रखी थी। निकीता और अर्कादी इवानोविच ने अंडों को प्याज के छिलकों के उबले हुए पानी से रंगा और वे पीले हो गये। इसके बाद उन्होंने अंडों को कागजों में लपेटकर सिरके मिले उबलते पानी में डाल दिया। इस तरह अंडों पर रंग-विरंगे डिजाइन बन गये। फिर उन्होंने अंडों पर रुपहली और सुनहरी पालिश की।

शुक्रवार के दिन घर भर में वानीला और इलायचियों की खुशबू फैल गई। बावर्चिन ने ईस्टर के केक बनाने शुरू कर दिये थे। शाम को मां के बिस्तर पर साफ़-सुथरे तौलिये में लिपटे हुए कोई दसक केक रखे हुए थे। इनमें कुछ केक ऊंचे और फूले फूले थे और कुछ चौड़े और गोल।

सप्ताह भर मौसम डांवांडोल रहा। शुरू में तो भारी काली घटा छाई रही, भुरभुरी बर्फ़ पड़ी और फिर आकाश निर्मल हो गया। तलहीन नीले आकाश में वसन्त का ठंडा-सा प्रकाश झलक उठा। फिर नम बर्फ़ का तूफ़ान आया। रात को डबरों में पानी जम गया।

शनिवार को जागीर सूनी-सूनी रही। घर के और नौकरों के क्वार्टरों के आधे लोग सात कोस की दूरी पर स्थित कोलोकोल्त्सोव्का गांव के गिरजे की बड़ी प्रार्थना में भाग लेने के लिए चले गये थे।

उस दिन मां की तबीयत कुछ ख़राब थी—उसने हफ़्ते भर बहुत अधिक काम किया था। पिता जी ने कहा कि वे रात के खाने के फ़ौरन बाद सो जायेंगे। अर्कादी इवानोविच हर दिन समारा से ख़त पाने की बेकार प्रतीक्षा करते रहे थे। इस समय वे कौवे की तरह बेहद उदास-से अपने कमरे का दरवाज़ा बन्द किये बैठे थे।

माता-पिता ने निकीता से कहा कि अगर वह बड़ी प्रार्थना में जाना चाहता है, तो अत्योम को ढूँढ़कर उसे बग़्घी में अफ़ोडिट घोड़ी जोतने के लिए कह दे। इस घोड़ी के चारों सुमों की नालबन्दी कर दी गई थी। निकीता को बताया गया कि उसे अन्धेरा होने से पहले घर से जाना होगा और वासीली निकीत्येविच के एक पुराने दोस्त प्योत्र पेत्रोविच देव्यातोव के यहां रात बितानी होगी। प्योत्र पेत्रोविच देव्यातोव की कोलोकोल्त्सोव्का गांव में परचूनी की दुकान थी। मां ने साथ में यह भी जोड़ दिया—“संयोगवश उनके घर में बहुत-से बालक हैं और तुम यहां हर समय अकेले ही रहते हो। तुम्हारे लिए यह हानिकारक है।”

झुटपुटा होने पर निकीता लंबे-तड़ंगे अत्योम की बग़ल में बग़्घी में जा बैठा। अत्योम छिद्रोंवाले पुराने कोट पर नई पेट्टी बांधे था। “हां, तो ले चल हमें, भगवान तेरा भला करे,” अत्योम ने लगाम सम्भालते हुए घोड़ी से कहा। बूढ़ी और भारी कूल्होंवाली अफ़ोडिट सिर झुकाये हुए दुलकी चाल से चल दी।

बग़्घी अहाते से बाहर आई, लुहारख़ाने के पास से गुज़री और पायदान को छूते हुए पानी में से उसने खड्ड को पार किया। किसी कारणवश अफ़ोडिट अपना सिर घुमा घुमाकर अत्योम को देखती जाती थी।

आकाश की नीलिमा उन डबरों में प्रतिबिम्बित हो रही थी जिनपर बर्फ़ की पतली-सी तह जमी हुई थी। घोड़ी के सुमों के नीचे बर्फ़ कचकचाती हुई टूटती थी और बग़्घी खड़खड़ा रही थी। अत्योम उदासी भरी चुप्पी साधे और मुंह लटकाये बैठा था। वह दुन्याशा के प्रति अपने असफल प्यार के बारे में सोच रहा था। हरे हरे आकाश में, डूबते सूरज की छोटी-सी लाल पट्टी के ऊपर एक सितारा चमक रहा था—बर्फ़ के एक टुकड़े की भांति।

प्योत्र पेत्रोविच के बच्चे

लोहे के एक चक्र के सहारे छत के साथ एक लैम्प टंगा हुआ था। नीली रोशनीवाली उसकी बत्ती नीची थी और इस तरह उसकी रोशनी बहुत ही हल्की-हल्की थी और उससे मिट्टी के तेल की गन्ध आ रही थी।

फर्श पर दो विस्तर बिछे हुए थे, पंखों वाले और कपड़े से ढके हुए। उनसे घर की और लड़कों के तन की गन्ध आ रही थी। इन्हीं विस्तरों पर निकीता और प्योत्र पेत्रोविच के छः बेटे — वोलोद्या, कोल्या, ल्योश्का, ल्योन्का उर्फ रोंदू और दो सबसे छोटे बेटे, जिनके नामों में निकीता को कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेटे हुए थे।

बड़े लड़के धीरे-धीरे गपशप कर रहे थे। रोंदू ल्योन्का की बार-बार खबर ली जाती। कभी उसका कान उमेठा जाता, तो कभी उसके सिर पर चपत जमाई जाती ताकि वह रोये नहीं। छोटेवाले लड़के सो रहे थे, उनकी नाकें पंख के विस्तरों में धंसी हुई थीं।

प्योत्र पेत्रोविच का सातवां बच्चा था — बेटी आन्ना। वह निकीता की हमउम्र थी। चित्तियों से भरा चेहरा, पक्षी की आंखों के समान गोल-गोल आंखें जिनमें मुस्कान की झलक तक नहीं थी और चित्तियों से भरी हुई नाक — ऐसी थी आन्ना। जब-तब वह लड़कों के कमरे के दरवाजे के सामने दबे पांव आती। तभी लड़कों में से कोई न कोई उससे कहता —

“आन्ना, भाग जाओ यहां से, वरना मैं अभी उठता हूं...”

और आन्ना जैसे दबे पांव आती थी, वैसे ही लौट जाती थी। घर में खामोशी थी।

प्योत्र पेत्रोविच गिरजे का संरक्षक था और इसलिए शाम होते ही वहां चला गया था। उसकी पत्नी मारिया मिरोनोव्ना ने बच्चों से कहा —

“तुम ज़रा शोर तो करके देखो, तुम्हारे सिर न क्लम कर दिये, तो कहना...”

वह सुबह की बड़ी प्रार्थना के पहले कुछ आराम करने के लिए लेट गई। लड़कों को आदेश दिया गया कि वे लेटे रहें, भागें-दौड़ें नहीं। गोल चेहरा, माथे पर लहराती हुई एक जुल्फ और सामनेवाले दांत गायब, ऐसा था यह ल्योश्का जो कोई क्रिस्ता सुना रहा था।

“पिछले ईस्टर में हमने अंडे लुढ़काने का खेल खेला। मैंने दो सौ अंडे जीते। मैं एक के बाद एक अंडा खाता गया, हत्ता कि मेरा पेट गुब्बारे की तरह फूल गया।”

आन्ना को शंका हुई कि निकीता कहीं यक़ीन ही न कर ले, इसलिए वह दरवाजे के पीछे से झटपट बोली —

“झूठ बोल रहा है। आप इसकी बात पर विश्वास न कर लीजिये।”

“भगवान की कसम, मैं अभी उठकर तुम्हारी खबर लेता हूं,” ल्योश्का ने उसे धमकाया।

दरवाजे के पीछे खामोशी छा गई।

सांवला, घुंघराले बालोंवाला सबसे बड़ा लड़का वोलोद्या विस्तर में उकड़ूं बैठते हुए बोला —

“कल हम गिरजाघर में जाकर घंटे बजायेंगे। जब मैं घंटा बजाने लगता हूँ, तो सारा घंटाघर ही कांपने लगता है। छोटी घंटियाँ तो मैं बायें हाथ से बजाता हूँ। वे टनटन करती हैं और अपने इस दायें हाथ से बड़ा घंटा बजाता हूँ जो जोर से टन-टोन, टन-टोन करने लगता है। बड़े घंटे का वजन एक लाख पूड* है।”

“झूठ है,” दरवाजे के पीछे से फुसफुसाहट सुनाई दी।

वोलोद्या ऐसे तेजी से मुड़ा कि उसके घुंघराले बाल लहरा उठे।

“आन्ता!”

“और हमारे पिता जी इतने ताकतवर हैं कि कुछ पूछो ही नहीं,” वोलोद्या कहता गया। “वे घोड़े को अगली टांगों से ऊपर उठा सकते हैं... मैं तो खैर अभी ऐसा नहीं कर सकता। पर यदि तुम गर्मियों में हमारे यहां आओ तो हम तुम्हें अपने तालाब पर ले चलेंगे। छः कोस लम्बा है हमारा तालाब। मैं वृक्ष की सबसे ऊंची चोटी पर चढ़कर वहां से सिर के बल पानी में छलांग लगा सकता हूँ।”

“और मैं सांस रोक कर पानी के नीचे रह सकता हूँ और देख सकता हूँ,” ल्योश्का ने कहा। “पिछली गर्मियों में हम वहां जाकर नहाते रहे और मेरे सिर में ये बड़े-बड़े कीड़े, पिस्सू और गुबरैले हो गये थे।”

“झूठा,” दरवाजे के पीछे से हल्की-सी फुसफुसाहट बामुश्किल सुनाई दी।

“आन्ता, मैं तुम्हारी चोटी पकड़कर खींचूंगा!”

“लड़की क्या है, निरी मुसीबत है,” वोलोद्या ने खीझ कर कहा। “वह हर वक्त हमारे मामलों में टांग अड़ाती रहती है, निरी मुसीबत है और फिर मां से शिकायत भी करती है कि हम उसकी पिटाई करते हैं।”

दरवाजे के पीछे से सिसकी सुनाई दी। तीसरा लड़का, कोल्या, अपनी मुट्ठी पर सिर टिकाये करवट लेकर लेटा हुआ था। वह अपनी दयालु और कुछ कुछ उदास-उदास आंखों से लगातार नikiता को ताक रहा था। उसका चेहरा लम्बूतरा था और उसपर शान्ति झलक रही थी। उसकी नाक के सिरे और ऊपरवाले होंठ के बीच बहुत जगह थी। नikiता ने जब उसकी ओर देखा तो वह आंखों ही आंखों में मुस्कराया।

“आपको तैरना आता है?” नikiता ने पूछा।

कोल्या की आंखों में मुस्कान खिल उठी। वोलोद्या ने उपेक्षा के अन्दाज में कहा—

“यह तो बस किताबें ही पढ़ा करता है। गर्मियों में यह छत पर रहता है, तम्बू लगाकर—हां, हां, छत पर तम्बू में। यह वहां लेटकर पढ़ता रहता है। पिता जी उसे तालीम दिलाने के लिए शहर भेजना चाहते हैं। मैं दूकान का काम-काज सम्भालूंगा। ल्योश्का तो अभी छोटा है, इसलिए कुछ दिन और खेल-कूद ले। हमारे लिए सबसे बड़ी सिरदर्दी तो बना हुआ यह

रोंदू," उसने ल्योन्का के सामनेवाले बाल खींचे, "बड़ा ही निकम्मा लड़का है यह। पिता जी का कहना है कि इसके पेट में कीड़े हैं।"

"नहीं, नहीं, उसके पेट में ऐसा कुछ नहीं है। कीड़े तो मेरे पेट में हैं," ल्योन्का ने कहा। "क्योंकि मैं फलियां और बबूल के फल खाता रहता हूं। मैं तो मेढक के बच्चे भी खा सकता हूं।"

"झूठा," दरवाजे के पीछे से फिर धीमी-सी आवाज सुनाई दी।

"अब तुम बचकर नहीं जा सकोगी, आन्ना," ल्योन्का उछलकर खड़ा हुआ और दरवाजे की तरफ भागा। रास्ते में उसने सोये हुए बच्चे से ठोकर खाई। बच्चा जागा नहीं, और नींद में ही कुनमुना कर रह गया। ऐसे प्रतीत हुआ मानो बरामदे में हवा के साथ पत्ते उड़े जा रहे हों। आन्ना का कहीं नाम-निशान ही नहीं था। दूरी पर दरवाजा चरमराया।

ल्योन्का ने लौट कर कहा—

"वह मां के पास भाग गई है। खैर, कोई बात नहीं, मुझसे बचकर कहां जायेगी। मैं इसका दिमाग ठिकाने करके ही दम लूंगा।"

"बेकार उसे परेशान नहीं करो, ल्योन्का," कोल्या ने कहा। "क्यों उसके पीछे पड़े रहते हो?"

ल्योन्का, बोलोद्या और यहां तक कि ल्योन्का रोंदू भी उसपर बरस पड़े—

"हम उसके पीछे नहीं पड़े रहते! वही हमारे सिर पर सवार रहती है। हजार कोस दूर चले जाने पर भी अगर घूमकर देखोगे तो उसे अपने पीछे-पीछे पाओगे।] हर चीज में मीन-मेख निकालती रहती है—हम झूठ बोलते हैं, जो कुछ कहा जाता है वह नहीं करते हैं..."

"एक बार मैं दिन भर सरकंडों के बीच छिपकर पानी में बैठा रहा ताकि मुझे इसकी सूरत न नज़र आये। जोंकें मुझे नोच-नोचकर खाती रहीं।"

बोलोद्या ने कहा—

"जब हम खाना खाने बैठे तो उसने फ़ौरन मां को बताया—'बोलोद्या ने चूहा पकड़ा है जो उसकी जेब में है।' उसे क्या मालूम कि मेरे लिए चूहा दुनिया की सबसे प्यारी चीज है।"

ल्योन्का रोंदू ने कहा—

"वह हमेशा खड़ी-खड़ी ऐसे लगातार देखती रहती है कि आदमी रोने लगता है।"

आन्ना के बारे में निकीता से शिकायत करते हुए लड़के बिल्कुल भूल ही गये कि उन्हें प्रार्थना से पहले चुपचाप लेटे रहने और बातें न करने का आदेश दिया गया था। अचानक उन्हें दूर से मारिया मिरोनोव्ना की भारी-भरकम आवाज सुनाई दी। उसने डांटते हुए कहा—

"मुझे क्या हजार बार तुम लोगों से कहना होगा!..."

लड़के फ़ौरन खामोश हो गये। फिर कानाफूँसी करते और एक-दूसरे को कोहनियाते हुए उन्होंने अपने बूट और भेड़ की खाल के छोटे कोट पहने, गले में गुलूबन्द लपेटे और सड़क पर भाग गये।

मारिया मिरोनोव्ना प्लश का बना हुआ नया कोट पहने और गुलाबों के छापेवाली शॉल ओढ़े हुए बाहर आई। बड़ी-सी शॉल में लिपटी-लिपटायी आन्ना अपनी मां का हाथ पकड़े थी।

सितारों भरी रात थी। हवा में मिट्टी और पाले की गंध थी। काले-काले झोंपड़ों के करीब से मर्द, औरतें और बच्चे गिरजाघर को चले जा रहे थे। डबरों के ऊपर जमी हुई बर्फ की तह उनके पैरों के नीचे कचकचा रही थी। दूरी पर, बाज़ार चौक में आकाश को छूता हुआ गिरजे का सुनहरा गुम्बज नज़र आ रहा था। गुम्बज के नीचे तीन पंक्तियों में दीपक जल रहे थे। मन्द-मन्द हवा के झोंके दीप-शिखाओं को सहला रहे थे।

मन की दृढ़ता

प्रार्थना के बाद वे घर लौटे। मेज़ पर रखे मीठे और ईस्टर के केकों और दीवार पर भी कागज़ी गुलाब लगे थे। खिड़की के करीब लटके हुए पिंजरे में एक कानरी चिड़िया चहचहा रही थी। वह लैम्प की रोशनी से परेशान थी। लम्बा और काला कोट पहने हुए प्योत्र पेत्रोविच अपनी तातारी मूंछों के बीच से मुस्कारा रहे थे। उनकी ऐसी ही आदत थी। उन्होंने छोटे-छोटे गिलासों में सभी के लिए चेरी की हल्की शराब डालनी शुरू की। लड़कों ने अंडे तोड़ने और चमचे चाटने शुरू किये। मारिया मिरोनोव्ना इतनी अधिक थकी हुई थी कि शॉल उतारे बिना ही बैठ गई। वह तो तब तक खा-पी और अन्य कोई काम भी नहीं कर सकती थी, जब तक कि बालक, जिन्हें वह गुट्ट कहती थी, पूरी तरह शान्त नहीं हो जाते।

निकीता लैम्प की नीली रोशनी के नीचे भेड़ की खाल का कोट ओढ़कर बिस्तर पर लेटा ही था कि बारीक आवाज़ और गम्भीर ढंग से गाये जानेवाले ये शब्द उसके कान में गूँजने लगे—“ईसा मसीह पुनर्जीवित हो गये हैं। उन्होंने मरकर मृत्यु पर विजय पा ली है...” फिर से उसे तख्तों की सफ़ेद दीवार दिखाई दी, उसने सोने के पतरे जड़े चौखटोंवाली देव-प्रतिमाओं के सामने असंख्य मोमवत्तियां जलती देखीं। उसे अपने ऊपर काफ़ूर के धुएं के बादलों के बीच से गिरजे के गुम्बज की सितारों जड़ी नीलिमा के नीचे पंख फैलाये हुए एक कबूतरी नज़र आई। जाली लगी हुई खिड़कियों के बाहर रात थी, भजन गूँज रहा था, भेड़ की खालों और लाल रंग के घटिया कपड़े की गन्ध आ रही थी। मोमवत्तियों की रोशनी हजारों आंखों में प्रतिबिम्बित हो रही थी। पश्चिम की ओर के दरवाज़े खुले और ध्वजवाहकों ने प्रवेश किया। अन्दर आने से पहले वे दरवाज़े पर रुके। इस रात को साल भर के दौरान किये गये गुनाह माफ़ हो गये। चित्तियों से भरी नाकवाली आन्ना कानों के ऊपर दो नीली बो लगाये हुए अपने भाइयों को चूमने के लिए झुकी...

अगली सुबह धुंधली थी, गर्म थी। घंटियां टनटन बजती हुई पर्व के शुभ समाचार की सूचना दे रही थीं। निकीता और प्योत्र पेत्रोविच के सभी बच्चे, सबसे छोटे भी, गांव के पंचायती खलिहान में गये। लोग रंग-विरंगे कपड़े पहने थे और भारी भीड़ के कारण काफ़ी शोर मचा

हुआ था। लड़के तरह-तरह के खेल खेल रहे थे। लड़कियां शोख रंगों की शॉलें ओढ़े और फूली हुई नई सूती फ़ार्कें पहने हुए खत्ती की दीवारों के करीब बैठी थीं। हरेक के हाथ में सूरजमुखी के बीजों, किशमिश और अंडों से भरा हुआ रुमाल था। वे आते-जाते राहगीरों को देखती और हंसती-चहकती हुई बीज छील छीलकर खा रही थीं।

पंच का बांका-छैला बेटा पेत्या कुन्दों के ढेर के सिरे पर बड़ी शान से टेक लगाये बैठा था। वह अपने पैर सामने की ओर फैलाये हुए था ताकि उसके बढ़िया-कीमती जूतों पर सभी की नज़र पड़े। वह किसी की ओर भी ध्यान दिये बिना अकार्डियन के पदों पर योंही उंगलियां चला रहा था। अचानक वह रंग में आया और उसने एक प्यारी-सी लोक-धुन बजानी शुरू कर दी।

एक अन्य दीवार के पास बहुत-से लड़के घेरा बनाकर खड़े थे और 'टाँस' का खेल खेल रहे थे। उनमें से प्रत्येक की मुट्ठी में ताँबे के ढेर-सारे सिक्के थे। जिस लड़के की 'टाँस' करने की बारी होती, वह पांच कोपेक का सिक्का नीचे फेंकता, उसे एड़ी से दवाता, फिर बूट के पंजे से रगड़कर उसे चमकाता, ठोकर लगाकर बाहर निकालता और फिर उसे हवा में उछालकर कहता — "हेड या टेल?"

निकट ही मैदान में, जहां पिछले साल की घास में से नवनीत-पुष्प निकल आये थे, बैठी हुई लड़कियां "अंडे खोजो" का खेल खेलने में मस्त थीं। इस खेल के अनुसार भूसे की टाल को दो भागों में बांट दिया जाता है। एक भाग में अंडे छिपाये जाते हैं। विरोधी दल की लड़कियों को यह अनुमान लगाना होता है कि भूसे के किस हिस्से में अंडे छिपाये गये हैं।

निकीता "अंडे खोजो" का खेल खेलनेवाली लड़कियों के दल के पास गया और उसने अपनी जेब से अंडा निकाला। उसी समय उसे अपने पीछे आन्ना की फुसफुसाहट सुनाई दी। न जाने वह कहां से इस जगह आ टपकी थी।

"सुनिये, आप इनके साथ नहीं खेलियेगा। ये आपको धोखा देकर अंडे हथिया लेंगी।"

आन्ना ने अपनी मुस्कानहीन गोल-गोल आंखों से निकीता की ओर देखा और चित्तियोंवाली नाक से सूं-सूं की। तब निकीता लड़कों के पास गया जो सीसे भरी हड्डियों से खेल रहे थे। आन्ना यहां भी आ टपकी और फुसफुसाई —

"इनके साथ मत खेलियेगा। मैंने इनकी बातें सुन ली हैं। वे आपको धोखा देंगे।"

निकीता जहां भी जाता, आन्ना हवा में उड़ते हुए पत्ते की तरह उसके पीछे-पीछे जा पहुंचती और कानों में फुसफुसाती रहती। निकीता समझ नहीं पा रहा था कि वह ऐसा क्यों करती है। उसे बड़ी परेशानी हो रही थी, शर्म आ रही थी। उसने देखा कि लड़के उसे घूरने और उसपर फब्तियां कसने लगे हैं।

"लड़की के साथ खेलता है!" एक चिल्लाया।

निकीता ठंडे और नीले तालाब की ओर चला गया। खड़े तट के गढ़ों में अभी तक पिघली हुई गन्दी बर्फ़ नज़र आ रही थी। दूरी पर निपत्ते वृक्षों के शुरुमुट में कौवे चक्कर काटते हुए कांय-कांय कर रहे थे...

“सुनिये,” आन्ना फिर उसके पीछे फुसफुसाई, “मैं जानती हूँ कि धानीमूष कहां रहता है। आप उसे देखना चाहते हैं?”

निकीता ने घूमकर देखे बिना ही गुस्से से सिर हिला दिया।

“कसम खाती हूँ। अगर झूठ बोलूँ तो मेरी आंखें फूट जायें। आप धानीमूष को क्यों नहीं देखना चाहते?”

“नहीं चाहता।”

“अच्छा तो यह चाहते हैं कि हम नवनीत-पुष्प तोड़कर आंखों पर मलें ताकि हमें कुछ भी नज़र न आये?”

“नहीं, मैं नहीं चाहता।”

“तो यूँ कहिये कि आप मेरे साथ खेलना नहीं चाहते?...”

आन्ना ने अपने होंठ दबाये, तालाब की लहरियोंवाली सतह में झांका, उसकी कसी हुई चोटी हवा से एक ओर को उड़ गई, चित्तियोंवाली उसकी नाक का सिरा लाल हो गया, उसकी आंखें डबडबा आईं और वह पलकें मिचमिचाने लगी। अब निकीता सारी बात समझ गया। आन्ना सुबह से उसके पीछे-पीछे इसीलिए भागी फिर रही थी कि उसे निकीता के बारे में वैसी ही अनुभूति हो रही थी जैसी निकीता को लील्या के सम्बन्ध में हुई थी।

निकीता जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाता हुआ खड़े तट की ओर चला गया। अगर अब भी आन्ना उसके पीछे-पीछे आती, तो वह पानी में कूद जाता। उसे इतनी अधिक परेशानी हो रही थी, इतनी शर्म आ रही थी। लील्या के सिवा वह और किसी से भी अजीब-से शब्दों का आदान-प्रदान नहीं कर सकता था, खास अन्दाज़ में नज़रें नहीं मिला सकता था, मुस्करा नहीं सकता था। किसी और लड़की के साथ ऐसा करना तो सरासर बेहयाई होती, विश्वासघात होता।

“लड़कों ने आपके कान भर दिये कि आप मुझसे दूर रहें,” आन्ना ने कहा, “मैं मां से सब कुछ कह दूंगी... मैं अकेली ही खेलूंगी... बड़ी परवाह पड़ी है मुझे आप लोगों की... मुझे मालूम है कि कहां एक चीज़ छिपी हुई है... बहुत ही दिलचस्प है यह चीज़...”

निकीता ने मुड़कर नहीं देखा। उसे आन्ना की बुदबुदाहट सुनाई देती रही, मगर उसने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। उसका दिल कठोर हो चुका था।

वसन्त

सूरज की ओर देख पाना अब मुमकिन नहीं था। वह तो आकाश से आग बरसाने लगा था। गहरे नीले आकाश में तैरते हुए बादल बर्फ़ के ढेर जैसे लग रहे थे। वसन्ती समीर में ताज़ा घास और पक्षियों के घोंसलों की गंध घुली मिली हुई थी।

घर के सामने सहकते हुए पोपलार पर बड़े बड़े अंकुर फूटने लगे थे। मुर्गियां धूप में कुड़-कुड़ करती फिर रही थीं। बगीचे में सड़े हुए पत्तों की तह में से हरी-हरी घास निकल आई थी। सारा मैदान छोटे-छोटे सफ़ेद और पीले सितारों से भर गया था। बगीचे में पक्षियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती जाती थी। काले पक्षी वृक्षों के तनों के इर्द-गिर्द मंडराते थे, बड़े मजे से चलते थे। ओरिओल पक्षियों ने लाइम वृक्षों में अपने घोंसले बना लिये थे। ये बड़े बड़े हरे पक्षी होते हैं और इनका नीचेवाला भाग पीला होता है जो उनके पंखों के नीचे सोने की तरह चमकता रहता है। वे इधर-उधर उड़ते हुए अपनी मीठी आवाज़ में चहक रहे थे।

जैसे ही सूरज निकलता छतों और ओसारों में बैठी हुई मैनाएं जाग उठतीं और पक्षियों के सहगान में अपनी तरह तरह की आवाज़ें मिला देतीं। वे कभी बुलबुलों की नक़ल करतीं तो कभी भरद्वाज पक्षियों की और कुछ अफ़्रीकी पक्षियों की, जिनकी आवाज़ें उन्होंने जाड़े के दिनों में सुनी थीं जब वे विदेशों में थीं। वे बहुत ही कर्णकटु और भयानक आवाज़ों में चीखतीं, दूसरे पक्षियों का मज़ाक़ उड़ातीं। पारदर्शी भोजवृक्षों के बीच से उड़ती हुई कठफोड़वा चिड़िया भूरे रंग के धब्बे जैसी लग रही थी। वह एक तने पर जा बैठी, उसने अपने इर्दगिर्द नज़र दौड़ाई और अपनी लाल कलगी ऊंची की।

रविवार की एक धूप नहाई सुबह को तालाब किनारे के ओस भीगे वृक्षों पर बैठी हुई कोयल ने अपना अलाप शुरू किया। वह अपनी उदासीभरी, टीसती और कोमल आवाज़ में कीड़ों से लेकर बगीचे की हर जानदार चीज़ को अपनी शुभकामना देती हुई कह रही थी—

“जियो, प्यार करो, खुश रहो, कू-कू! मगर मैं अकेली रहती हूँ, किसी को परेशान नहीं करती, कू-कू!...”

सारा बगीचा दम साधकर कोयल का गान सुनता रहा। गुवरैले और पक्षी तथा सदा आश्चर्यचकित रहने और सड़क तथा छज्जे की पैड़ियों पर पेट के बल रेंगनेवाले मेढक अपने अपने भाग्य का अनुमान लगाने की कोशिश करते। कोयल का गीत ख़त्म होते ही बगीचे की आवाज़ों में रंगीनी आ गई और पत्ते सरसराने लगे।

एक दिन निकीता ऊपरी तालाब के किनारे पर बैठा था, हाथों के बीच ठुड़ी टिकाये हुए। वह हरे भरे समतल चरागाह में घोड़ों के एक झुण्ड को देख रहा था। बांके बधिया घोड़े अपनी पूंछों को लहराते और सिर नीचा किये हुए छोटी-छोटी घास चर रहे थे। घोड़ियां इस बात की तसल्ली करने के लिए कि उनके बछेरे पीछे-पीछे ही आ रहे हैं, मुड़मुड़ कर देखतीं। पिण्डाकार घुटनों और पतली-पतली टांगों वाले बछेरे मानो इस बात से डरते हुए कि कहीं अपनी माताओं से बिछुड़ न जाएं, उनके इर्दगिर्द ही फुदकते फिर रहे थे। जब-तब वे अपनी पूंछें ऊपर को उठाकर अपनी माताओं के स्तनों से दूध पीते। वसन्त के ऐसे सुहाने दिन दूध पीने में भी बड़ा मज़ा था!

तीन साल की घोड़ियां झुण्ड से अलग होकर हिनहिनातीं, उछलतीं-कूदतीं, चौपैरी छलांगें लगातीं और सिरों को झटकती हुई मैदान के गिर्द चक्कर लगातीं। इनमें से कोई घास पर

लोटने-पोटने लगती, कोई अपने दांत निपोरती, हिनहिनाती और किसी अन्य घोड़ी को काटने की कोशिश करती।

कनवास का कोट पहने हुए वासीली निकीत्येविच बांध के पास से जाने वाली सड़क पर दो पहिया बग़्गी दौड़ाते हुए गुज़रे। उनकी दाढ़ी एक ओर को उड़ रही थी, वे खुशी से आंखें सिकोड़े हुए थे और उनके गाल पर कीचड़ का एक धब्बा लगा हुआ था। निकीता को देखकर उन्होंने अपने घोड़े को रोका।

“इस झुण्ड में से कौनसा घोड़ा तुम्हें सबसे अधिक पसन्द है?”

“आप मुझसे यह क्यों पूछ रहे हैं?”

“सभी तरह के ‘क्यों’ के बिना जवाब दो।”

निकीता ने भी अपने पिता की तरह आंखें सिकोड़ीं और काले-कथई ‘क्लोपिक’ घोड़े की ओर संकेत किया। निकीता बहुत देर से इसी घोड़े पर नज़र टिकाये हुए था, क्योंकि वह बहुत भला था, विनम्र था और उसका मुँह असाधारण रूप से दयालु था।

“वह।”

“बहुत खूब! करते रहो पसन्द!”

वासीली निकीत्येविच ने एक आंख सिकोड़ी, चटखारा भरा, लगामें हिलाई और जानदार घोड़ा समतल सड़क पर दो पहिया बग़्गी को आसानी से खींच ले चला। निकीता, दूर जाते हुए अपने पिता को देख रहा था। वह सोच रहा था कि पिता जी ने अगर यह सवाल पूछा है तो इसकी तह में जरूर कोई बात है।

झण्डा लहराया गया

गौरियों के शोर से निकीता की आंख खुली। जागने पर उसे ओरिओल पक्षी की मधुर आवाज़ सुनाई दी जो पानी के नीचे बजाई जानेवाली सीटी के समान थी। खिड़की खुली थी, कमरे में घास और ताज़गी की गन्ध थी और भीगे हुए पत्ते सूरज की किरणों को गुज़रने से रोक रहे थे। प्यारी-प्यारी हवा चल रही थी और खिड़की के दासे पर ओस की बूंदें गिर रही थीं। निकीता को बगीचे से अर्कादी इवानोविच की आवाज़ सुनाई दी—

“एडमिरल साहब, कब उठेंगे आप?”

“उठ रहा हूँ!” निकीता ने ऊंची आवाज़ में जवाब दिया, मगर फिर भी बिस्तर में कुछ क्षण और लेटा रहा। यह तो बहुत ही कमाल की चीज़ थी कि आंख खुलते ही ओरिओल पक्षी की मधुर आवाज़ सुनाई दी और खिड़की से बाहर भीगी हुई वनस्पति नज़र आई।

आज ११ मई थी, निकीता का जन्मदिन था। तालाब पर झण्डा लहराकर यह दिन मनाया जानेवाला था। निकीता ने बड़े इत्मीनान से (वह नहीं चाहता था कि समय जल्दी से बीते) नीली पृष्ठभूमि पर फूलों के छापे वाली नई क्रमीज़ और नई बिरजस पहनी। यह बिरजस इतनी

मजबूत थी कि वह वृक्ष की किसी भी शाख पर लटक सकता था और उसके फटने का कोई डर नहीं था। अपने से खुद ही खुश होते हुए उसने दांत साफ़ किये।

खाने के कमरे में बर्फ़ जैसे सफ़ेद मेज़पोश से ढकी हुई मेज़ पर लिली फूलों का एक बड़ा-सा गुच्छा रखा हुआ था। सारा कमरा उनकी खुशबू से महका हुआ था। मां ने निकीता को अपने निकट खींच लिया और उसकी एडमिरल की उपाधि की ओर ध्यान न देते हुए देर तक उसका मुंह थपथपाती और चूमती रही मानो एक बरस बाद उससे मिल रही हो। निकीता के पिता ने अपनी दाढ़ी थपथपाई, आंखें फाड़-फाड़कर निकीता की ओर देखा और अपनी रिपोर्ट पेश की —

“महामहिम, मुझे आपसे यहाँ निवेदन करने का सम्मान प्राप्त है कि जार्जियाई कैलेंडर की सूचना और दुनिया के खगोलशास्त्रियों द्वारा लगाये गये हिसाब के अनुसार आज आप दस वर्ष के हो गये हैं। इस अवसर पर मैं आपको बारह फलोंवाला एक कलमतराश चाकू भेंट करता हूँ जो नाविकों के कार्यों के लिए या खो देने के लिए भी बहुत उपयुक्त है।”

नाश्ता करने के बाद वे तालाब पर गये। वासीली निकीत्येविच ने बड़ी शान से गाल फुलाते हुए सीटी द्वारा नौसेना की एक धुन बजाई।

मां, वासीली निकीत्येविच को देखकर खूब जोर से हंसी। उसने अपने लहंगे के छोर ऊपर उठा लिये ताकि वे घास पर पड़ी ओस से गीले न हो जायें। इनके पीछे-पीछे आ रहे थे अर्कादी इवानोविच कंधे पर चप्पू और कांटा लगा बांस रखे हुए।

विराट और चक्करदार तालाब के किनारे पर स्नानगृह की बगल में झण्डा लहराने के लिए एक बांस गाड़ा गया था जिसके सिरे पर एक गोला लगा हुआ था। नाव किनारे के पास खड़ी थी, उसकी लाल और हरी धारियां पानी में प्रतिबिम्बित हो रही थीं। नाव की छाया में तालाब के जीव-जन्तु — जल-गुवरैले, कीड़े-मकोड़े और मेढक के बच्चे — तैरते फिर रहे थे। गद्दीदार पैरोंवाली मकड़ियां पानी की सतह पर भागी फिर रही थीं। विल्लो वृक्षों में अपने घोंसलों में बैठे हुए रूक पक्षी इन्हें ध्यान से देख रहे थे।

वासीली निकीत्येविच ने रस्सी के निचले सिरे के साथ एडमिरल का व्यक्तिगत झण्डा बांधा। यह झण्डा था हरे मैदान में पिछली टांगों पर खड़ा हुआ लाल मेढक। वासीली निकीत्येविच ने अपने गाल फुलाकर रस्सी को ऊपर की ओर खींचना शुरू किया। यह झण्डा भी ऊपर को चढ़ता गया और सिरे पर बंधे गोले के पास जाकर खुल गया। विल्लो वृक्षों पर बैठे हुए रूक पक्षी डरकर और शोर मचाते हुए उड़ गये।

निकीता ने नाव में जाकर पतवार सम्भाली। अर्कादी इवानोविच ने चप्पू हाथ में लिये। नाव गहरे पानी में बढ़ी, ज़रा डोली और फिर तट से दूर हटती हुई तालाब की शीशे जैसी निर्मल सतह पर तैरने लगी। तालाब की इस सतह पर विल्लो वृक्ष, उनकी हरी परछाइयां, पक्षी और बादल प्रतिबिम्बित हो रहे थे। नाव धरती और आकाश के बीच तैर रही थी। दंशों

का एक बादल-सा निकीता के सिर पर मंडराने लगा। वे जमघट-सा बनाकर नाव के पीछे-पीछे उड़ने लगे।

“जोर से, पूरे जोर से!” वासीली निकीत्येविच तट से चिल्लाये।

मां हाथ हिलाती हुई हंस रही थी। अर्कादी इवानोविच ने चप्पुओं पर झुकते हुए पूरा जोर लगाना शुरू किया। अचानक छोटे-छोटे हरे सरकंडों के बीच से टाँय-टाँय करती हुई दो बत्तखें सामने आईं—कुछ कुछ तैरती और डर से कुछ कुछ उड़ती हुई।

“मेढकों के एडमिरल, ये बचकर न जाने पायें! हुर्रा!” वासीली निकीत्येविच चिल्लाये।

जेल्टूखिन* नामक मैना

जेल्टूखिन ओसारे और घर की दीवार के बीचवाले एक कोने में थोड़ी-सी घास पर बैठी थी। वह धड़कते दिल से करीब आते हुए निकीता की ओर देख रही थी।

जेल्टूखिन का सिर उसकी पीठ पर टिका हुआ था। पीले सिरवाली उसकी चोंच गलगंड से चिपकी हुई थी। उसके पंख इधर-उधर बिखरे हुए थे और पंजे पेट के साथ सटे हुए थे। निकीता जब उस पर झुका तो उसे डराने के लिए जेल्टूखिन ने अपनी चोंच खोली। निकीता ने उसे अपने दोनों हाथों के बीच बन्दी बना लिया। यह मैना का बच्चा था, अभी तक भूरा-भूरा-सा। स्पष्टतः उसने घोंसले से बाहर उड़ने की कोशिश की थी मगर उसके अनसधे पंखों ने उसका साथ नहीं दिया था। वह जमीन पर गिर पड़ा था और कोने में जमीन के साथ लगे हुए कुकुरों के पत्तों के बीच जा बैठा था।

हताश नन्ही मैना का दिल जोर से धड़क रहा था। वह सोच रही थी—“मैं आह भी नहीं भर पाऊंगी कि यह मुझे हड़प जायेगा।” वह खुद भी कीड़ों-मकोड़ों, मक्खियों और तितली के लावों को हड़पना खूब जानती थी।

लड़के ने उसे अपने मुंह के पास किया। जेल्टूखिन की आंखों के सामने अंधेरा छा गया, पंखों के नीचे उसका दिल जोर से धक-धक करने लगा। मगर निकीता ने तो केवल फूंक मार कर उसका सिर सहलाया और घर ले गया। नन्ही मैना ने सोचा कि इस समय इसे भूख नहीं है और यह मुझे बाद को खायेगा।

अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना ने जब इस नन्ही मैना को देखा तो निकीता की तरह उसे अपने हाथ में लेकर फूंक से उसका सिर सहलाया।

“बेचारी, बहुत ही छोटी-सी है,” मां ने कहा। “कैसी पीली चोंच है इस जेल्टूखिन की!”

मां-बेटे ने नन्ही-सी मैना को बगीचे में खुलनेवाली उस खिड़की के दासे पर बिठा दिया जिसके आगे मलमल की जाली लगी हुई थी। खिड़की के अन्दर वाली ओर भी आधी ऊंचाई

* रूसी धातु ‘जोल्ती’ से, जिसका अर्थ ‘पीला’ होता है, जेल्टूखिन शब्द बना है।—अनु०

तक मलमल से ढकी थी। जेल्लूखिन फ़ौरन कोने में जा दुबकी। इस तरह उसने यह ज़ाहिर किया कि वह आसानी से अपनी जान गंवाने को तैयार नहीं है।

बाहर सफ़ेद मलमल से परे पत्ते सरसरा रहे थे, झाड़ियों में चोर, बदमाश और घृणित गौरैयां आपस में लड़ रही थीं। दूसरी ओर से, मलमल के पीछे से ही निकीता नन्ही मैना को देख रहा था। उसकी आंखें बड़ी-बड़ी थीं, हिलडुल रही थीं, अनबूझ और आकर्षक थीं। “मैं मारी गई, मैं मारी गई,” जेल्लूखिन सोच रही थी।

शाम होने तक निकीता ने उसे नहीं खाया। उसने तो बस मलमल के ऊपर से मक्खियां और कीड़े गिरा दिये। “खिला-पिलाकर मोटा कर रहा है,” जेल्लूखिन ने सोचा और अपने सामने सांप की तरह बल खाते नेत्रहीन लाल कीड़े को तिरछी नज़र से देखा। “मैं इसे नहीं खाने की! यह असली कीड़ा नहीं है, कोई धोखा, कोई फ़रेब है।”

सूरज वृक्षों के पीछे डूब गया। जेल्लूखिन की आंखों में धुंधला-धुंधला, ऊंध लानेवाला अंधेरा घिर आया, मगर वह फिर भी दासे पर कसकर पंजे चिपकाये बैठी रही। कुछ देर बाद बिल्कुल अंधेरा हो गया। बगीचे में बैठे पक्षियों ने चुप्पी साध ली। सीलन और घास की प्यारी-प्यारी और नींद लानेवाली गंध फैली हुई थी। नन्ही मैना का सिर उसके पंखों के बीच अधिकाधिक नीचे होता जाता था। फिर उसने पंख फुलाकर अपनी सूरत भयानक बना ली ताकि अगर कोई उसपर झपटे तो आगा-पीछा सोचकर। तब उसने आगे और फिर पीछे की ओर झटके खाये और सो गई।

गौरैयां के शोर से जेल्लूखिन की आंख खुली। वे लाइलैक वृक्ष पर लड़ रही थीं। धुंधले-धुंधले प्रकाश में ओस भीगे पत्ते नीचे को लटके हुए थे। दूरी पर बड़ी मीठी, खुशीभरी आवाज़ में और चटखारा भरते हुए किसी मैना ने अपनी तान छेड़ दी।

“ओह, मेरा तो दम निकला जा रहा है, बड़ी भूख लगी है, मतली होती है,” जेल्लूखिन ने सोचा और उस कीड़े की ओर देखा जो खिड़की के दासे की दरार में आधा घुस चुका था। वह उस पर झपटी, दुम से पकड़कर उसने उसे बाहर खींच लिया और निगल गई। “कुछ बुरा नहीं, खासा मजेदार कीड़ा है,” उसने सोचा।

रोशनी में नीलिमा की झलक आ गई। पक्षी चहचहाने लगे। वृक्षों के पत्तों में से छनकर सूरज की चमकती हुई और प्यारी किरण जेल्लूखिन को सहलाने लगी। “तो अभी मैं कुछ समय तक और जिन्दा रह सकती हूँ,” जेल्लूखिन ने सोचा, इधर-उधर फुदकी, एक मक्खी को झपटा और निगल गई।

इसी समय पैरों की आहट सुनाई दी। निकीता खिड़की के करीब आया और उसने अपना बड़ा-सा हाथ मलमल की जाली के पार बढ़ाया। उसने मुट्ठी खोली और खिड़की के दासे पर मक्खियां और कीड़े-मकोड़े बिखरा दिये। जेल्लूखिन डरकर कोने में दुबक गई, उसने अपने पंख फैलाये और हाथ की ओर देखा। मगर हाथ उसके सिर के ऊपर मंडराता रहा और फिर

मलमल के पीछे गायब हो गया। जेल्लूखिन को फिर से वे अजीब-अजीब, बरबस खींचती हुई सी और रंग-विरंगी आंखें अपनी ओर देखती प्रतीत हुईं।

निकीता के जाने के बाद जेल्लूखिन ने अपने पंख संवारे और सोचने लगी – “बेशक वह मुझे खा सकता था, मगर उसने मुझे नहीं खाया। इसका मतलब यह है कि वह पक्षियों को नहीं खाता। तो अब डरने की कोई बात नहीं है।”

जेल्लूखिन ने खूब पेट भर कर खाया, अपने पंख संवारे, दासे पर इधर-उधर फुदकी और बाहर नज़र आनेवाली गौरैया की ओर देखा। उसे एक बूढ़ा चिड़ा दिखाई दिया जिसके सिर के बाल खस्ता हालत में थे। जेल्लूखिन उसे चिढ़ाने और अपना सिर आगे-पीछे करके सीटी बजाने लगी – “फूऊट, चिल्लीक-चिल्लीक, फूऊट।” चिड़ा गुस्से से लाल-पीला हो उठा, उसने अपनी छाती फुलाई और चोंच खोले हुए जेल्लूखिन पर झपटा। वह सीधा मलमल की जाली से जा टकराया। “मिल गया बच्चू को मज़ा!” जेल्लूखिन ने सोचा और खूब अकड़कर खिड़की के दासे पर इधर-उधर फुदकने लगी।

निकीता फिर से आया और उसने मलमल की जाली के पार अपना हाथ धुसेड़ा। मगर इस बार उसका हाथ खाली था और वह उसे पक्षी के बहुत निकट ले गया। जेल्लूखिन उछली और उसने अपनी पूरी ताकत से निकीता की उंगली पर चोंच मारी, उछलकर पीछे को हटी और मोर्चे लेने के लिये तैयार हो गई। मगर निकीता ने तो मुंह खोला और ठठाकर हंस दिया – “हा-हा-हा।”

इस तरह दिन गुज़र गया। डरने की कोई बात नहीं थी, खुराक बढ़िया थी, हां, कुछ ऊब जरूर महसूस हो रही थी। जेल्लूखिन ने बड़ी मुश्किल से दिन ढलने का इन्तज़ार किया और उस रात खूब मजे से सोई।

अगले दिन नाश्ता करने के बाद वह मलमल की जाली के पीछे से निकल भागने की सोचने लगी। उसने खिड़की के दासे का पूरा चक्कर लगाया, मगर उसे कहीं भी कोई सेंध नज़र न आई। वह उछलकर रक्काबी पर जा बैठी और पानी पीने लगी। उसने पानी से अपनी चोंच भर ली, अपने सिर को पीछे की ओर किया और पानी को निगला। एक छोटी-सी गोली उसके गले से नीचे लुढ़क गई।

दिन बहुत लम्बा था। निकीता कीड़े लाया और कलहंस के पंख से उसने दासे को साफ़ किया। इसके बाद गंजी चांदवाला चिड़ा किसी कौवे से भिड़ गया। कौवे ने ऐसा कसकर वार किया कि चिड़ा एक पत्थर की भांति पत्तों के बीच से नीचे गिरा और बिखरे-बिखराये बालों से उसने ऊपर को देखा।

न जाने क्यों, मगर एक मैगपाई तो खिड़की के बिल्कुल करीब आ गया, चहका, इधर-उधर फुदका और उसने पूंछ ऊपर-नीचे हिलाई। उसकी सारी हरकतें बड़ी बेतुकी-सी ही थीं।

एक पपीहा देर तक गाता रहा, बहुत मधुर स्वरों में, सूरज की प्यारी-प्यारी धूप और तिपतिया घास के बारे में। पपीहे का यह गीत सुनकर जेल्लूखिन बहुत उदास हो गई, उसके

गले में घरघराहट-सी हुई। वह भी गाना चाहती थी, मगर गाती तो कहां, खिड़की में, जाली के पीछे...

नन्ही मैना ने फिर से दासे का चक्कर लगाया। उसे एक बहुत ही खतरनाक जानवर नज़र आया। यह जानवर अपनी छोटी और गद्दीदार टांगों पर दबे पांव बढ़ा आ रहा था और उसका पेट फर्श को छू रहा था। उसका सिर गोल था, इक्की-दुक्की मूंछों के बाल तने हुए थे, आंखें हरी थीं और उसकी छोटी-छोटी पुतलियों में शैतान की झलक नज़र आ रही थी। जेल्लूखिन जहां की तहां ही बैठ गई, टस से मस भी न हुई।

बिल्ले वासीली वासील्येविच ने धीरे से छलांग लगाई और खिड़की के दासे के सिरे पर अपने पंजे जमा दिये। उसने मलमल की जाली में से जेल्लूखिन को घूरा और अपना मुंह खोला... हे भगवान! उसके मुंह में तो जेल्लूखिन की चोंच से लम्बे-लम्बे दांत थे... बिल्ले ने पंजा मारकर जाली फाड़ डाली... जेल्लूखिन का दिल बैठ गया, उसके पंख लटके-से गये... इसी समय, ऐन वक्त पर निकीता यहां आ गया। उसने बिल्ले को गर्दन की ढीली-ढीली चमड़ी से पकड़कर दरवाजे की ओर धकेल दिया। वासीली वासील्येविच गुस्से से म्याऊं-म्याऊं करता और दुम झुकाये हुए बाहर भाग गया।

“निकीता से ताकतवर और कोई जानवर नहीं है,” इस घटना के बाद नन्ही मैना ने सोचा। इसीलिये जब निकीता फिर अन्दर आया तो उसने उसे अपना सिर थपथपाने दिया, यद्यपि वह डर के मारे अपनी पूंछ पर ही बैठ गई थी।

इस तरह यह दिन भी गुज़र गया। अगली सुबह को नन्ही मैना बहुत खुश थी। उसने इधर-उधर घूम-घाम कर अपने इर्दगिर्द की जगह का निरीक्षण किया। पिछले दिन बिल्ले ने जाली में जो सूराख कर दिया था, उस पर फौरन उसकी नज़र पड़ी। जेल्लूखिन ने सूराख में से सिर बाहर निकाला, इधर-उधर देखा, बाहर निकली, हल्की-हल्की हवा की धारा में कूदी और जोर-जोर से अपने पंख फड़फड़ाती हुई फर्श से ज़रा ऊपर उड़ने लगी।

दरवाजे के पास पहुंचकर वह उड़ती हुई दूसरे कमरे में जा पहुंची। वहां उसने एक गोल मेज़ के गिर्द चार लोगों को बैठे देखा। वे नाश्ता कर रहे थे, खुराक के बड़े-बड़े टुकड़े अपने मुंह में डालते जा रहे थे। चारों व्यक्ति नन्ही मैना की ओर मुड़े और उसे निश्चल देखने लगे। जेल्लूखिन समझ गई कि उसे अपनी उड़ान जारी न रखकर फौरन मुड़ना चाहिये। मगर उड़ते हुए वह यह कठिन काम न कर सकी, एक पंख पर गिरी, सीधी हुई और मुख्बे के छोटे-से मर्तबान और शकरदानी के बीच बैठ गई। तभी उसे निकीता अपने सामने बैठा दिखाई दिया। जेल्लूखिन ने न कुछ सोचा, न विचारा, फुदककर मुख्बे के मर्तबान और फिर निकीता के कंधे पर जा बैठी। उसके रोयें तन गये और आंखों पर सफ़ेद झिल्ली छा गई।

वह कुछ देर तक निकीता के कंधे पर बैठी रही, फिर उसने छत के करीब उड़ान भरी, एक मक्खी पकड़ी और कोने में रखे गमले पर जा बैठी और फिर फ़ानूस के गिर्द चक्कर लगाया।

उसे भूख महसूस होने लगी और वह उड़कर अपनी खिड़की में वापिस चली गई जहां उसके लिये और कीड़े तैयार थे।

शाम को निकीता लकड़ी का बना हुआ छोटा-सा घर ले आया। उसमें ओसारा भी था, दरवाजा भी और दो खिड़कियां भी। यह घर उसने दासे पर रख दिया। जेल्टूखिन को यह घर पसन्द आया—उसके अन्दर अन्धेरा था। वह फुदककर भीतर चली गई, उसने कई बार चक्कर लगाये और फिर सो गई।

इसी रात, बिल्ले वासीली वासील्येविच को जुर्म करने की कोशिश की सजा दी गई। उसे एक स्टोर में बन्द कर दिया गया। वहां वह रात भर गला फाड़ फाड़कर म्याऊं-म्याऊं करता रहा और उसका तो चूहे तक पकड़ने को मन नहीं हुआ। वह दरवाजे के पास बैठकर ऐसे दर्द भरे अन्दाज में म्याऊं-म्याऊं करता रहा कि खुद उसे भी परेशानी महसूस होने लगी।

इस तरह अब घर में साही और बिल्ले के अलावा एक और जानवर हो गया—जेल्टूखिन। बड़ी ही स्वच्छन्द, समझदार और सूझ-बूझ रखनेवाली थी यह मैना। उसे कान रस था, लोग जब मेज पर बैठते तो बड़े ध्यान से उनकी बातें सुनती, अपने सिर को एक ओर को झुकाती, मानो गाते हुए कहती—“साशा!” और सिर झुकाती। अलेक्सान्द्रा लेओल्येव्ना यही मानती थी कि वह उसका अभिवादन करती है। वह जब जेल्टूखिन को देखती तो हमेशा कहती—“नमस्ते, नमस्ते, नन्ही भूरी मैना, उत्साह से उमड़ती और जिन्दादिल!” जेल्टूखिन फौरन फुदककर उसके फ़ाक के छोर पर जा बैठती और इस सवारी का खूब मजा लेती।

पतझड़ के शुरू होने के पहले मैना यहीं रही, बड़ी हो गई और उसके चमकते हुए बड़े बड़े काले पंख निकल आये। उसने बढ़िया रूसी बोलनी सीख ली। वह दिन भर बगीचे में रहती और झुटपुटा होते ही दासे पर रखे हुए अपने लकड़ी के छोटे-से घर में लौट आती।

अगस्त में जंगली मैनाओं का एक झुण्ड उसे बहकाकर अपने साथ ले उड़ा। उन्होंने उसे ढंग से उड़ना सिखाया और जब बगीचे में पत्ते झड़ने लगे तो एक सुबह को वह मौसमी पक्षियों के साथ सागर-पार अफ्रीका की ओर उड़ गई।

क्लोपिक

खेतों में वसन्त के दिनों का काम ख़त्म हो चुका था। बगीचे में खोदाई-सिंचाई हो चुकी थी और अब सेंट पीटर के दिन तक अर्थात् चरागाह में घास की कटाई शुरू होने तक करने-धरने को कुछ नहीं था। जोताई के घोड़ों को झुंड के साथ तालाब के परे चरागाहों में भेज दिया गया था जहां हरी-हरी रसीली घास थी। सुबह को यहां खेतों के ऊपर नीली-नीली धुंध छाई रहती और एक-दूसरे से अलग-थलग खड़े चिनार के विराट काले-काले वृक्ष अपारदर्शी हवा में से नमूदार हुए और पृथ्वी के ऊपर लटके से लगते।

मीशका कोर्याशोनोक घोड़ों की देखभाल करने के लिये पशुओं के झुण्ड के साथ रहता। वह अपने घोड़े पर ऊंचा कज्जाकी जीन कसे रहता, उसके नंगे पैर रक्काबों में होते, वह पीछे की ओर अपने को झटका देता और उसकी कुहनियां हिलती-डुलती रहतीं।

मीशका हरेभरे चरागाह में किसी नौउम्र घोड़ी के पीछे, जो झुण्ड से अलग हो गई थी, सरपट घोड़ा दौड़ाता और पिस्तौल की तरह आवाज पैदा करता हुआ अपना कोड़ा सटकारता और उसे पुकारता। कभी वह बिना जीनवाले घोड़े की पीठ से नीचे उतरता। घोड़ा लगाम की कड़ी को इधर-उधर हिलाता-डुलाता हुआ फ़ौरन घास चरने लगता। मीशका कभी तो खड्ड के किनारेवाले टीले पर जा बैठता और सोटियों को काटता रहता या फिर पतलून ऊपर चढ़ाकर तालाब में धुस जाता और गर्म पानी में से सरकंडों के कन्द और जड़ें खींचकर निकालता रहता। जड़ें सांप की तरह लम्बी और काली होतीं। कन्द खट्टे-खट्टे और भुरभुरे होते, मगर जड़ें आटेवाली और मीठी होतीं, यद्यपि इन्हें अधिक मात्रा में खा लेने से पेट में सख्त दर्द होने लगता।

निकीता दिन भर तालाब के निकट मीशका के साथ ही रहता और घुड़सवारी करना सीखता। जीन पर सवार हो जाना तो कुछ मुश्किल काम नहीं था। खिचड़ी वालों वाला बूढ़ा भूरा घोड़ा बिल्कुल शान्त खड़ा रहता। केवल कभी-कभी ही वह गोमक्षिकाओं को दूर भगाने के लिये अपनी पिछली टांग पेट पर मारता। मगर निकीता जब उस पर सवार हो जाता, लगाम सम्भाल लेता और उसे दुलकी चाल से चला देता, तो कभी एक ओर को गिरने लगता और कभी दूसरी ओर को। कोई तीसेक क़दम चलने के बाद भूरा घोड़ा जब अचानक रुक जाता और सिर झुकाकर घास चरने लगता, तो निकीता पूरे जोर से काठी का उभरा हुआ सिरा पकड़ लेता और कभी-कभी तो घोड़े की गर्दन पर से फिसलता हुआ उसके पैरों के पास नीचे जा गिरता। बूढ़ा घोड़ा ऐसा होने पर भी बिल्कुल शान्त रहता।

मीशका ने कहा—

“डरने की कोई बात नहीं है। गिरने से चोट नहीं लगती। सिर्फ अपनी गर्दन को सम्भाले रहा करो और भगवान के लिये कभी भूलकर भी हाथों के बल गिरने की कोशिश मत किया करो। वस, गुड़ी-मुड़ी हो जाया करो, फिरकी की तरह। मैं तुम्हें बताता हूँ कि काठी या लगाम के बिना कैसे यह काम किया जाये। वस, कूदकर सवार हो गये और यह जा और वह जा।”

मीशका तीन वर्षीया घोड़ियों के एक झुण्ड की ओर भागा। इन पर कभी किसी ने सवारी नहीं की थी। उसने अपना हाथ बढ़ाकर उन्हें बुलाना शुरू किया—

“रोटी, रोटी, रोटी...”

पतली-पतली टांगोंवाली, बिगड़ी हुई तारिका नाम की भूरी-चितकवरी घोड़ी मीशका की ओर आई। वह कनौतियां बदल रही थी और उसके मखमली होंठ रोटी की तलाश में थे। मीशका उसकी गर्दन खुजलाने लगा। तारिका ने अपना तना हुआ गर्वीला सिर झुकाया। मीशका

का गर्दन सहलाना उसे बहुत भला लग रहा था। मीशका को खुश करने के लिये वह भी उसके कंधे को दांतों से छूने लगी।

मीशका ने उसे थपथपाया और उसकी साटिन जैसी मुलायम पीठ पर हाथ फेरा। तारिका चौंककर पीछे को हटी। मीशका ने उसे अयाल से पकड़ा और उछलकर उसकी पीठ पर सवार हो गया। आश्चर्यचकित और आग-बबूला होती हुई तारिका एक ओर को उछली, उसने अपना सिर झटका, चौपैरी छलांग लगाई, वह पिछली टांगों पर बैठी, खड़ी हुई और फिर सरपट दौड़ती हुई पशुओं के झुण्ड के पास से गुजरी।

मीशका गेंद की तरह चिपककर उसकी पीठ पर बैठा रहा। सरपट भागती हुई तारिका अचानक रुकी और उसने दुलती चलाई। मीशका गेंद की तरह लुढ़कता-पुढ़कता घास में जा गिरा। निकीता के पास लौटता हुआ वह लंगड़ा रहा था और अपने गाल से खून पोंछ रहा था जहां खरोंच आ गई थी।

“कम्बख्त ने मुझे सीधे झाड़ियों के बीच ही जा फेंका,” मीशका ने कहा। “मगर तुम से यह काम नहीं हो सकेगा, तुम बहुत मोटे हो।”

“मुझे अपनी गर्दन तोड़ लेना मंजूर है, मगर मैं मीशका से बेहतर घुड़सवारी करना सीखकर रहूंगा,” निकीता सोच रहा था।

दोपहर का खाना खाते हुए निकीता ने मां से तारिका की चर्चा की। वह तो बेहद परेशान हो उठी।

“सुनो,” मां ने कहा, “मैं तुम से मिन्नत करके कहती हूं कि तुम बिना सधे हुए घोड़ों के तो पास भी नहीं फटकना।” इतना कहकर मां ने अनुरोधभरी दृष्टि से वासीली निकीत्येविच की ओर देखा। “वास्या, आप कम से कम मेरी बात का अनुमोदन तो करें... वरना होगा यही कि यह हज़रत अपने हाथ-पैर तोड़ लेगा...”

“बहुत ख़ूब,” वासीली निकीत्येविच ने उत्तर दिया, “इसे घुड़सवारी की मनाही कर दो, पैदल चलने से भी रोक दो—इसमें भी नाक टूटने का ख़तरा रहता है,—इसे मर्तवान में डालो, इर्द-गिर्द रूई लपेटो और किसी अजायबघर में भेज दो...”

“मुझे आप से ऐसी ही उम्मीद थी,” मां ने कहा। “मैं जानती हूं कि इस गर्मी में मुझे बिल्कुल चैन नहीं मिलेगा...”

“साशा, तुम्हें यह न भूलना चाहिये कि लड़का दस साल का हो गया है।”

“तो क्या हुआ...”

“मुझे माफ़ करना, पर मैं हरगिज़ यह नहीं चाहता कि यह कोई जनखा या काठ का उल्लू बनकर रह जाये।”

“सही बात है, मगर इसका यह मतलब नहीं है कि फ़ौरन ही उसे क्लोपिक भेंट कर दिया जाये।”

“पहली बात तो यह है कि कोई दूध पीता बच्चा भी उसपर सवारी कर सकता है।”

“उसकी नालबन्दी हो चुकी है।”

“मैंने उसके नाल उतार देने का हुक्म दिया है।”

“ओह, अगर यह बात है तो जो मन माने, वही कीजिये। जंगली घोड़ों पर चढ़िये और अपने सिर फोड़िये।” मां की आंखें डबडबा आईं। वह झटपट खाने की मेज से उठी और सोने के कमरे में चली गई।

वासीली निकीत्येविच ने जल्दी से अपनी दाढ़ी को थपथपाकर दो हिस्सों में बांटा, नेप्किन को नीचे फेंका और मां के पीछे-पीछे सोने के कमरे में चले गये। अर्कादी इवानोविच अभी तक ऐसे बैठे रहे थे मानो इस बातचीत से उनका कोई सरोकार ही न हो। अब उन्होंने निकीता की ओर देखा, अपनी ऐनक ठीक की और फुसफुसाते हुए कहा—

“हां दोस्त, तुम्हारा मामला कुछ गड़बड़ा ही है।”

“अर्कादी इवानोविच, मां से कहिये कि मैं नहीं गिरुंगा... कसम खाता हूं कि मैं...”

“सहनशीलता, स्थिरता और चरित्र की दृढ़ता,” इतना कहकर उन्होंने बड़ी फुर्ती से उस मक्खी को पकड़ लिया जो लगातार उनकी नाक पर बैठने की कोशिश कर रही थी, “यही तीन गुण बढ़िया घुड़सवार बनने के लिये भी बहुत जरूरी हैं...”

इसी बीच सोने के कमरे में बहुत जोरदार बातचीत हो रही थी। पिता कह रहे थे—
“इस उम्र में लड़के आजाद होते हैं...”

“कहां, कहां वे आजाद होते हैं?” मां ने हताश होते हुए पूछा। “अमरीका में...”
“यह झूठ है...” “मैं तुम से कह जो रहा हूं कि अमरीका में दस साल के लड़के उसी तरह आजाद होते हैं जैसे मिसाल के तौर पर मैं...” “हे भगवान, मगर हम तो अमरीका में नहीं हैं...” मां ने कहा।

पूरे एक हफ्ते तक लड़कों की आजादी के बारे में बातचीत जारी रही। मां ने हथियार फेंक दिये थे और अब ऐसे उदासी से निकीता की ओर देखती थी मानो उसका हाथ-पैर तोड़ लेना तो लाजिमी बात हो। उसे आशा थी तो केवल इतनी कि उसका सिर सलामत रहेगा।

इसी हफ्ते में निकीता तालाब के पास बहुत यत्न से घुड़सवारी सीखता रहा। मीशका उसकी हिम्मत बढ़ाता और उसे दिलेरी का एक करतब सिखाता रहा। उसने निकीता को बालकों के उस खेल की तरह जिसमें बालक पीठ पर से कूदते हैं, पीछे की ओर से भागते हुए घोड़े पर छलांग मारकर चढ़ना सिखाया।

“वह चौपैरी छलांग लगाकर तुम्हें नीचे नहीं गिरा पायेगा। वह जब तक चौपैरी छलांग लगायेगा, तुम उसकी गर्दन पर डटे होगे।”

आखिर छज्जे में नाश्ता करने के बाद जहां रस्सी के सहारे ऊपर को चढ़ी हुई क्रेस बेलें मेज़पोश, तश्तरियों और चेहरों पर अपनी परछाइयां डाल रही थीं, मां ने निकीता को अपने पास बुलाया, उसे अपने सामने खड़ा किया और उदास आवाज़ में कहा—

“देखो न, तुम दस वर्ष के हो गये हो। अब तुम्हें आजाद होना चाहिये। तुम्हारी उम्र

में और लड़के पूरी तरह, पूरी तरह..." मां की आवाज कांप गई और उसने माथे पर बल डालकर पिता की ओर देखा - "मतलब यह कि तुम्हारे पिता सही कहते हैं, तुम अब बच्चे नहीं रहे।" वासीली निकीत्येविच ने आंखें झुका लीं और मेज के सिरे पर उंगलियों से ताल देने लगे। "कल हम चेम्बुलातोवा से मिलने जा रहे हैं। तुम अगर चाहो, तो क्लोपिक पर सवार होकर चल सकते हो... मैं तुमसे सिर्फ यह प्रार्थना करती हूँ, यह अनुरोध करती हूँ..."

"मां, मैं तुम से कसम खाकर कहता हूँ, कसम खाकर, कि मैं बिल्कुल सही-सलामत रहूंगा।" इतना कहकर निकीता ने मां की आंखें, गाल, ठुड़ी और बेरियों की गंधवाले हाथ चूमे।

अगले दिन दोपहर का खाना जल्दी से खत्म करने के बाद वासीली निकीत्येविच ने निकीता से कहा कि वह अपनी काठी ले आये। यह सांभर की खाल की बनी हुई वही काठी थी जो क्रिसमस के अवसर पर उसे भेंट की गई थी। घास को लांघकर अस्तबल की ओर जाते हुए उन्होंने कहा -

"तुम्हें अवश्य ही घोड़े को साफ़ करना, उसपर काठी डालना और सवारी के बाद उसे सहलाना आना चाहिये... घोड़े के रोयों को अवश्य अच्छी तरह रगड़ना चाहिये, उसे साफ़-सुथरा होना चाहिये। अगर ऐसा है, तो तुम अच्छे घुड़सवार हो।"

बग्घीखाने के फाटक पूरी तरह खुले हुए थे और वहां तीन घोड़ों को बग्घी में जोता जा रहा था। कोचवान सेर्गेई इवानोविच बिना आस्तीनों की जाकेट और लाल कमीज पहने था, मगर उसके सिर पर टोपी साधारण थी। उसने, पंखोंवाला टोप तभी पहना जब वह सीट पर चढ़ने को तैयार हो गया। वह पट्टे को ठीक-ठाक करता हुआ अत्योम को कोस रहा था जो उसकी सहायता कर रहा था -

"अरे बुद्धू, घोड़े की छाती के नीचे पट्टा क्यों डाल रहा है! यह बग्घी का साज है। गले के पट्टे को नहीं छोड़ो। तुम तो टोकरी में बिल्ली को भी नहीं जोत सकते।"

"मेरे पास तो कभी घोड़ा नहीं था।"

"तुम से कभी कोई लड़की शादी नहीं करेगी - तुम बुद्धू जो हो। नई लगामें मुझे दो।"

बग्घी की जोत का मुख्य घोड़ा था लार्ड बायरन। वह अब जोता जा चुका था और चीपट खुले दरवाजों के सामने खड़ा अपनी लगाम का दहाना चबा रहा था, लकड़ी के फर्श पर पांव घटक रहा था और प्यार से सेर्गेई इवानोविच के कंधे को, जो आंखों के पट्टे के नीचे से घोड़े की जुल्फ़ को ठीक कर रहा था, दांतों के बीच दबा रहा था। बग्घीखाने में चमड़े, घोड़े के स्वस्थ पसीने और कबूतरों की गंध बसी हुई थी। जब घोड़े जोते जा चुके तो होंठों पर हल्की-सी मुस्कान लाते हुए सेर्गेई इवानोविच ने निकीता से कहा -

"जीन खुद ही डालना चाहते हैं?"

क्लोपिक को अस्तबल से लाया गया। निकीता ने धड़कते हुए दिल से उसकी ओर देखा।

क्लोपिक कत्थई रंग का घोड़ा था, खूब बढ़िया ढंग से साफ़ किया हुआ, नाटा और मजबूत। उसके टखने सफ़ेद थे, उसकी पंछ और अयाल के बाल घने और काले थे। उसके

माथे पर एक बड़ी-सी जुल्फ खेल रही थी और वह बालों के नीचे से खुशी से इधर-उधर देखता हुआ अपना सिर झटक रहा था। उसकी पीठ पर लम्बी-सी काली धारी थी।

“बहुत बढ़िया घोड़ा है,” पानी से भरी हुई बालटी घोड़े के सामने रखते हुए सेर्गेई इवानोविच ने कहा। क्लोपिक ने पानी पिया और फिर अपना सिर ऊपर किया। उसके भूरे होंठों से पानी की बूंदें नीचे गिर रही थीं।

निकीता ने घोड़े की लगाम हाथ में ली और जैसे कि उसे सिखाया गया था, एक ओर से मुंह में दहाना डाला और गले के पट्टे को बकसुए में फंसाया। क्लोपिक ने लोहे का टुकड़ा दांतों के बीच ले लिया। निकीता ने काठी के नीचेवाला कम्बल ठीक तरह से जमाया, उसके ऊपर सलेटी कपड़ा बिछाया जिसके सिरे पर निकीता के नाम के प्रारम्भिक अक्षर लिखे हुए थे और इसके ऊपर काठी रखकर पेट के नीचे से उसका पट्टा कसने लगा। यह काम उसके लिए टेढ़ी खीर सिद्ध हुआ।

“उसने अपना पेट फुला लिया है,” सेर्गेई इवानोविच ने कहा। “बहुत चालाक है यह जानवर, खूब पेट फुला रहा है।” इतना कहकर उसने क्लोपिक के पेट पर चपत जमाई। घोड़े ने अपने मुंह से हवा निकाल दी और निकीता ने पट्टा कस दिया।

वासीली निकीत्येविच आये और निकीता को हिदायतें देने लगे—

“लगाम बायें हाथ में पकड़ कर बायें कंधे की ओर से घोड़े की तरफ बढ़ो। सवार हो जाओ। उसे एड़ लगाओ। रकावों में अपने पैरों को नहीं झुलाओ, पंजे आगे की ओर नहीं झुकाओ।”

निकीता सवार हुआ, कांपती हुई टांग से उसने दायाँ रकाव खोजी, घोड़े को एड़ लगाई और क्लोपिक दुलकी चाल से अस्तबल की ओर भाग चला। वासीली निकीत्येविच चिल्लाये—

“रोको! रोको इसे! अरे बूढ़ू, दायाँ लगाम खींचो!”

क्लोपिक अस्तबल की छाया में पहुंचकर रुक गया। निकीता का शर्म से मुंह लाल हो गया। वह नीचे उतरा, घोड़े की लगाम पकड़ कर उसे बाहर ले चला और फुसफुसाकर इस धूर्त घोड़े से कहता रहा—

“तुम गधे हो, एकदम गधे हो, निरे उल्लू हो!...”

क्लोपिक खुशी से अपनी जुल्फ झटक रहा था। सेर्गेई इवानोविच इनके पास आया और बोला—

“आप सवार हो जाइये। मैं इसे बाहर ले जाता हूँ। बहुत चालाक है यह घोड़ा। काम से जी चुराता है, छाया में खड़े रहना चाहता है।”

आखिर क्लोपिक वश में आ गया और निकीता उसे सरपट दौड़ाता हुआ पशुओं के बाड़े से आगे निकल गया।

सेर्गेई इवानोविच ने अपना पंखोंवाला टोप और दस्ताने पहने जिन पर सूखा आटा लगाया गया था, सीट पर बैठा और कड़ाई से चिल्लाया—

“छोड़ दो लगाम !”

अर्त्योम, जो लार्ड वायरन की लगाम थामे था, उछल कर एक ओर को हो गया और बग्घी तख्तों पर खड़खड़ाती हुई तेजी से बाहर निकल गई। उसके पहियों के तांबे के तार और पालिश लौ देने लगी, तीनों घोड़ों के सुमों के नीचे से ताजा मिट्टी उड़ रही थी और घंटियां टनटना रही थीं। बग्घी ने अहाते में अर्ध चक्र लगाया और घर के सामने जाकर खड़ी हो गई।

अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना सफ़ेद फ़ाक पहने हुए ओसारे से बाहर आई और उसने सफ़ेद छतरी खोली। उसने घबराहट से निकीता की ओर देखा जो दूरी पर घोड़े को कुदाता जा रहा था। पिता ने निकीता की मां को बग्घी में बिठाया और फिर खुद सवार हुए।

“बढ़ाओ गाड़ी !”

सेर्गेई इवानोविच ने रास्ते ऊपर को उठाई। शानदार मुश्की घोड़ों ने कसे हुए बून्दों पर जोर मारा और बग्घी को आसानी से खींच ले चले। पुल पर उनके सुम बज उठे और वे सरपट दौड़ने लगे, बहुत तेजी से और गर्दन अकड़ाये हुए। लार्ड वायरन को तो यह काम मज़ाक़ सा प्रतीत हो रहा था और उसने अपनी कर्नीतियां तान लीं। मां लगातार निकीता की ओर देख रही थी। निकीता ने घोड़े की रास्ते ढीली छोड़ दी थी, वह घोड़े की गर्दन पर झुक गया था और उसे तावड़तोड़ दौड़ाता हुआ बग्घी के बराबर होने की कोशिश कर रहा था।

निकीता क्लोपिक को अंधाधुंध दौड़ाता हुआ बग्घी के पास से निकल जाना चाहता था। मगर क्लोपिक के दिमाग़ में दूसरी ही बात थी। वह इसे बेकार समझता था। जब वह बग्घी के बराबर पहुंचा तो सड़क पर हो गया और बग्घी के पहियों के पीछे-पीछे धूल के बादल में दुलकी चाल से दौड़ने लगा। किसी तरह भी उसे रोकना या सड़क से हटाना मुमकिन नहीं था : वह इसे बेतुकी बात मानता था। अगर घुड़सवारी करनी ही है, तो सड़क पर की जाये और इस सिलसिले में सभी तरह की बहस बेमानी है।

मां ने मुड़कर देखा। निकीता धचके खा रहा था। वह होंठ भींचे था और टकटकी बांध कर घोड़े के कानों के बीच से देख रहा था। धूल से उसकी तबीयत परेशान हुई जा रही थी और दुलकी से उसका मेदा गड़बड़ हो रहा था।

“बग्घी में आना चाहते हो ?”

निकीता ने दृढ़ता से सिर हिला दिया। पिता ने मुस्कराते हुए सेर्गेई इवानोविच से कहा —

“इन्हें पूरी रफ़्तार से जाने दो।”

वायरन ने कर्नीतियां बदलीं, उसकी मज़बूत लौह टांगें मशीन की तरह काम करने लगीं और बग़लवाले दोनों घोड़े घास की पट्टी पर हवा से बातें करने लगे। क्लोपिक भी दुलकी छोड़ सरपट दौड़ने लगा मगर बग्घी दूर होती गई। वह भी भड़क उठा और अपनी पूरी ताक़त से, बहुत जोर लगाता हुआ सरपट उड़ चला।

घोड़े की दुलकी से निकीता को जो उबकाई-सी आ रही थी, वह दूर हो गई। वह अब काठी पर इत्मीनान से और जम कर बैठा था। हवा उसके कानों में सीटियां बजा रही थी।



सड़क की बगल में हरेभरे खेत लहलहा रहे थे और रोशनी में दिखाई न देते हुए भरद्वाज पक्षियों की मीठी तानें गूँज रही थीं... फ्रेनीमोर कूपर की किताब जैसा ही प्यारा वातावरण था।

बग्घी के घोड़े धीरे-धीरे चलने लगे। निकीता बग्घी के बराबर पहुंच गया। उसने हांफते हुए खुशी से अपने पिता की ओर देखा।

“मजा आया, निकीता?”

“बेहद... बहुत गजब का घोड़ा है यह क्लोपिक...”

तालाब में स्नान

एक दिन बहुत सवेरे ही वासीली निकीत्येविच, अर्कादी इवानोविच और निकीता एक-दूसरे के आगे-पीछे घास में से गुजरती हुई एक पगडंडी पर चले जा रहे थे। घास ओसकण के कारण नीलगूँ लग रही थी। वे नहाने के लिये तालाब की ओर जा रहे थे।

बगीचे के घने झुरमुटों में सुबह की धुंध अभी तक छाई हुई थी। तितलियां शहद भरे पीले फूलों और वनपथ में लगे तिपतिया घास के सफेद फूलों पर, जहां एक परेशान-सी मधुमक्खी भनभना रही थी, छोटे-छोटे पत्तों की भांति मंडरा रही थीं। झुरमुट में एक जंगली कबूतर गुटर-गूं, गुटर-गूं का राग अलाप रहा था। उदासी भरी और प्यारी आवाज में गुटर-गूं का गाना गाता हुआ वह अपनी छाती फुलाता। मानो कहता कि यह सिलसिला हमेशा इसी तरह चलता जायेगा, यह खत्म होगा और फिर नये सिरे से शुरू हो जायेगा।

वासीली निकीत्येविच ने लकड़ी का पुल पार किया जिसके लम्बे तख्ते पानी पर छपछपा रहे थे। वे स्नानागार में गये जहां उन्होंने छाया में रखी हुई एक बेंच पर कपड़े उतारे, बालों से ढकी हुई अपनी गोरी छाती को थपथपाया, मुलायम बगलों पर हाथ फेरा, आंखें सिकोड़कर चकाचौंध करते हुए पानी की ओर देखा और कहा—

“वाह, कमाल है!”

उनका संवलाया हुआ चेहरा और चमकती दाढ़ी उनके गोरे बदन पर पराये-से लग रहे थे। पिता के शरीर से तो विशेषतः स्वास्थ्य की प्यारी गंध आती थी। जब कोई मक्खी उनकी टांग या कंधे पर बैठती तो वे अपना फैला हुआ चौड़ा हाथ उसपर जोर से मारते और उनकी त्वचा पर एक लाल धब्बा बाक़ी रह जाता। ज़रा देर सुस्ताने के बाद पिता ने नहाने का साबून हाथ में लिया, खुशबूदार और बहुत ही हल्का जो पानी के ऊपर तैरता रहता है। फिर वे बहुत सावधानी से तालाब की फिसलनी और काईदार पैड़ियों से तालाब में उतरे। पानी उनकी छाती तक पहुंच रहा था। वे बहुत जोर से सिर और दाढ़ी पर साबून मलते और मुंह से फू-फू करते हुए कहते जा रहे थे—

“वाह, वाह, बहुत खूब!”

तालाब के ऊपर सूरज की नीली-सी रोशनी में छोटी-छोटी मक्खियों का झुण्ड मंडरा रहा था। एक ड्रैगनफ्लाई इधर से गुजरी। उसने अपनी हरी-हरी और फूली-फूली आंखों से वासीली निकीत्येविच का फेन से ढका हुआ सिर देखा तो डरकर दूसरी ओर को भाग गई। इसी समय अर्कादी इवानोविच जल्दी-जल्दी और लजाते-शर्मते हुए अपने कपड़े उतार रहे थे। उन्होंने अपने कुछ कुछ टेढ़े-मेढ़े पैरों की लम्बी-लम्बी उंगलियां सिमटा लीं, स्नानागार का बाहरी दरवाजा खोलकर इस बात का यकीन करने के लिये बाहर झांका कि तालाब के किनारे से उनपर किसी की नज़र तो नहीं पड़ रही, फिर भारी-भरकम आवाज़ में कहा – “ओह, बहुत खूब!” और पेट के बल पानी में कूद गये। छपाक की आवाज़ पैदा करता हुआ पानी सभी दिशाओं में उछला और रूक पक्षी डरकर विल्लो वृक्षों से उड़ गये। वे बड़े-बड़े और लम्बे-लम्बे हाथ मारते हुए तैरने लगे और लाल बालों से ढका हुआ उनका दुबला-पतला शरीर नीले पानी के नीचे बल खाने लगा।

तालाब के बीचोंबीच पहुंचकर अर्कादी इवानोविच कलाबाजियां खाने लगे। वे गोता लगाकर गायब हो जाते और फिर पानी की सतह पर आते और जल-दैत्य की तरह – “गर्ग गर्ग-फर्ग फर्ग” करते।

निकीता राल लगी बेंच पर सिमटा-सिमटाया बैठा था और पिता के शरीर साफ़ कर लेने की प्रतीक्षा कर रहा था। वासीली निकीत्येविच ने तालाब की पैड़ियों पर साबून रखा, कानों में उंगलियां डालीं और तीन डुबकियां लगाईं। गीले बाल उनके सिर के साथ चिपक गये, उनकी दाढ़ी बकरा दाढ़ी की तरह लटक गई और कुल मिलाकर उनकी सूरत अजीब-सी हो गई। वास्तव में ऐसी सूरत हो जाने पर उन्हें “बेचारा वास्या” की संज्ञा दी जाती थी।

“आओ, अब तैरें,” उन्होंने कहा। वे दरवाजे से बाहर गये और जोर की आवाज़ पैदा करते हुए पानी में कूद गये। साफ़ पानी में अपने हाथ-पैर धीरे-धीरे हिलाते हुए वे मेढक की तरह तैरने लगे।

निकीता सिर के बल पानी में कूदा और पिता के बराबर पहुंचकर उनके साथ-साथ तैरने लगा। उसे आशा थी कि पिता उसकी प्रशंसा करेंगे। इस गर्मी में निकीता ने चागरा नदी में नहानेवाले लड़कों के साथ जाकर अच्छी तरह तैरना सीख लिया था। वह पहलू और पीठ के बल तैर सकता था, पानी में खड़ा रह सकता था और कलाबाजियां लगा सकता था।

पिता ने फुसफुसाकर कहा –

“चलो, अर्कादी को गोते दें।”

वे एक-दूसरे से अलग हो गये और दो दिशाओं से अर्कादी इवानोविच की ओर बढ़े। उनकी नज़र इतनी कमजोर थी कि वे बहुत पास की चीज़ भी नहीं देख पाते थे। निकीता और उसके पिता बड़े-बड़े हाथ मारते हुए अर्कादी के निकट पहुंचे और उनपर झपटे। अर्कादी इवानोविच बौखला उठे, इधर-उधर होने लगे, कमर तक पानी से बाहर आये और उन्होंने गोता लगाया। निकीता और उसके पिता ने अर्कादी इवानोविच को पांव से पकड़ने की कोशिश

की, क्योंकि वे गुदगुदी से बहुत घबराते थे। मगर उन्हें आसानी से पकड़ पाना सम्भव नहीं था—वे उनकी पकड़ से निकल जाते थे। निकीता और वासीली निकीत्येविच जब स्नानागार में आये तो उन्होंने अर्कादी इवानोविच को अंडरवीयर और ऐनक पहने हुए बेंच पर बैठे पाया। उन्होंने ज़रा चिढ़ाते हुए, मगर हंसकर कहा—

“श्रीमान, आप लोग तैरना सीखें, तैरना सीखें।”

ये लोग जब तालाब से लौटते, तो अक्सर अलेक्सान्द्रा लेओन्त्येव्ना को सफ़ेद टोपी और फूला-फूला-सा चोगा पहने देखते। मां ने धूप के कारण आंखें सिकोड़ते और मुस्कराते हुए कहा—

“बगीचे में लाइम वृक्ष के नीचे नाश्ता लगा हुआ है। आप लोग जाकर नाश्ता शुरू करें, मेरा इन्तज़ार करने की ज़रूरत नहीं। पावरोटियां ठण्डी हो जायेंगी।”

बैरोमीटर की सूई

वासीली निकीत्येविच कई दिनों से बैरोमीटर को नाखूनों से टकटकाते और बुदबुदाते हुए भला-बुरा कहते। बैरोमीटर की सूई बताती—“खुश्क, बहुत खुश्क मौसम”। दो हफ़्ते से पानी की एक भी बूंद नहीं बरसी थी और फ़सल के पकने का वक़्त आ गया था। ज़मीन जहां-तहां फट गई थी, गर्मी से आकाश का रंग फीका पड़ गया था और दूर क्षितिज पर पशुओं के लौटने के समय उड़नेवाली धूल के समान काली-काली धुंध छाई हुई थी। चरागाह झुलस गये थे और वृक्षों के पत्ते मुरझा-कुम्हला गये थे। वासीली निकीत्येविच चाहे कितनी ही बार बैरोमीटर को टकटकाते, उसकी सूई यही जाहिर करती—“खुश्क, बहुत खुश्क मौसम”।

परिवार के लोग जब खाने की मेज़ पर जमा हुए तो आज सदा की भांति हंसी-मजाक का रंग नहीं जमा। माता-पिता के चेहरों पर चिन्ता की छाप अंकित थी। अर्कादी इवानोविच भी गुमसुम थे। वे अपनी प्लेट को एकटक देखते हुए जब-तब ऐनक ठीक करते और इस तरह अपनी दबी-घुटी ठण्डी आह को छिपाने की कोशिश करते। उनकी इस परेशानी के अपने अलग ही कारण थे—स्कूली अध्यापिका वास्सा नीलोव्ना ने सोस्नोव्का आने का वादा किया था। मगर अब उसने लिखा था कि “मैं अपनी बीमार मां के पलंग से बंधी हुई हूं”, और उसे पतझर से पहले समारा में अर्कादी इवानोविच से मिलने की आशा नहीं थी।

निकीता ने वास्सा नीलोव्ना की इस तरह से कल्पना की—सलेटी रंग का ब्लाउज़ पहने, जिसके साथ घड़ी की रेशमी डोरी लटक रही है, एक लम्बी और उदास औरत बैठी है। उसकी एक टांग जंजीर के सहारे पलंग के पाये के साथ बंधी हुई है। इन तपते और उमस भरे दिनों में बिना कागज़ मढ़ी दीवार के पास लोहे के पलंग के निकट बैठी औरत की कल्पना बहुत उदासी भरी प्रतीत हुई।

दोपहर के खाने के समय वासीली निकीत्येविच ने प्लेट के सिरे पर ताल देते हुए कहा—

“अगर कल भी बरसात न हुई तो फ़सल बिल्कुल तबाह हो जायेगी।”

मां ने इतना सुनते ही फौरन सिर झुका लिया। बड़ी खिड़की के ऊपरी भाग में दोहरे अर्ध गोलाकार शीशे थे जो कभी साफ नहीं किये जाते थे, और जहां मकड़ियों के जाले थे, वहां किसी मक्खी के बहुत जोर से भनभनाने की आवाज सुनाई दे रही थी। छज्जे में खुलनेवाले शीशे के दरवाजे बन्द थे ताकि बगीचे की ओर से गर्मी न आये।

“क्या इस साल फिर अकाल पड़ेगा,” मां ने कहा, “हे भगवान, यह तो बहुत भयानक बात होगी!”

“हां, मामला तो कुछ ऐसा ही है—हाथ पर हाथ धरकर बैठो और मुसीबत का इन्तजार करो।” पिता रेशमी पतलून की जेबों में हाथ डाले हुए खिड़की के पास गये और उन्होंने आकाश पर नज़र डालकर कहा—“एक और दिन ऐसी गर्मी पड़ी तो जाड़े में भुखमरी का मुंह देखना पड़ेगा, टाइफ़स बुखार फैलेगा, ढोर मरेंगे, बच्चे दम तोड़ेंगे... बड़ी चेतुकी बात है।”

उन्होंने चुपचाप खाना खाया। पिता जाकर लेट रहे। मां रसोईघर में चली गई लिनन की जांच करने। अर्कादी इवानोविच अपने बिगड़े हुए मूड को और भी अधिक ख़राब करने के लिये दहकती हुई स्तेपी में घूमने चले गये।

दोपहर को कमरों में मनहूस ख़ामोशी छा गई। इस सन्नाटे में मक्खियों की भनभनाहट के सिवा कुछ भी सुनाई नहीं देता था। हर चीज़ पर मानो धूल की तह चढ़ गई थी। निकीता की समझ में नहीं आ रहा था कि वह करे तो क्या! वह ओसारे में चला गया। धुंधली, मगर आंखों को बुरी तरह चकाचाँध करती सूरज की सफ़ेद रोशनी में नहाया हुआ अहाता एकदम सुनसान था, वहां गहरी ख़ामोशी थी, हर चीज़ सो रही थी, बेजान थी। ख़ामोशी और गर्मी से उसका सिर भनभना रहा था।

निकीता बगीचे में गया, मगर वहां पर भी ज़िन्दगी का नाम-निशान नहीं था। एक ऊंधती-सी मक्खी भनभना रही थी। धूलभरे पत्ते ऐसे निश्चल लटके हुए थे मानो टीन के बने हों। पंकिल तालाब में नाव निश्चल खड़ी थी और रुक पक्षियों ने इसके अगल-बगल सफ़ेद धब्बे डाल दिये थे।

निकीता वापिस घर जाकर एक छोटे-से सोफ़े पर लेट रहा जिसमें से चूहों की गंध आ रही थी। कमरे के बीचोंबीच खाने की मेज़ रखी थी जिस पर मेज़पोश नहीं था। इसकी बहुत-सी भद्दी और पतली-पतली टांगें थीं। इस मेज़ से ज़्यादा ऊब पैदा करनेवाली दुनिया में दूसरी कोई चीज़ नहीं थी। दूर, रसोईघर में वावर्चिन धीरे-धीरे गा रही थी। वह सम्भवतः ईंटों के चूरे से छुरियां साफ़ कर रही थी और भयानक ऊब के कारण धीमी आवाज़ में विलाप कर रही थी।

अचानक अधखुली खिड़की के दासे पर जेल्तूख़िन दिखाई दी। गर्मी के कारण उसकी चोंच थोड़ी खुली हुई थी। थोड़ा दम लेने के बाद वह उड़कर निकीता के कंधे पर जा बैठी। उसने सिर घुमाकर निकीता की आंखों में झांका, फिर उसकी कनपटी पर चोंच मारी जहां उसका काला-सा और बाजरे जैसा नज़र आनेवाला जन्म-चिह्न था, उसे छुआ और फिर निकीता की आंखों में झांका।

“जाओ, मुझे परेशान नहीं करो,” निकीता ने कहा। वह धीरे-से उठा और उसने मैना की प्याली में पानी भर दिया।

जेल्लूखिन ने जी भरकर पानी पिया, फिर वह प्याली में कूद गई और पानी में डुबकी लगाई, प्याली के सारे पानी को उछाल-उछाल कर बाहर गिरा दिया और फिर ऐसी जगह की तलाश करने लगी जहां बैठकर वह अपने पंख संवार सकती। वह लकड़ी के बैरोमीटर की कार्निंस पर जा बैठी।

“वी विट,” जेल्लूखिन ने धीरे से कहा। “वी विट, आं... धी!”

“क्या कहा तुमने?” बैरोमीटर के करीब जाकर निकीता ने पूछा।

कार्निंस पर बैठी हुई जेल्लूखिन ने सिर झुकाया, अपने पंख नीचे किये, पक्षियों की भाषा में और फिर रूसी में कुछ बुदबुदाई। तभी निकीता ने देखा कि बैरोमीटर की नीली सूई सुनहरी सूई से बहुत दूर हो गई है और “मौसम की तब्दीली” तथा “आंधी” के बीच हिलडुल रही है।

निकीता उंगलियों से शीशे पर ताल देने लगा। सूई “आंधी” की ओर कुछ और खिसक गई। निकीता पुस्तकोंवाले कमरे की ओर दौड़ गया जहां उसके पिता सो रहे थे। उसने दरवाजे पर दस्तक दी। पिता ने उनींदी और खरखरी सी आवाज में पूछा—

“क्या है? क्या बात है?”

“पिता जी, चलकर बैरोमीटर को देखिये...”

“मुझे परेशान नहीं करो, निकीता, मुझे नींद आ रही है।”

“मगर चलकर देखिये तो सही कि बैरोमीटर क्या जाहिर कर रहा है...”

पुस्तकोंवाले कमरे में खामोशी छाई रही। जाहिर था कि पिता जी की नींद नहीं टूट पा रही थी। आखिर फर्श पर उनके नंगे पैरों की आहट सुनाई दी, ताले की चाबी घूमी और थोड़े से खुले हुए दरवाजे में से पिता की अस्त-व्यस्त दाढ़ी दिखाई दी।

“क्यों जगा है दिया तुमने मुझे? क्या बात है?”

“बैरोमीटर ‘आंधी’ की ओर संकेत कर रहा है।”

“ऐसे ही बना रहे हो,” पिता घबराकर बुदबुदाये और बैठक की ओर भागे। वे फौरन घर भर को सुनाते हुए चिल्लाये—“साशा, साशा! आंधी! हुर्रा! हम मुसीबत से बच गये!”

उमस और गर्मी और बढ़ गई। पक्षियों ने चुप्पी साध ली, घबराई हुई बेजान सी मक्खियां खिड़कियों पर बैठने लगीं। सन्ध्या को नीचे जाता हुआ सूरज जलती धुंध में गायब हो गया। बहुत तेजी से झुटपुटा छा गया। अंधेरा ऐसा था कि हाथ को हाथ सुझाई न दे। एक भी सितारा नहीं झिलमिला रहा था। बैरोमीटर की सूई “आंधी” पर पूरी तरह टिक गई। परिवार के सभी लोग चालीस पायोंवाली गोल मेज के गिर्द जमा हो गये। वे इस समय अदृश्य बगीचे में खुलनेवाले छज्जे के खुले दरवाजों की ओर देखते हुए खुसुर-फुसुर कर रहे थे।

तालाब किनारे के विल्लो वृक्षों की सरसराहट से यह मौत का सा सन्नाटा टूटा। इसके साथ ही रुक पक्षी डरकर शोर मचाते हुए उड़े। पिता अंधकार की चादर में लिपटे हुए छज्जे

में बाहर चले गये। शोर अधिक ऊँचा और व्यापक हो गया। आखिर हवा का एक तेज झोंका आया और छज्जे के करीब खड़े वृक्ष की शाखाएं ज़मीन चाटने लगीं। इसके साथ ही खेतों की गंध घर में फैल गई और मुरझाये हुए पत्ते अन्दर आ गिरे। धुंधले लैम्प की बत्ती फड़फड़ाई और चिमनियों तथा घर के कोनों में गुस्से से पागल होती हुई तेज हवा हू-हू, शूं-शूं करने लगी। कहीं किसी खिड़की का दरवाज़ा भड़भड़ाया और शीशा टूटकर गिरा। अब सारा बगीचा शोर मचा रहा था। वृक्षों की अदृश्य चोटियां तेज हवा में झूल रही थीं और उनके तने चरचरा रहे थे। अस्त-व्यस्त वालों के साथ वासीली निकीत्येविच छज्जे से लौटे, उनका मुंह खुला हुआ था और आंखें फैली-फैली-सी थीं। आंखों को चौंधियाती हुई बिजली की नीली-सफ़ेद कौंध ने रात के अंधेरे को चीर डाला और घड़ी भर के लिये नीचे-नीचे और हवा के कारण झुके हुए वृक्ष काली परछाइयों से दिखाई दिये। फिर से अन्धेरा छा गया। सारा आकाश ही गरजता हुआ फट पड़ा। शोर के कारण किसी को भी यह नहीं सुनाई दिया कि कब शीशे पर बरसाती बूंदें गिरीं और नीचे को बह चलीं। मूसलाधार बारिश थी, धार बांधकर पानी बरसने लगा था। मां छज्जे के दरवाज़े पर खड़ी थी, उसकी आंखें छलछलाई हुई थीं। बैठक में सीलन, सड़े पत्तों, बरसात और घास की गंध भर गई।

पत्र आया

ऊतेव्का गांव के बाज़ार-चौक के डाकख़ाने के सामने निकीता काठी से नीचे उतरा। बाहर काले-सफ़ेद खम्भे के साथ उसने अपना घोड़ा बांधा।

खुले काउंटर के पीछे अस्त-व्यस्त वालों और फूले-फूले गालोंवाला पोस्टमास्टर बैठा हुआ मोमबत्ती पर मुहर लगानेवाली लाख पिघला रहा था। उसकी मेज़ पर लाख और स्याही के धब्बे लगे थे और तम्बाकू की राख बिखरी हुई थी। जब लिफ़ाफ़े पर पिघली हुई काफ़ी लाख इकट्ठी हो गई, तो उसने बालोंवाले हाथ में मुहर ली और इतने जोर से उस पर दे मारी मानो पत्र भेजनेवाले की खोपड़ी कुचल देना चाहता हो। फिर उसने मेज़ की दराज़ में हाथ डाला, डाक-टिकट निकाला, अपनी लम्बी-सी जवान बाहर निकालकर उसे गीला किया, लिफ़ाफ़े पर चिपकाया, मुंह बनाकर थूका और इसके बाद चर्वी से ढकी हुई आंखें निकीता की ओर उठाईं।

पोस्टमास्टर का नाम था इवान इवानोविच लांदिशेव। उसे सभी अख़बार और सभी पत्रिकाएं पढ़ने की आदत थी। जब तक वह उन्हें शुरू से अन्त तक न पढ़ लेता उन्हें ग्राहकों को न भेजता। उसके खिलाफ़ कई बार समारा में शिकायत की गई, मगर उसने अपनी आदत न छोड़ी। हां, पहले से ज्यादा बदमिज़ाज हो गया। साल में छः बार वह शराब के नशे में धुत्त होता और उस समय तो लोग डाकख़ाने में क़दम रखते हुए भी डरते। इन दिनों में पोस्टमास्टर खिड़की से अपना सिर बाहर निकालकर सारे चौक को सुनाकर चिल्लाता—

“तुम धुन बनकर मेरी आत्मा को खा गये हो, बेड़ा गर्क हो तुम्हारा!”

“पिता जी ने मुझे डाक लाने के लिये भेजा है,” निकीता ने कहा।

पोस्टमास्टर ने उसे कोई जवाब नहीं दिया और फिर से लाख पिघलाने लगा। लाख की एक बूंद उसके हाथ पर गिर गई, वह चिल्लाकर उछला और फिर से बैठ गया।

“कौन है तुम्हारा बाप, मुझे क्या मालूम,” पोस्टमास्टर ने झुंझलाकर कहा, “हर कोई यहां बाप है, सब बाप ही बाप हैं।”

“क्या कहा आपने?”

“यही कि तुम्हारे हजार बाप हैं।” पोस्टमास्टर ने तो मेज के नीचे थूका भी। “नाम बताओ, नाम। क्या नाम है तुम्हारे बाप का?” उसने लाख नीचे फेंक दी और जब निकीता ने उसके प्रश्न का उत्तर दिया तो दराज में से पत्रों का एक पुलिन्दा निकालकर उसकी ओर बढ़ा दिया।

निकीता ने पत्र अपने थैले में रख लिये और डरते-सहमते हुए पूछा—

“पत्र-पत्रिकाएं नहीं हैं क्या?”

पोस्टमास्टर ने मुंह फुलाना शुरू किया। निकीता जवाब का इन्तजार न कर बाहर भाग गया। डाकखाने के बाहर खम्भे से बंधा हुआ क्लोपिक पांव पटक रहा था और अपने ऊपर धावा बोलनेवाली मक्खियों से निजात पाने के लिये पूंछ हिला रहा था। सनीले बालोंवाले छोटे-छोटे दो लड़के, जिनके मुंह पर कोई लाल चीज लगी हुई थी, घोड़े को देख रहे थे।

“अपना रास्ता लो!” घोड़े पर सवार होते हुए निकीता ने चिल्लाकर कहा।

एक लड़का तो धूल पर बैठ गया, दूसरा मुड़ा और भाग गया। खिड़की के पीछे निकीता को पोस्टमास्टर की झलक मिली। वह फिर से लाख पिघलाने के काम में जुट गया था।

निकीता जब गांव से निकलकर पकी हुई फसलों के कारण गर्मायी और सुनहरी-पीली हुई स्टेपी में पहुंचा, तो उसने क्लोपिक को मनमानी चाल से चलने की छूट दे दी, अपना थैला खोला और पत्रों पर नजर डाली।

हल्के जामुनी रंग के लिफाफे में एक छोटा-सा पत्र था। उसपर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था—“निकीता के लिये।” पत्र बेलबूटोंवाले कागज पर लिखा हुआ था। उत्तेजना से अपनी आंखें मिचमिचाते हुए निकीता ने पढ़ा—

“प्यारे निकीता,

मैं तुम्हें जरा भी नहीं भूली हूँ। मैं तुमको बहुत प्यार करती हूँ। आजकल हम देहाती बंगले में रह रहे हैं। बड़ा प्यारा-सा है यह बंगला। यह सच है कि वीक्टर ने मेरा नाक में दम कर रखा है, मुझे चैन से नहीं जीने देता। वह मां के हाथों से बिल्कुल निकल गया है। तीन बार मशीन से सिर मुंडवा चुका है और उसका सारा बदन खराशों-खरोंचों से भरा रहता है। बगीचे में मैं अकेली ही सैर किया करती हूँ। हमारे यहां झूला भी है और सेब भी, जो अभी तक पके नहीं। तुम्हें ‘जादुई जंगल’ कविता का ध्यान है? पतझर में हमारे पास समारा में आओ। तुम्हारी दी हुई अंगूठी मैंने अभी तक तो गुम नहीं की। अच्छा, नमस्ते।

लील्या।”

निकीता ने इस अद्भुत पत्र को कई बार पढ़ा। अचानक क्रिसमस की छुट्टियों के शानदार दिनों की याद ताज़ा हो उठी। मोमबत्तियाँ जल रही थीं। दीवारों पर परछाइयाँ नाच रही थीं, एक लड़की की दिल में उतरती नीली आंखों के ऊपर बड़ी-सी 'बो' नज़र आई, कागज़ी मालाएं सरसरा उठीं और पाले से जमी हुई खिड़कियाँ चांदनी में चमकने लगीं। बर्फ़ ढकी छतें, सफ़ेद वृक्ष और बर्फ़ीले मैदान पारदर्शी प्रकाश में नहाये हुए थे... लील्या फिर से लैम्प के नीचे गोल मेज़ पर बैठी थी, मुट्ठी पर सिर टिकाये... जादू, हाँ जादू था यह!...

निकीता रकाबों में खड़ा हुआ और उसने चाबुक सटकारा। कुछ ऐसे अचानक ही उसने यह किया कि क्लोपिक एक ओर को उछला और सरपट भाग चला। हवा उसके कानों में सीटियाँ बजाने लगी। चौड़ी स्टेपी के ऊपर, पकी हुई फ़सलों के ऊपर जो कहीं-कहीं से काटी जा चुकी थीं और नदी किनारे की खड़ी कच्ची चट्टानों के ऊपर बहुत ऊँचाई पर एक उक्काव उड़ रहा था। घाटी की खारी झील के आसपास कुमष्टि पक्षी दर्दभरी तान अलाप रहे थे। "सरपट! सरपट! सरपट!" निकीता ने सोचा। उसका दिल खुशी से बल्लियों उछल रहा था, जोर से धड़क रहा था।

"शूँ, शूँ करो, हवा!... उड़ो, उड़ो, उक्काव!... चीखो, चीखो, कुमष्टियो—मैं तुम से ज्यादा खुशकिस्मत हूँ। हवा और मैं, हवा और मैं..."

पेस्त्राव्का का मेला

वासीली निकीत्येविच और मां के बीच पिछले तीन दिनों से झगड़ा हो रहा था। पिता पेस्त्राव्का के मेले में जाना चाहते थे, मगर मां इसके एकदम खिलाफ़ थी।

"पेस्त्राव्का में आपके बिना भी काम चल जायेगा," मां ने कहा।

"अटपटी बात है," पिता ने दाढ़ी के बालों को मुट्ठी में लिया, उन्हें काटा और कंधे झटककर कहा, "बड़ी अटपटी बात है!"

"आप इसे अटपटी बात भी समझ सकते हैं, मेरे दोस्त।"

"मगर यह तो वास्तव में अजीब, बहुत ही अजीब बात है!"

"मैं फिर दोहराती हूँ," मां ने कहा, "कि हमें और घोड़ों की ज़रूरत नहीं है। भगवान की दया से अस्तबल घुड़सवारी के घोड़ों से भरा पड़ा है!"

"आखिर तुम यह बात समझती क्यों नहीं कि मैं उस निकम्मी ज़ारेम्का घोड़ी को बेचने के लिये वहाँ जा रहा हूँ।"

"इसकी बिल्कुल ज़रूरत नहीं है। ज़ारेम्का बढ़िया घोड़ी है।"

"यह तुम मुझे समझा रही हो!" पिता ने टांगें फैला लीं और आंखें फाड़ फाड़ कर मां की ओर देखने लगे। "ज़ारेम्का काटती है और दुलत्ती चलाती है।"

"नहीं," मां ने दृढ़तापूर्वक कहा। "ज़ारेम्का न तो काटती है और न दुलत्ती चलाती है।"

“अगर यही बात है,” पिता ने नम्रता से ज़रा सिर झुकाया, “तो मैं साफ़-साफ़ कह देना चाहता हूँ कि या तो यह निकम्मी घोड़ी यहां रहेगी या मैं।”

आखिर मां झुक गई। निकीता पहले से ही ऐसा जानता था। दोनों पक्षों ने थोड़ी-थोड़ी एक-दूसरे की बात मान ली और इस तरह झगड़े का अन्त और समझौता हो गया। यह तय हुआ कि घोड़ी बेच दी जाये और पिता ने वचन दिया कि वे मेले में “पानी की तरह पैसा नहीं बहायेंगे”।

इसलिये कि जेब का पैसा खर्च न हो, पिता जी ने एक जुगत निकाली। उन्होंने हवा में झड़ गये सेबों के दो छकड़े फुटकर बिक्री के लिये मेले में भेजने का फ़ैसला किया। निकीता ने मीशका कोर्याशोनोक के साथ छकड़े पर मेले में जाने की अनुमति मांगी। उसे अनुमति मिल गई।

सुबह से ही तरह तरह की अड़चनें सामने आने लगीं। पता चला कि घोड़े तैयार नहीं किये गये थे और इसलिये मीशका कोर्याशोनोक बग़्घी के घोड़े पर सवार होकर घोड़ों के झुण्ड की ओर उड़ चला। घोड़ों का झुण्ड तालाब के परे ढालू जमीन पर चर रहा था और सुबह की धुंध में मुश्किल से ही नज़र आ रहा था। इसके बाद जब सफ़ेद टख़नोंवाली मुश्की घोड़ी ज़ारेम्का को अस्तबल से लाया गया और साईस उसे साफ़ करने और संवारने लगे तो उसने सेर्गेई इवानो-विच को कंधे से पकड़ लिया और उसके कंधे में लगभग अपने दांत गड़ा दिये। पिता ने खिड़की से यह दृश्य देखा तो नाइट सूट पहने हुए ही अस्तबल की ओर भागे।

“तो यह सचमुच काटती है! क्या कहा था मैंने तुम लोगों से! बेड़ा सक्क हो तुम्हारा!”

ज़ारेम्का पीछे हटने और पिछली टांगों के बल बैठने लगी। वह सेर्गेई इवानोविच को जो उसे लगाम पहनाने की कोशिश कर रहा था, अपने साथ घसीट ले गई, हिनहिनाई, उसने लगाम तुड़ा ली, अपना सिर झटकते और ऐसे दुलत्ती चलाते हुए कि मिट्टी उड़ उड़कर दूर गिरने लगी, बग़्घीख़ाने से भाग निकली और सरपट दौड़ती हुई झुण्ड में जा मिली। फिर एक और अड़चन सामने आई। पता चला कि अत्योम जिसे छकड़े लेकर जाना था, कहीं गायब हो गया है। उसकी खोज की गई। पता चला कि पूरे कर न चुकाने के लिये उसे जेल में डाल दिया गया है। अत्योम पांच साल से पूरे कर नहीं चुका रहा था। इसलिये यह हुक्म जारी किया गया कि वह जहां भी मिले, उसे गिरफ़्तार कर जेल में बन्द कर दिया जाये। किसी के ज़मानत देने पर ही उसे रिहा किया जाये।

वासीली निकीत्येविच ने गांव के मुखिया के पास एक घुड़सवार सन्देशवाहक भेजा और इस तरह अत्योम की ज़मानत पर रिहाई हुई। वह बहुत खुश-ख़ुश ठेले जोतने लगा। आखिर ठेले तैयार हो गये और ज़ारेम्का को पिछले ठेले के साथ बांध दिया गया। निकीता और मीशका कोर्याशोनोक सबसे आगे वाले ठेले पर बैठ गये। अत्योम ने लगाम झटकी और ठेले चल दिये... सेर्गेई इवानोविच ने अत्योम से मज़ाक़ किया। वह पहिये की ओर संकेत करते हुए चिल्लाया—

“धुरे की कील को तो देखो!” अत्योम फिर से नीचे उतरा, उसने पहिये पर नज़र डाली तो कील को ठीक-ठाक पाया। उसने सिर खुजलाया और झटका... आखिर रवाना हुए।

सफ़र बहुत बढ़िया रहा। हल्की-हल्की हवा चल रही थी जिसमें नागदौने और भूसे की गन्ध बसी हुई थी। वह खेतों के बीच खड़े बरडोक के पौधे के पत्तों से खिलवाड़ कर रही थी। समतल स्तेपी में जहां भी नज़र जाती थी भूसे की टालें दिखाई देती थीं। इन्हीं टालों के बीच से एक बाज़ उड़ा और धीरे-धीरे आकाश में ऊंचे चढ़ता गया। दूरी पर हलवाहों के खेत-कैम्प में खाना पकाया जा रहा था। वहां से नीला धुआं ऊपर उठ रहा था।

ये लोग खेत-कैम्प यानी पहियेदार घर के पास पहुंचे। अत्योम ने घोड़े रोके। अत्योम और लड़के पीपे में से तालाब का पानी पीने के लिये गये जिसमें से पीपे की गंध आ रही थी और जो इन्फूसोरिया (कीटाणुओं) से भरपूर था। हलवाहों के लिये खाना पका रहे बूढ़े ने ठेले की बगल में हाथ रखा और अपना नंगा सिर हिलाते हुए कहा—

“विक्री के लिये सेब लिये जा रहे हैं?” निकीता ने उसकी ओर एक सेब बढ़ाया। “नहीं, मेहरबानी है, दांत ही नहीं हैं।”

वे कैम्प से खाना हुए तो उन्हें बैलों को हांकनेवाले चार हांकिये मिले। जुए में जुते और हिलते-डुलते बैलों के पीछे ऊपर को उठे हुए फालों वाले हल थे जो गढ़ों में अटक-अटक जाते थे। हलों के पीछे थे हलवाहे जो पसीने से अकड़ी गाढ़े की कमीजें पहने थे। ये सभी लोग दलिया खाने जा रहे थे। अत्योम फिर रुक गया और देर तक खड़ा रहकर यह पूछताछ करता रहा कि पेस्त्राव्का गांव की ओर जाने के लिये किस ओर को मुड़े।

दोपहर होते-होते हवा ने अपने पंख समेट लिये और बहुत दूर, स्तेपियों के छोरों पर गर्मी की लहरें उठने लगीं। इस हिलती-डुलती नीली धुंध में से निकीता को कभी तो तैरता हुआ कोई घर नज़र आता, कभी पृथ्वी पर लटका-सा वृक्ष दिखाई देता और कभी मस्तूलों के बिना किसी जहाज़ की झलक मिलती। ठेले चलते जा रहे थे। टिट्टे अपना राग अलाप रहे थे। फिर घंटियों की लय-ताल में बंधी आवाज़ स्तेपी में गूंज उठी। ज़ारेम्का विदक कर एक ओर को हट गई और फिर जोर से हिनहिनाई। अत्योम ने मुड़कर देखा और आंख झपकाकर बोला—

“मालिक आ रहे हैं!”

कुछ ही क्षण बाद तीन घोड़ोंवाली बग्गी ठेलों के पास से गुज़री। आगे-आगे लाई बायरन था, सिर ऊपर को उठाये और दुलकी चाल से दौड़ता हुआ। उसके पीछे ऊंचे पुट्टोंवाले अन्य दो घोड़े थे जो गुस्से से ज़मीन पर मुंह मारते हुए दौड़ रहे थे। बग्गी में पिता जी बैठे थे कूल्हों पर हाथ रखे और कुहनियों को बाहर निकाले हुए। वे टसर की जाकेट पहने थे और उनकी दाढ़ी हवा के साथ-साथ इधर-उधर उड़ रही थी। खुशी से चमकती आंखों से देखते हुए उन्होंने चिल्लाकर निकीता से पूछा—

“मेरे पास आना चाहते हो?” और तीन घोड़ों की बग्गी तेज़ी से आगे निकल गई।

आखिर सफ़ेद गिरजे के दो गुम्बज, कुओं के ऊपर बांस, इक्के-दुक्के विल्लो वृक्षों की चोटियां, मकानों की छतें और धुएं के टेढ़े-मेढ़े सांप धीरे-धीरे उभरने लगे। धूप में चमकते हुए पीले

पंकिल तटवाली नदी के आगे पेस्ताब्का का सारा गांव दिखाई दिया। गांव से हटकर मैदानों में मेले के खेमे थे और पशुओं के झुण्ड काले धब्बों से प्रतीत हो रहे थे।

घोड़ों ने दुलकी चाल से पानी की सतह को छूते हुए डांवांडोल पुल को पार किया, गिरजाघर के चौक में से गुजरे जहां एक गुलाबी मकान की कोनेवाली खिड़की में एक मोटा-सा पादरी वायलिन बजा रहा था और फिर मैदान की ओर मुड़ गये जहां मेले के खेमे खड़े थे। ठेला कुम्हारों के खेमे के पास जाकर रुक गया।

निकीता ठेले में खड़ा हो गया और उसे यह दृश्य दिखाई दिया — छाती पर खुले हुए रुपहले बटनोंवाला नीला खफतान पहने हुए एक जिप्सी, जिसकी काली दाढ़ी आंखों तक पहुंची हुई थी, एक बीमार घोड़े के दांतों को देख रहा था। घोड़े का मालिक, एक दुबला-पतला और नाटा देहाती आश्चर्य से जिप्सी को ताक रहा था। इसके बाद निकीता को दिखाई दिया एक चालाक बूढ़ा जो एक डरी-सहमी औरत को घास की पत्तियों के डिजाइन वाला मिट्टी का बर्तन खरीदने के लिये राजी कर रहा था। बूढ़ा बर्तन को नाखून से बजा रहा था। “मगर मुझे तो इस तरह के बर्तन की जरूरत ही नहीं है,” औरत ने कहा। “तुम सारी दुनिया खोज आओ, प्यारी, तुम्हें ऐसा बर्तन नहीं मिलेगा।” नशे में धुत एक किसान अंडों से भरी हुई टोकरी के पास खड़ा हुआ गुस्से से चिल्ला रहा था — “तुम इन्हें अंडे कहते हो? ये अंडे हैं — बिल्कुल जरा-जरा से! हमारे कोल्दिवान गांव के अंडे, अंडे होते हैं। हमारे कोल्दिवान गांव की मुर्गियां गले-गले तक अनाज में रहती हैं।” गुलाबी और पीले ब्लाउज पहने और शोख रंगों के रुमाल बांधे हुए लड़कियां मंडपों की ओर जा रही थीं जहां चीखते-चिल्लाते हुए विक्रेता अपने काउंटर्स पर झुककर राहगीरों को कंधों से थामकर कहते थे — “इधर आइये, इधर आइये, सभी हम से माल खरीदते हैं!” मेले के वातावरण में गर्द-गुबार, चीख-पुकार और घोड़ों की हिनहिनाहट बसी हुई थी। मिट्टी की सीटियां गूँज रही थीं। ठेलों के बम हर जगह ऊपर की ओर उठे हुए दिखाई देते थे। नीली कमीज पहने जो कंधे पर से फटी हुई थी, एक नौजवान लड़खड़ाता, दूसरों से टकराता और पूरा जोर लगाकर अकार्डियन बजाता हुआ गा रहा था — “हे दून्या, दून्या, दून्या...”

अत्योम ने घोड़े खोले और ठेले पर लदे हुए सेबों की रस्सियां अलग करनी शुरू कीं। इसी समय फीजी कमीज पहने और कंधे पर लगी पेट्टी के साथ तलवार लटकाये हुए एक व्यक्ति अत्योम के पास आया। इस व्यक्ति ने अत्योम की ओर देखा और अपना सिर हिलाया। अत्योम ने भी उसकी ओर देखा और अपनी टोपी उतार ली।

“आखिर तुम मेरे हत्ये चढ़ ही गये, आवारा,” इस मूंछोंवाले व्यक्ति ने कहा। “इस बार मैं तुम्हारा किस्सा निपटाकर ही रहूंगा।”

“जैसी आपकी मर्जी,” अत्योम ने जवाब दिया।

इस मूंछोंवाले व्यक्ति ने अत्योम का हाथ अपनी बगल में दबाया और उसे खींच ले चला। मिट्टी के बर्तन बेचनेवाले धूर्त बुढ़े ने इन्हें जाते देखा तो मुस्करा दिया। मीष्का कोर्याशिनोक ने चिन्तित होते हुए फुसफुसाकर निकीता से कहा —

“भागकर जाओ, अपने पिता को ढूँढो और उन्हें बताओ कि सिपाही अत्योम को पकड़ ले गया है। मैं ठेलों की देखभाल करूँगा।”

निकीता भीड़ को चीरता और कुचली हुई दूब के मैदान में से भागता हुआ घोड़ों के बाड़ों की ओर गया। वहाँ उसे दूर से ही पिता की बग्गी खड़ी नजर आई। पिता बहुत ही रंग में एक बाड़े के पास अपनी जाकेट की जेबों में हाथ डाले खड़े थे। निकीता ने उन्हें अत्योम के बारे में बताना शुरू किया, मगर पिता बीच में ही टोकते हुए बोले—

“उस नौउम्र कुम्भैत घोड़े को तो देखो। क्या गजब का घोड़ा है! वाह, वाह...”

बाड़े में तीन बश्कीरी, जो बदरंग रूईदार चोगे और कनटोपे पहने थे, हाथों में फंदे लिये हुए एक चितकबरे घोड़े को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। मगर घोड़ा कनौतियां बदलता, दांत दिखाता और चमकता-चाँकता हुआ फंदों से बच निकला। पहले तो वह घोड़ों के झुण्ड में जा घुसा और फिर खुले में आ गया। अचानक वह घुटनों के बल बैठा और रेंगकर बाड़े के बांसों के नीचे चला गया, उसने अपनी गर्दन से बांस ऊपर को किया, बाहर निकल गया और छलांगें लगाता घास वाले खुले मैदान में भाग चला। उसकी पूंछ और अयाल हवा में लहराने लगे। पिता आनन्द-विभोर होकर अपने पैर पटकने लगे।

टेढ़ी-मेढ़ी टांगोंवाले बश्कीरी लड़खड़ाते हुए अपने सवारी के घोड़ों की ओर भागे। ये घोड़े छोटे-छोटे और झबरीले थे। बश्कीरी फुर्ती से घोड़ों पर सवार हुए, दो तो विद्रोही का पीछा करने लगे और एक फंदा लिये हुए सामने की ओर से उसकी ओर बढ़ा। खुले मैदान में भागता हुआ सरकश घोड़ा दायें-बायें होने और इधर-उधर मुड़ने लगा। मगर हर बार ही उसने जानवरों की तरह चीखते-चिल्लाते हुए किसी न किसी बश्कीरी को अपने सामने पाया। घोड़ा झिझक कर रुका और उसी क्षण उसके गले में फंदा डाल दिया गया। उसने फंदे में से निकल जाने की कोशिश की, मगर बश्कीरियों ने उसके अगल-बगल तड़ातड़ चाबुक बरसाये और फंदे से उसका गला लगभग घोंट डाला। घोड़ा लड़खड़ा कर गिर गया। फेन उगलते और कांपते हुए घोड़े को बाड़े में वापिस लाया गया। शुर्रियोंदार चेहरेवाला एक बूढ़ा बश्कीरी एक बोरी की तरह धम से काठी से नीचे गिरा और वासीली निकीत्येविच के पास आकर बोला—

“हुजूर, यह घोड़ा खरीद लीजिये।”

पिता हंसकर दूसरे बाड़े की ओर चल दिये। निकीता ने फिर से अत्योम की चर्चा चलाई।

“बड़े दुख की बात है,” पिता ने कहा, “मगर वैसे देखा जाये तो मैं इस उल्लू का करुं भी तो क्या? अच्छा सुनो, यह लो बीस कोपेक, जाकर एक नान और कुछ मछली खरीद लो। लौटकर ठेलों के पास मेरा इन्तज़ार करो... मैंने ज़ारेम्का मेदवेदेव को बेच दी है, सस्ते दामों, मगर बिना किसी परेशानी के। भाग जाओ। मैं जल्दी आ जाऊँगा।”

मगर यह “जल्दी” बहुत देर साबित हुई। स्तेपी के छोर पर बड़ा और पीला-नारंगी रंग का सूरज लटका हुआ था। मेले के मैदान के ऊपर सुनहरी धुंध छाई हुई थी। गिरजे में

संध्या की प्रार्थना की घंटियां बज रही थीं। इस वक़्त पिता की सूरत नज़र आई। उनके चेहरे पर परेशानी झलक रही थी।

“ऐसे संयोगवश ही मैंने कुछ ऊंट ख़रीद लिये हैं, बहुत ही सस्ते दामों,” निकीता से आंखें न मिलाते हुए उन्होंने कहा... “उन्होंने घोड़ी ले जाने के लिये अभी तक आदमी नहीं भेजा? बड़ी अजीब बात है। सेब काफ़ी बेच दिये हैं क्या? सिर्फ़ पैसठ कोपेक के? बड़ी अजीब बात है। पर ख़ैर, भाड़ में जायें ये सेब। मैंने मेदवेदेव से कह दिया था कि मैं घोड़ी के साथ उसे सेब भी दे दूंगा... चलो, चलकर अत्योम को छुड़ा लायें।”

वासीली निकीत्येविच ने निकीता के कंधे पर हाथ रखा और वे शान्त हो चले मेले के मैदान को ठेलों के बीच से गुज़रते हुए लांघने लगे। ठेलों से सूखी घास, राल और अनाज की गंध आ रही थी। जहां-तहां उन्हें ऊंची आवाज़ों में गीत गूँजते सुनाई दिये जो हवा में तैरते हुए स्तेपियों में जाकर खो जाते थे। कहीं एक घोड़ा हिनहिनाया।

“जानते हो,” पिता रुके और उनकी आंखों में शरारत की चमक झलक उठी। “घर पहुंचने पर मेरी शामत आयेगी। पर ख़ैर, कोई बात नहीं। कल हम चितकबरे घोड़ों की तिकड़ी देखने चलेंगे... जहां सत्यानास, वहां सवा सत्यानास...”

ठेले पर

उस शाम को निकीता सोंधी-सोंधी महकवाले भूसे से लदे ठेले पर खलियान से लौटा। जैसा कि पतझर में हमेशा होता है, उदासी भरे और नारंगी रंग के डूबते हुए सूरज की तंग-सी पट्टी स्तेपी के ऊपर, सदियों पहले इधर से गुज़रे ख़ानाबदोश क़बीलों द्वारा छोड़े गये स्मारकों यानी प्राचीन क़ब्रों के टीलों के ऊपर गायब होती जा रही थी।

झुटपुटे में फ़सलें कटने के बाद सूने हुए खेतों में हल-रेखाएं नज़र आ रही थीं। जहां-तहां अंधेरे में हलवाहों के खेत-कैम्प की आग और कैम्प के ऊपर बल खाता हुआ कड़वा धुआं लहराता दिखाई दे रहा था। ठेला चूंचर कर रहा था, हिचकोले खा रहा था। निकीता आंखें मूंदे हुए चित्त लेटा था। उसे अपने सारे शरीर में सुखद-सी थकान अनुभव हो रही थी। ऊंघते-ऊंघते उसे दिन भर की घटनाएं याद हो आईं।

...गाहनी के सिरे पर जुती हुई जानदार घोड़ियों की चार जोड़ियां लगातार चक्कर लगाती जाती थीं। मध्य में लट्टे पर बनी हुई छोटी-सी सीट पर मोशका कोर्याशोनोक बैठा था जो लगातार चिल्लाता और चाबुक सटकारता जाता था।

एक अन्तहीन पट्टा मकान जितनी बड़ी और लाल रंग की गाहनेवाली मशीन के पहिये को लगातार घुमा रहा था। इस मशीन के दोनों ओर भूसा और दाने अलग करनेवाले भाग जोर से हिल रहे थे। इस गाहनी का ड्रम कभी ऊंची और कभी नीची आवाज़ निकाल रहा था जो सारी स्तेपी में गूँज रही थी। वह मशीन में डाली जानेवाली फ़सलों की पूलियों को हड़पता

जाता था, मशीन के गर्द-गुबार भरे पेट में भूसा और अनाज धकेलता जाता था। वासीली निकीत्येविच खुद ही मशीन में पुलियां डाल रहे थे। वे आंखों पर टिका रहनेवाला काला चश्मा लगाये थे और कुहनियों तक पहुंचनेवाले चमड़े के दस्ताने पहने थे। उनकी कमीज पसीने के कारण पीठ से चिपकी हुई थी, वे धूल से अटे पड़े थे, उनकी दाढ़ी भूसे से ढकी हुई थी और चेहरा स्याह हुआ पड़ा था। चू-चर्र करते हुए ठेले और पुलियां लाते जा रहे थे। एक छोकरा टांगें चौड़ी करके उस तख्ते के पीछे भागता जो मशीन से भूसा बाहर ला रहा था। वह भूसे को बाहों में भर लेता, भागकर तख्ते पर चढ़ता और भूसे को ढाल पर डाल देता। बुजुर्ग किसान लकड़ी के लम्बे-लम्बे कांटों से ढाल पर भूसे को ढंग से जमाते। वर्षभर की चिन्ताओं, श्रम और परेशानियों का अन्त हो गया था। दिन भर गानों और हंसी-मजाक का बाजार गर्म रहा था। अत्योम गाहनी में डालने के लिये लायी जा रही पुलियों को ठेलों से नीचे उतार रहा था। लड़कियों ने उसे ठेलों के बीच ही पकड़ लिया और उसे गुदगुदाया जिससे वह बहुत घबराता था। उन्होंने उसे भूसे में इधर-उधर लोटाया-पोटाया और उसके कपड़ों के अन्दर भूसा भर दिया था। बहुत मजा आया था इसमें!...

...निकीता ने आंखें खोलीं। ठेला दायें-बायें धक्के खाता हुआ चर्र-मर्र कर रहा था। स्तेपी में घुप अंधेरा छा चुका था। सारे आकाश में अगस्त महीने के सितारे झिलमिला रहे थे। आकाश का तलहीन खड्ड ऐसे धड़क रहा था मानो सितारों की धूल के ऊपर से हवा का झोंका गुजर गया हो। अन्धकारपूर्ण आकाश में नभ-गंगा चमक रही थी। निकीता के लिये ठेला एक झूले के समान था जिसमें वह शान्ति से दूर के संसारों को ताकता हुआ सितारों की छाया में तैर-सा रहा था।

“यह सब कुछ मेरा है,” उसने सोचा। “किसी दिन मैं पंखोंवाले जहाज में बैठकर बहुत दूर की दुनिया में उड़ जाऊंगा...” वह चमगादड़ के समान पंखों वाले जहाज, आकाश के अन्धकारमय शून्य और निकट आते हुए नक्षत्र के नीले तटों, रजत पर्वतों, जादुई झीलों, किलों और बादलों की काली परछाइयों की कल्पना करने लगा, जो सूर्यास्त के समय पानी की सतह पर तैरा करती हैं।

ठेला पहाड़ी से नीचे उतरने लगा। दूरी पर कुत्ते भूंक रहे थे। तालाबों की ओर से सीली-सीली सांस की अनुभूति हुई। वे अहाते में पहुंचे। घर की खिड़कियों में से, खाने के कमरे में से प्यारी-प्यारी तन सहलानेवाली रोशनी छन रही थी।

समारा में

पतझर आ गई और धरती आराम की तैयारी करने लगी। सूरज देर से निकला, गर्मी के बिना और बूढ़ा-सा जिसे अब धरती से कोई सरोकार नहीं था। पक्षी दूर उड़ गये। बगीचा सूना-सूना हो गया, पत्ते झड़ गये। नाव को तालाब से बाहर निकाल लिया गया और उलटाकर छानी में रख दिया गया।

जिन जगहों पर छतों की छाया पड़ती थी, वहां अब सुबह के समय पाले के कारण घास सफ़ेद नज़र आती। पाले से ढकी पतझर की हरी घास के बीच से गुज़रते हुए हंस तालाब की ओर जाते। हंस मोटे थे और बर्फ़ के गोलों की भांति लुढ़कते हुए से प्रतीत होते। गांव की बारह लड़कियां नौकरों के क्वार्टरों के पास एक बहुत बड़ी देग में पत्तागोभी काट रही थीं। अहाते भर में उनके गीतों और उनकी छुरियों की आवाज़ गूँज रही थी। दुन्याशा पत्तागोभी के डंठल चबाने के लिए उस तहख़ाने से भागती हुई आई जहां मक्खन बनाया जा रहा था। पतझर के दौरान उसका रूप और भी निखर आया था, उसके गाल गुलाब जैसे लाल हो गये थे। किसी को भी यह समझने में देर न लगी कि वह क्यों नौकरों के क्वार्टरों की ओर भागी जा रही थी। वह वहां पत्तागोभी के डंठल चबाने या लड़कियों से हंसी-मजाक़ करने नहीं, बल्कि इसलिये जा रही थी कि जवान मज़दूर वासीली उसे खिड़की से देख सके। वह भी दुन्याशा के समान ही था, गोरा-गोरा, लाल-लाल। अत्योम का तो बिल्कुल ही दिल टूट गया था—वह क्वार्टर में बैठा हुआ घोड़े के अंसबंध की मरम्मत कर रहा था।

मां मकान के जाड़ेवाले भाग में आ चुकी थी। अंगीठियां गर्मायी जाने लगी थीं। साही अखीलका अलमारी के नीचे कागज़ और चिथड़े घसीट-घसीट कर ले जाती थी और जाड़े भर सोये रहने के लिये अपना घर बनाने के उद्देश्य से दौड़-धूप करती रहती थी। अर्कादी इवानोविच अपने कमरे में सीटी बजा रहे थे। निकीता ने थोड़े से खुले हुए दरवाजे में से झांककर देखा—अर्कादी इवानोविच शीशे के सामने खड़े थे, अपनी दाढ़ी का सिरा हाथ में थामे हुए। वे गहरी सोच में डूबे हुए सीटी बजा रहे थे। जाहिर था कि वे अपनी शादी के बारे में सोच रहे थे।

वासीली निकीत्येविच ने अनाज से भरे हुए ठेले समारा भेज दिये थे और अगले दिन खुद भी वहां चले गये थे। जाने के पहले मां के साथ उनकी काफ़ी लम्बी-चौड़ी बातचीत हुई थी। मां उनके पत्र की प्रतीक्षा में थी।

एक सप्ताह बाद वासीली निकीत्येविच का यह पत्र मिला—

“मैंने अनाज बेच दिया है और ज़रा कल्पना करो, सो भी अच्छे दामों पर, मेदवेदेव की तुलना में महंगा। जैसी कि हमें आशा करनी चाहिये थी, उत्तराधिकार का मुक़दमा जहां का तहां ही है। इसलिये हमारे दूसरे निर्णय को, जिसका तुमने कड़ा विरोध किया था, अमली शकल देना लाज़िमी हो गया है। हमें एक और जाड़े भर फिर एक-दूसरे से अलग नहीं रहना चाहिये। मैं तो यही सलाह देता हूं कि जितनी भी ज़ल्दी हो सके वहां से खाना हो जाओ, क्योंकि हाई स्कूल की पढ़ाई तो शुरू भी हो चुकी है। यह तो अपवाद ही समझो कि निकीता को दूसरी कक्षा की प्रवेश-परीक्षा देने की अनुमति मिल जायेगी। हां, संयोगवश मैं यह भी बता देना चाहता हूं कि कोई व्यक्ति बहुत ही बढ़िया चीनी फूलदानों की एक जोड़ी मुझे बेचना चाहता है। हमारे शहरी घर के लिये वे बहुत ठीक रहेंगे। कहीं तुम न बिगड़ उठो, सिर्फ़ इसी ख़्याल से मैंने इन्हें फ़िलहाल नहीं ख़रीदा है।”

मां ने सोच-विचार में बहुत समय नहीं गंवाया। दो बातों ने मां को तीन ही दिनों में तैयारी करने को मजबूर कर दिया। एक तो इस बात ने कि वासीली निकीत्येविच के हाथ में बहुत-सा पैसा था और दूसरे, विशेषतः इस डर ने कि वे चीनी फूलदान खरीद लेंगे, जो एकदम बेकार की चीज होंगे। उसने नगर में काम आ सकनेवाला फर्नीचर, बड़े-बड़े ट्रंक, अचारों के पीपे और मुर्गियां आदि ठेलों पर लदवाकर भेज दीं। वह खुद भी निकीता, अर्कादी इवानोविच और बावर्चिन वसिलीसा के साथ तीन घोड़ोंवाली दो बगियों में रवाना हो गई। दिन बड़ा उदासीभरा था, तेज हवा चल रही थी। सड़क के दोनों ओर के खेतों में से फसलें काटी जा चुकी थीं, हल चला दिये गये थे और अब वे खाली-खाली-से पड़े थे। मां को घोड़ों पर दया आ गई थी और इसलिये उन्हें हल्की दुल्की चाल से चलाया जा रहा था। कोल्दिबान की सराय में रात बिताई गई। अगले दिन दोपहर के खाने के समय समतल स्तेपी के छोर पर गिरजाघरों के गुम्बज, और भाप की आटा चक्कियों की चिमनियां नजर आईं। मां गुमसुम थी—उसे न तो नगर अच्छे लगते थे और न ही नगर का जीवन। अर्कादी इवानोविच बेचैनी के कारण अपनी दाढ़ी चबा रहे थे। काफी देर तक वे साबून बनाने के बूंददार कारखानों के पास से गुजरते रहे, लकड़ी की टालों के पास से गुजरे और फिर एक गन्दी बस्ती में से होकर निकले जहां बहुत-से शराबखाने और परचूनी की दूकानें थीं। फिर बगियों ने वह चौड़ा-सा पुल पार किया जहां रात के समय इर्दगिर्द की बस्तियों के लफंगे-बदमाश लड़के राहगीरों को लूट लेते थे। इसके बाद समारका नदी के खड़े तट पर भद्दी-सी खत्तियों की कतार नजर आई। थके-हारे घोड़े जोर लगाकर पहाड़ी पर चढ़े और खड़जोंवाली सड़क पर बग्यी के पहिये खड़खड़ा उठे। लकड़-दकड़ राहगीरों ने कीचड़ से लथपथ बगियों को आश्चर्य से देखा। निकीता को अनुभव हुआ कि दोनों बगियां बड़ी अटपटी और ऐसी हैं कि देखकर हंसी आये, कि घोड़े किसी देहाती के टट्टुओं जैसे हैं। काश कि वे मुख्य सड़क से बगियां हटा लें! एक चमकती-दमकती बग्यी पास से गुजरी जिस में बढ़िया दुल्की चालवाला मुश्की घोड़ा जुता हुआ था।

“सेर्गेई इवानोविच, आप घोड़ों को ऐसे धीरे-धीरे क्यों हांक रहे हैं? ज़रा तेज चलाइये न?” निकीता ने कहा।

“ऐसे भी पहुंच ही जायेंगे।”

सेर्गेई इवानोविच धीरे-गम्भीर-सा अपनी सीट पर बैठा था, अपने तीनों घोड़ों को दुल्की चाल से दौड़ाता जा रहा था। आखिर वे बगलवाली एक गली में मुड़े, आग-बुझाऊ स्टेशन के पास से गुजरे जिसके फाटक पर यूनानी टोप पहने एक गलफुल्ला नौजवान खड़ा था। एकमंजिला सफ़ेद मकान के सामने जाकर बगियां रुक गईं। इस मकान की सारी इयोड़ी के सामने लोहे का जंगला लगा हुआ था। खिड़की में से वासीली निकीत्येविच का खिला हुआ चेहरा दिखाई दिया। उन्होंने हाथ हिलाकर स्वागत किया, खिड़की से पीछे हटे और घड़ीभर बाद खुद आकर सामने का दरवाज़ा खोला।

निकीता ही भागकर सब से पहले घर में गया। सफ़ेद दीवारी कागज़वाली छोटी-सी बैठक बहुत रोशन थी। पालिश करके चमकाये गये फ़र्श पर दीवार के पास दो चीनी फूलदान रखे थे जो पानी रखने की सुराहियों जैसे लगते थे। बैठक के सिरे पर सफ़ेद स्तम्भोंवाली एक मेहराब थी। फ़र्श पर स्तम्भों की छाया पड़ रही थी। इसी मेहराब के नीचे बादामी पोशाक में एक लड़की दिखाई दी। वह सफ़ेद पेशबन्द के नीचे अपने हाथ बांधे थी और पालिश किये फ़र्श पर उसके बादामी जूते भी प्रतिबिम्बित हो रहे थे। वह बालों की एक चोटी गुंथे थी और उसके कानों के पीछे, गुद्दी के पास एक सफ़ेद 'बो' बंधी थी। उसकी नीली आंखों में गुस्से की झलक थी, वह तो लगभग त्योरी चढ़ाये हुए थी। यह लील्या थी। निकीता कमरे के बीचोंबीच ऐसे खड़ा था मानो उसके पैर फ़र्श पर चिपककर रह गये हों। लील्या उसी भांति निकीता की ओर देख रही थी जैसे मुख्य सड़क पर राहगीर सोस्नोव्का गांव से आनेवाली वग्घियों को देखते थे।

“तुम्हें मेरा ख़त मिला था?” लील्या ने पूछा। निकीता ने हामी भरी। “कहां है वह? इसी क्षण मुझे लौटा दो।”

यद्यपि ख़त निकीता की जेब में नहीं था, तथापि उसने अपनी जेबें टटोलनी शुरू कर दीं। लील्या बहुत ध्यान से और गुस्से के साथ निकीता की आंखों में आंखें डालकर देखती रही।

“मैं जवाब देना चाहता था, मगर...” निकीता बुदबुदाया।

“कहां है ख़त?”

“मेरे सूटकेस में।”

“अगर आज ही नहीं लौटा दोगे, तो हमारे बीच सब कुछ ख़त्म समझना... मुझे बहुत अफ़सोस है कि मैंने तुम्हें ख़त लिखा... मैं अब हाई स्कूल की पहली कक्षा में पढ़ती हूँ।”

लील्या ने होंठ भींच लिये और पंजों के बल खड़ी हो गई। केवल इसी समय निकीता को याद आया कि उसने लील्या के ख़त का जवाब नहीं दिया था। उसने गले की फांस निगली, शीशे की तरह चमकते हुए फ़र्श पर रगड़ के साथ पांव बढ़ाया... लील्या ने झटपट पेशबन्द के नीचे फिर से अपने हाथ छिपा लिये। उसकी नाक का सिरा ऊपर को उठ गया। लम्बी-लम्बी बरौनियों से आंखों को पूरी तरह ढककर उसने अपनी घृणा व्यक्त की।

“मुझे माफ़ कर दो,” निकीता ने कहा। “मुझे बेहद, बेहद... मैं घोड़ों, फ़सलों, कण्डनी, मीशका कोर्याशिनोक में ही उलझा रहा...” शर्म से उसका चेहरा लाल हो गया और उसने सिर झुका लिया।

लील्या ने कोई जवाब नहीं दिया। निकीता को अपने से ऐसी ही घिन्न हुई जैसी उसे गोबर से होती थी। मगर इसी समय ड्योढ़ी में आन्ना अपोल्लोसोव्ना की आवाज़ गूँज उठी। अभिवादन किया गया और सामान लाते हुए कोचवानों के भारी क़दमों की आवाज़ सुनाई दी। लील्या जल्दी-जल्दी और गुस्से से फुसफुसाई—

“हम पर नज़र पड़ सकती है... तुम तो बस हद ही हो... ज़रा अपने चेहरे पर मुस्कान लाओ... शायद इस बार तो मैं तुम्हें माफ़ कर दूंगी...”



वह ड्योढ़ी की ओर भाग गई। खाली कमरों में उसकी पतली-सी आवाज़ गूँज उठी —

“नमस्ते, मौसी साशा। आप समारा में आ गईं, स्वागत आपका!”

नई ज़िन्दगी का पहला दिन इस तरह से शुरू हुआ। गांव का वह शान्त, सुख-चैन का और खुला-खुला वातावरण यहां नहीं था। यहां तो छोटे-छोटे और उदास-उदास सात कमरे थे। खिड़की के बाहर खड़्गों पर भारी-भारी ठेलों की खड़खड़ाहट सुनाई देती थी और पेस्त्राव्का के हल्के के डाक्टर वेरिनोसोव की भांति कपड़े पहने हुए परेशान से लोग इधर-उधर भागते-से नज़र आ रहे थे। वे कोट के कालरों की ओट करके कागज़ और धूल-मिट्टी उड़ाकर लानेवाली हवा से अपने चेहरों को बचा रहे थे। सभी जगह रेल-पेल थी, शोर-शरावा था और परेशान करनेवाली बातचीत सुनाई दे रही थी। यहां तो वक्त भी दूसरे ही ढंग से गुज़रता था, पंख लगाकर उड़ता था। निकीता और अर्कादी इवानोविच ने मिलकर निकीता का कमरा ठीक-ठाक किया — उसमें फ़र्नीचर जमाया, किताबें लगाईं और परदे टांगे। दिन ढले वीक्टर सीधे हाई स्कूल से घर आया और उसने निकीता को बताया कि पांचवीं कक्षा के बालक पाखानों में छिप कर सिगरेटें पीते हैं और यह कि उनके हिसाब के अध्यापक की कुर्सी पर गोंद लगाकर उसे वहीं चिपका दिया गया था। वीक्टर आज़ाद था और बेध्यान रहता था। उसने निकीता से बारह फलों वाला चाकू मांग लिया और निकीता को यह कहकर “तुम उसे नहीं जानते”, अपने एक दोस्त के पास खेलने चला गया।

झुटपुटा हो चुका था और निकीता खिड़की में बैठा था। सूर्यास्त का दृश्य नगर में भी गांव जैसा ही था। मगर जाली के पीछे बैठी हुई जेल्टूखिन मैना की भांति, बिल्कुल जेल्टूखिन की तरह ही निकीता अपने को बन्दी और बिल्कुल अजनबी अनुभव कर रहा था। अर्कादी इवानोविच टोप और कोट पहने हुए कमरे में आये। वह अपने हाथ में साफ़-सुथरा रुमाल लिये थे जिस में से यूडीक्लोन की खुशबू आ रही थी।

“मैं बाहर जा रहा हूँ, कोई नौ बजे तक लौटूंगा।”

“आप कहां जा रहे हैं?”

“वहां, जहां मैं इस समय नहीं हूँ।” वे ठठाकर हंस दिये। “कहो भाई, लील्या तुम्हारे साथ कैसे पेश आई? कुछ गर्मी से न? ख़ैर, कोई बात नहीं, कुछ ग़म न करो! कभी-कभी यह अच्छा ही होता है कि कुछ देहाती चर्बी कम हो जाये...”

अर्कादी इवानोविच एड़ियों पर घूमे और बाहर चले गये। एक ही दिन में इस व्यक्ति का कायाकल्प हो गया था।

इसी रात निकीता ने सपने में देखा कि वह चांदी के बटनोंवाली नीली वर्दी पहने लील्या के सामने खड़ा है और कड़ाई से कह रहा है —

“लो, यह रहा तुम्हारा ख़त।”

इन शब्दों के साथ उसकी आंख लगभग खुल गई, मगर फिर उसने अपने आपको शीशे जैसे फ़र्श पर चलते और यह कहते देखा —

“लो, यह रहा तुम्हारा खत।”

लील्या की लम्बी-लम्बी बरौनियां उठीं और गिरीं, उसकी स्वाभिमानी नाक से गर्व और परायेपन की झलक मिली। पर क्षण भर में उसकी नाक और पूरे चेहरे से ऐसा भाव गायब हो जायेगा और वह हंसने लगेगी...

निकीता की आंख खुल गई और उसने कमरे में नज़र घुमाई। दीवार पर सड़क के लैम्प की अजीब-सी रोशनी पड़ रही थी... निकीता ने फिर से वही सपना देखा। जागते हुए उसने इस अनबूझ लड़की को कभी इतना प्यार नहीं किया था...

अगली सुबह को मां, निकीता और अर्कादी इवानोविच हाई स्कूल में गये और उन्होंने हेड मास्टर से बातचीत की। दुबला-पतला, पके बाल और रोबीला चेहरा, ऐसे थे यह हेड मास्टर। एक सप्ताह बाद निकीता ने परीक्षाएं पास कर लीं और दूसरी कक्षा में पढ़ने लगा।